Uttar Pradesh

Amazing Heritage Grand Experiences

UTTAR PRADESH TOURISM

गोरखपुर महोत्सव

आरोह तमसो ज्योतिः

गोरखपुर महोत्सव

11-13 जनवरी, 2020

अभ्युदय

स्मारिका

Incredible India

यू.पी. नहीं देखा तो
इण्डिया नहीं देखा

गोरखपुर
महोत्सव
आ रोह तमसो ज्योतिः
SHUDH PLUS
Ultra
PAN MASALA
गोरखपुर महोत्सव
के आयोजन पर
शुद्ध प्लस परिवार की ओर से
हार्दिक बधाई
The Ultimate Choice
SHUDH PLUS
Ultra
PAN MASALA
0%
प्रीमियम
शुद्ध प्लस
पान मसाला
तुम में भी मैं हूँ
प्रीमियम
शुद्ध प्लस
पान मसाला
तुम में भी मैं हूँ
तुम में भी मैं हूँ
TOLL FREE No. 1800 200 3777 • www.shudhplus.com

Uttar Pradesh

Amazing Heritage Grand Experiences

UTTAR PRADESH TOURISM

गोरखपुर महोत्सव

आरोह तमसो ज्योतिः

गोरखपुर महोत्सव

11-13 जनवरी, 2020

अभ्युदय

स्मारिका

Incredible India

यू.पी. नहीं देखा तो
इण्डिया नहीं देखा

पॉलिथीन बैग एवं एकल उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग निषेध करें।

मुख्य संरक्षक :

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश

संरक्षक :

जयन्त नार्लिकर (आई.ए.एस.)

मण्डलायुक्त/अध्यक्ष, गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर

के. विजयेन्द्र पाण्डियन (आई.ए.एस.)

जिलाधिकारी/उपाध्यक्ष, गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर

सम्पादक :

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

सह सम्पादक :

डॉ. रामप्यारे मिश्र

डॉ. मणिन्द्र यादव

प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव

जिला सूचना अधिकारी, गोरखपुर

आयोजन सचिव :

रविन्द्र कुमार

क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी/सचिव, गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर

परामर्श :

प्रो. विनोद कुमार सिंह

प्रो. रविशंकर सिंह

प्रो. अजय शुक्ल

श्रीगोरक्षनाथमन्दिरम्

इरावती–रोहिणिसंगमे या विराजते गोरखपूर्मनोज्ञा।
शिवोऽत्र जात: स्वयमादिनाथ: श्रुतश्च गोरक्षपदाभिधेय:।।1।।

देवानामपि लालसा भवति यज्जायेम स्वर्गाधिके
पुण्ये भा–रतभारतेऽस्ति विदित: सर्वार्यदेशो महान्।
गांगेयेऽस्मिन् रामबुद्धविबुधोद्याने विरामेऽसताम् गोरक्षश्च
तपश्चकार भगवान् यत्रैव सेवं पुरी।।2।।

योगीन्द्रान्मत्स्यनाथदधिगत सकलं योग तत्त्वोपदेशं
गोरक्षो योगिनाथो व्यतरदविरतं भारतं सर्वकालम्।
त्रेतायां पुण्यभूमि व्यपगतकलुषां वीक्ष्य तेपे च यस्यां
सेयं गोरक्षपूर्णं सकलगुणनता सन्नतोपस्कृता तै:।।3।।

आमन्त्राद्राजयोगं परतमपरं यो महायोगमूचे
योऽद्राक्षीत् पिण्डमध्ये सुरनरनगरं ह्यण्डमेकान्त चक्षु:।
शरीरेऽस्मिन् मठे यो व्यचरदविकलं मानसो योगिभूत:
सद्बुद्धया ज्ञानक्षान्त्या व्यपनयतु तमो न गुरुयोगिनाथ:।।4।।

सिद्धेऽस्मिन्नाथपीठे गुरुगुणभरिते कालयोगान्महन्त:
संजातो राष्ट्ररक्षाब्रतयजनपरो भास्वरोदारमूर्ति:।
प्राङ्.नाथो दिग्विजेता पदकलपदपूर्व संविधातुं च स्वप्नं
प्रसादं देवतानां समर च यदऽहोवेद्यनाथो महात्मा।।5।।

देवानां भवनानि सन्ति शतशो भव्यानि नेदृक्क्वचित्
वैविध्यं समवाप्यते च सकलं सौन्दर्यं धानं महत्।
विद्यायज्ञ सभा समाजभवनं विद्यालयानां कुलम्
नाथे दिग्विजयेऽथवा तवनुगेऽवेद्ये हि संभाव्यते।।6।।

अभ्रंलिहं स्फाटिकतु श्रृंग गोरक्षनाथस्य मनोहारयेत्
संदृश्यते मन्दिरमद्य स्वच्छंयशस्तदक्षय्यमवेद्यकीयम्।
उद्धार: दलितस्य जातॅचित्स्रूद्रामस्य कृष्णस्य या
हिन्दू जागरणस्य कार्यमथवा धर्मस्य नीतेरथो।।7।।

गोष्ठी स्याद्विदुषां नया च सुविधां सर्वत्र सार्दशिक:
श्री गोरक्षनिकेतन न च भवेदित्थं न संभाव्यते।
शिष्योपशिष्यस्य परम्परायामादित्यनाथस्तरुण महात्मा,
परम्परामद्य उद्धुकामश्चादित्यवत्खं क्रमश: प्रयाति।।8।।

संदेश

सत्यमेव जयते

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ - 226 027

5 दिसम्बर, 2019

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि 11 से 13 जनवरी, 2020 तक गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर 'महोत्सव-स्मारिका' का प्रकाशन भी किया जायेगा।

इस तरह के महोत्सव आयोजन से हमारी परम्परा और संस्कृति को जानने का अवसर प्राप्त होता है तथा अपनी सांस्कृतिक विरासत को बनाये रखने की प्रेरणा भी मिलती है। मुझे विश्वास है कि महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित होने वाली 'महोत्सव-स्मारिका' में जनपद के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक तथा शासन की विभिन्न विकास योजनाओं से सम्बन्धित जानकारियों का समावेश होगा, जिससे जनपद की युवा पीढ़ी अपनी समृद्धशाली सांस्कृतिक परम्परा, साझी संस्कृति तथा गौरवशाली इतिहास से परिचित हो सके।

गोरखपुर महोत्सव के आयोजन एवं 'महोत्सव-स्मारिका' के प्रकाशन की सफलता के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@nic.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

संदेश

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

योगी आदित्यनाथ

लोक भवन
लखनऊ-226001

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि दिनाँक 11 से 13 जनवरी, 2020 तक 'गोरखपुर महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर महोत्सव स्मारिका भी प्रकाशित होगी।

महोत्सव हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। पारस्परिक सौहार्द एवं सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने में महोत्सवों की महत्वपूर्ण भूमिका है। गोरखपुर शिवावतार महायोगी गुरु गोरखनाथ जी की पावन साधना स्थली है। ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को संजोए हुए यह जनपद वर्तमान में विकास की ओर अग्रसर है। मुझे विश्वास है कि 'गोरखपुर महोत्सव' के माध्यम से जनमानस को जनपद की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विरासत के साथ ही विकास सम्बन्धी गतिविधियों की जानकारी उपलब्ध होगी।

'गोरखपुर महोत्सव' के सफल आयोजन तथा महोत्सव स्मारिका के उद्‌देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2236181/2239296 फैक्स : 0522-2239224 ईमेल : cmup@nic.in

संदेश

मंत्री
उत्तर प्रदेश

सूर्य प्रताप शाही
मंत्री
कृषि, कृषि शिक्षा एवं
कृषि अनुसंधान विभाग
उत्तर प्रदेश

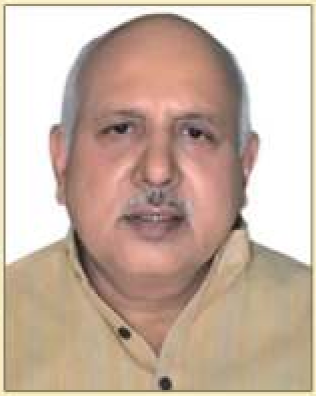

संख्याः 1115 वी.आई.पी./मंत्री/कृ.कृ.शि.कृ.अनु./2019

कार्यालय, दूरभाष / फैक्स : 2239247
सी.एच. : 2213256

कार्यालय कक्ष संख्या 69-70
मुख्य भवन

दिनांक : 05.12.2019

मुझे जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि दिनांक– 11.01.2020 से 13.01.2020 तक भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगरी, गोरखपुर में **''गोरखपुर महोत्सव''** का आयोजन किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। गोरखपुर प्राचीन काल से भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक महायोगी गोरक्षनाथ जी की नगरी एवं बुद्धिष्ठ सेक्टर के केन्द्र बिन्दु के रूप में अपनी पहचान स्थापित किये हुये है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि उक्त महोत्सव एवं स्मारिका के प्रकाशन से गोरखपुर के विकास, उत्थान, स्वदेशी तथा पर्यटन को बढ़ावा देने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगी।

गोरखपुर महोत्सव के सफल आयोजन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका

(सूर्य प्रताप शाही)

संदेश

रमापति शास्त्री
मंत्री
समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति
कल्याण विभाग, उ.प्र.

पत्र सं. : 908 वी.आई.पी./मंत्री/स.क./2019
कार्यालय कक्ष संख्या-82ए-बी,
विधान भवन, लखनऊ
दूरभाष/फैक्स नं. 0522- 2238219, 2213307 कार्या.
2237845 आवास

दिनांक 28.11.2019

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि सांस्कृतिक पर्यटन विकास के दृष्टिगत भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक महायोगी गोरखनाथ जी की नगरी गोरखपुर में माघ मास के कृष्ण पक्ष में दिनांक 11.01.2020 से 13.01.2020 तक गोरखपुर महोत्सव 2020 का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर एक महोत्सव-स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है। गोरखपुर प्राचीन काल से भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगरी तथा बुद्धिष्ठ सेक्टर के केन्द्र बिन्दु के रूप में अपनी पहचान स्थापित किये हुए है।

मुझे विश्वास है कि गोरखपुर महोत्सव-2020 के आयोजन से क्षेत्रीय सांस्कृतिक विषयों की जानकारी आम-जनमानस को प्राप्त होने के साथ-साथ सामाजिक सदभाव एवं आपसी प्रेम व भाईचारा को बढ़ावा मिलेगा तथा राष्ट्रीय एकता व अखण्डता में निश्चित ही मजबूती आयेगी।

गोरखपुर महोत्सव-2020 की स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(रमापति शास्त्री)

संदेश

चेतन चौहान

मंत्री

होमगार्ड्स, सैनिक कल्याण,
प्रांतीय रक्षक दल एवं
नागरिक सुरक्षा विभाग

सं. 209/VIP/मं.हो.गा.,सै.क.,प्रां.र.द.,ना.सु./20

(का) 0522-2238080
(सी.एच.) 0522-2213260
60-61, मुख्य भवन,
विधान भवन, लखनऊ
आवास : 12ए, गौतम पल्ली,
लखनऊ, फोन : 0522-2238027
e-mail : ministerhg2019@gmail.com

दिनांक 09.12.2019

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि आगामी 11 जनवरी, 2020 से 13 जनवरी, 2020 तक गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से गोरखपुर भारत के प्रमुख शहरों में से एक है। प्राचीन काल से ही गोरखपुर भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगरी के रूप में जाना जाता रहा है। गोरखपुर भारत में नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है। नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख गुरु गोरखनाथ जी का मंदिर भी यहीं पर स्थित है। महायोगी गोरखनाथ जी की नगरी एवं बुद्धिष्ठ केन्द्र बिन्दु के रूप में गोरखपुर आज भी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

मुझे विश्वास है कि स्मारिका में सांस्कृतिक एवं पर्यटन विकास से संबंधित ज्ञानवर्धक सामग्रियों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जायेगा।

स्मारिका के प्रकाशन एवं गोरखपुर महोत्सव-2020 के सफल आयोजन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(चेतन चौहान)

श्री जयन्त नार्लिकर
आई.ए.एस.
आयुक्त, गोरखपुर मण्डल/
अध्यक्ष, महोत्सव समिति, गोरखपुर

संदेश

डा. नीलकंठ तिवारी
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन, संस्कृति, धर्मार्थ कार्य
एवं प्रोटोकाल (एमओएस) उत्तर प्रदेश

16, नवीन भवन, उ.प्र. सचिवालय
लखनऊ

फोन - 0522-2239118 (का.)
0522-2213591 (का.)
0522-2205825 (का.)

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक तथा महायोगी गोरखनाथ जी की नगरी गोरखपुर में दिनांक 11.01.2020 से दिनांक 13.01.2020 तक आयोजित गोरखपुर महोत्सव के अवसर पर एक महोत्सव-स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

मैं गोरखपुर महोत्सव 2020 के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर गोरखपुर महोत्सव से सम्बन्धित स्मारिका के प्रकाशन हेतु ईश्वर से शुभकामना करता हूँ।

(डा. नीलकंठ तिवारी)

श्री जयन्त नार्लिकर
आई.ए.एस.
आयुक्त, गोरखपुर मण्डल/
अध्यक्ष, महोत्सव समिति
गोरखपुर

संदेश

मुख्य सचिव
उत्तर प्रदेश

राजेन्द्र कुमार तिवारी
आई.ए.एस.

लोक भवन
लखनऊ–226001
ई–मेल : csup@nic.in
फोन : (0522) 2238212, 2236296 (का.)
(0522) 2239283 (फैक्स)

दिनांक : 26 नवम्बर, 2019

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि गोरखपुर में दिनांक 11 जनवरी से 13 जनवरी, 2020 तक गोरखपुर महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगरी गोरखपुर महायोगी गोरक्षनाथ जी की पावन साधना स्थली एवं बुद्धिष्ठ सेक्टर के केन्द्र के रूप में अपनी पहचान स्थापित किये हुये है। तीर्थांकर महावीर, गौतम बुद्ध, संत कवि कबीरदास, मुंशी प्रेमचन्द व फिराक गोरखपुरी ने जनपद के गौरव को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्थापित किया है।

जनपद की संस्कृति, कला और साहित्य के संरक्षण व संवर्धन के उद्देश्य से गोरखपुर महोत्सव का आयोजन किया जाना सराहनीय है। आशा है यह महोत्सव पारम्परिक हर्षोल्लास के साथ आयोजित होगा, जो स्थानीय लोक-कलाओं एवं संस्कृति को देश एवं प्रदेश में और अधिक लोकप्रियता दिलाने में सहायक सिद्ध होगा।

गोरखपुर महोत्सव के सफल आयोजन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(राजेन्द्र कुमार तिवारी)
मुख्य सचिव
उत्तर प्रदेश शासन

संदेश

ओ.पी. सिंह आई.पी.एस.
पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य पुलिस प्रमुख, उत्तर प्रदेश

पुलिस मुख्यालय, उ.प्र.
शहीद पथ, गोमती नगर विस्तार
लखनऊ–226002

फोन नं. : 0522-2724003/2390240
फैक्स नं. : 0522-2724009
सीयूजी नं. : 9454400101
ई–मेल : police.up@nic.in
वेबसाइट : https://uppolic.gov.in

दिनांक : लखनऊ:दिसम्बर 05.2019

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक, धार्मिक एवं महायोगी गोरक्षनाथ जी की नगरी गोरखपुर में दिनांक 11 जनवरी, 2020 से 13 जनवरी, 2020 तक गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन किया जा रहा है। गोरखपुर महोत्सव का आयोजन संस्कृति, लोक कला एवं हस्तकला के संवर्धन व संरक्षण के उद्देश्य से अत्यन्त सराहनीय कार्य है।

पूर्वांचल की प्रमुख नगरी गोरखपुर उत्तर प्रदेश में प्राचीन काल से अनेक पुरातात्विक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक कारणों से प्रसिद्ध है। इस नगरी की प्रतिष्ठा महात्मा बुद्ध, तीर्थकर महावीर, संत कबीरदास, मुंशी प्रेमचन्द, पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं फिराक गोरखपुरी जैसी महान विभूतियों ने विश्व स्तर पर प्रख्यापित की है।

इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन तथा स्मारिका का प्रकाशन अपनी प्राचीन विरासत को संजोने-संवारने में सफल रहेगा।

गोरखपुर महोत्सव के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(ओ.पी. सिंह)
पुलिस महानिदेशक,
उ.प्र.

संदेश

दीपक त्रिवेदी
आई.ए.एस.
अध्यक्ष

अ.शा. पत्र सं. मेमो / पी.एस. / अध्यक्ष– – 2019-20
राजस्व परिषद, उत्तर प्रदेश
लखनऊ–226001
फोन : 0522-2620482, 2217102
फैक्स : 0522-2620479

दिनांक 04.12.2019

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भारत वर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक व महायोगी गोरक्षनाथ जी की नगरी गोरखपुर में दिनांक 11 से 13 जनवरी, 2020 तक ''गोरखपुर महोत्सव-2020'' आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर इस नगरी के महात्म्य को जनमानस तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक महोत्सव-स्मारिका का प्रकाशन किया जाना एक सराहनीय प्रयास है।

''गोरखपुर महोत्सव-2020'' की सफलता एवं महोत्सव-स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से आपको एवं इस महोत्सव से सम्बद्ध सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं।

(दीपक त्रिवेदी)

संदेश

अवनीश कुमार अवस्थी
आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव

फोन : 0522-2238760
0522-2238291
फैक्स : 0522-2238291

अर्द्ध शा. पत्र सं. 22/ए.सी.एस. /2019

गृह, गोपन, वीजा, पासपोर्ट, सतर्कता, कारागार,
सूचना एवं धमार्थ कार्य विभाग
लोक भवन, उत्तर प्रदेश शासन

दिनांक 07.01.2020

प्रिय जयन्त,

महायोगी गोरक्षनाथ जी की नगरी एवं बुद्धिष्ठ सेक्टर के केन्द्र बिन्दु के रूप में अपनी पहचान स्थापित किये हुये गोरखपुर में **गोरखपुर महोत्सव-2020 का** आयोजन हिन्दू धर्म की आस्थास्वरुप माघ मास के कृष्ण पक्ष की दशमी से प्रारम्भ होकर त्रयोदशी मकर संक्रान्ति तक होने की जानकारी से अत्यन्त आह्लादित व प्रफुल्लित हुआ।

भारतीय सांस्कृतिक पर्यटन एवं धार्मिक स्थल के विकास के दृष्टिगत इस पावन नगरी में होने वाले **गोरखपुर महोत्सव-2020** के अवसर पर **महोत्सव-स्मारिका** के प्रकाशन हेतु समस्त अधिकारियों व सहयोगी कार्मिकों के साथ आयोजकों को बहुत बहुत शुभकामनायें एवं हार्दिक बधाई।

आशा ही नहीं बलिक पूर्ण विश्वास है कि महायोगी जी के आशीर्वचन से यह धरती उत्तरोत्तर उन्नयन की ओर अग्रसर रहकर भारतवर्ष के निवासियों को गौरवावित करेगी।

कार्यक्रम के सफल आयोजन की शुभकामनाओं सहित,

सद्भाव

आपका,

(अवनीश कुमार अवस्थी)

श्री जयन्त नार्लिकर
आयुक्त
गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर

संदेश

नितिन रमेश गोकर्ण,
आई.ए.एस.
प्रमख सचिव

अ.शा. पत्र सं. 873/प्र.स.लो.नि.वि./2019
उत्तर प्रदेश शासन
लोक निर्माण विभाग
विकास भवन, उ.प्र. सचिवालय
लखनऊ-226001
दूरभाष : 0522-2234561, 2234654

लखनऊ : दिनांक 26.11.2019

प्रिय श्री नार्लिकर,

यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगरी गोरखपुर में ''गोरखपुर महोत्सव-2020'' का आयोजन दिनांक 11.01.2020 से 13.01.2020 तक किया जा रहा है। महायोगी गोरखनाथ जी की कर्मभूमि एवं बुद्धिष्ट सेक्टर के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले जनपद-गोरखपुर में होने वाले उक्त वृहद् आयोजन में विभिन्न धर्मों, जातियों एवं परम्पराओं का समावेश होगा, जो कि **अनेकता में एकता** के संदेश को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करेगा।

मेरी ओर से ''गोरखपुर महोत्सव-2020'' के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

साभिवादन

भवदीय,

(नितिन रमेश गोकर्ण)

श्री जयन्त नार्लिकर
मण्डलायुक्त,
गोरखपुर मण्डल/अध्यक्ष, महोत्सव समिति,
गोरखपुर

संदेश

जितेन्द्र कुमार
आई.ए.एस.
प्रमुख सचिव,
एवं महानिदेशक

पर्यटन विभाग,
उत्तर प्रदेश शासन
पर्यटन भवन
राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन
सी-13, विपिन खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ-226 010 (उ.प्र.)

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि महायोगी गोरखनाथ जी की धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी, गोरखपुर में दिनांक 11 जनवरी से 13 जनवरी, 2020 तक ''गोरखपुर महोत्सव'' का आयोजन किया जा रहा है, जो माघ मास के कृष्ण पक्ष की दशमी से प्रारम्भ होकर त्रियोदशी मकर संक्रान्ति को समाप्त होगा।

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में गोरखपुर, प्राचीन काल से बाबा गोरखनाथ जी के नाम से विख्यात अनेकों पुरातात्विक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों को समेटे हुए तथा बुद्धिस्ट सेक्टर के केन्द्र बिन्दु के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। गोरखपुर-महोत्सव संस्कृति, कला एवं पर्यटन के विकास की पृष्ठ भूमि पर आधारित है। इस महोत्सव के आयोजन से लोक-कलाओं एवं संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा तथा भाई-चारे की भावना भी मजबूत होगी।

'गोरखपुर-महोत्सव'' का आयोजन कराया जाना सराहनीय कार्य है, इसके सफल आयोजन की कामना करते हुए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(जितेन्द्र कुमार)

कार्यालय : 91-522-2308993
फैक्स : 91-522-2308937

उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश पर्यटन
यू.पी. नहीं देखा तो इंडिया नहीं देखा

वेबसाईट : http://www.uptourism.gov.in
ई-मेल : dg.upt1@gmail.com
dguptourism@gmail.com

संदेश

प्रो. वी.के. सिंह
कुलपति
Prof. V.K. Singh
Vice Chancellor

दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर-273 009 (उ.प्र.)
D.D.U. Gorakhpur University,
Gorakhpur-273009 (U.P.)

दिनांक : 02.12.2019

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय परिसर में दिनांक 11 से 13 जनवरी, 2020 तक तीन दिवसीय **''गोरखपुर महोत्सव-2020''** का आयोजन तथा इस अवसर पर एक **'महोत्सव-स्मारिका'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

पूर्वांचल की यह पावन भूमि सत्य, अहिंसा, करुणा के संदेशों के साथ-साथ अपनी समृद्ध कला, साहित्य, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्पराओं के लिए विश्व विख्यात है। एक तरफ यह पावन भूमि भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, संत कबीर एवं गुरु श्री गोरक्षनाथ जी के आध्यात्मिक संदेशों की महक दुनियाभर में फैलाने वाली तपोभूमि रही है, वहीं राम प्रसाद बिस्मिल की शहादत की भूमि के रूप में भी इतिहास के पन्नों में दर्ज है और मुंशी प्रेमचन्द, फिराक गोरखपुरी, भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा दशरथ प्रसाद द्विवेदी जी की साहित्यिक व रचनात्मक कर्मभूमि भी रही है। इस पवित्र भूमि पर **गोरखपुर महोत्सव** का आयोजन किया जाना पूर्वांचल वासियों के लिए नि:संदेह आह्लादकारी है।

मुझे विश्वास है कि गोरखपुर विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित होने वाले गोरखपुर महोत्सव में विगत महोत्सव की भांति इस महोत्सव में भी विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं, रंगारग सांस्कृतिक कार्यक्रमों, कला एवं साहित्यिक प्रदर्शनियों का आयोजन किया जायेगा, जिससे यहाँ के हजारों युवाओं, स्कूल एवं कॉलेज के बच्चों की अन्तर्निहित क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का एक बड़ा मंच और अवसर मिलेगा, जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उनके कौशल को निखारने, तरासने एवं विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा। तीन दिन तक चलने वाले इस महोत्सव में देश एवं प्रदेश के विभिन्न अंचलों से आये कलाकारों की कलाकृतियों, आभूषणों, परम्परागत एवं आधुनिक परिधानों, उपकरणों, सामग्रियों का संगम देखने को मिलेगा।

मैं आशा करता हूँ कि इस महोत्सव में यहाँ की महान जनता, औद्योगिक एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों का भरपूर सहयोग, समर्थन व सहभागिता मिलेगा जो गोरखपुर महोत्सव की सफलता को अविस्मरणीय व ऐतिहासिक बनायेगा। मुझे विश्वास है कि **'महोत्सव-स्मारिका'** में गोरखपुर अंचल की कला, साहित्य, संस्कृति, आध्यात्म एवं शिल्पकला के विविध रंगों को पिरोया जायेगा, जो वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं गोरखपुर महोत्सव के सकुशल आयोजन एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा इस आयोजन में संलग्न जिला प्रशासन के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, समाज के सम्मानिक नागरिकों तथा सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ।

(प्रो. वी.के. सिंह)
कुलपति

☎ 0551-2201577 (O), 2340458 (R), **Fax :** 0551-2330767 (O), 2340459 (R) **Email :** vcddugu@gmail.com

संदेश

सीताराम जायसवाल
महापौर

Sitaram Jaiswal
Mayor

नगर निगम, गोरखपुर
NAGAR NIGAM, GORAKHPUR
Ph. : 0551-2334539 Mob. : 9936739395
E-mail : mayorofficegkp@gmail.com

पत्रांक : 446/वैय.सहा.महापौर 2019-20
दिनांक : 05 दिसम्बर, 2019

मुझे जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि जिला प्रशासन, गोरखपुर द्वारा गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन किया जा रहा है। गोरखपुर बाबा गोरखनाथ के नाम पर बसा हुआ प्राचीन शहर है जो सांस्कृतिक, पर्यटन, शिक्षा, चिकित्सा का बहुत बड़ा केन्द्र है। यह शहर गंगा-जमुनी संस्कृति के लिए जाना जाता है। इसका उत्तरोतर विकास मा. मुख्यमंत्री जी के दिशा निर्देशन में हो रहा है। गोरखपुर महोत्सव का आयोजन गोरखपुर की संस्कृति, पर्यटन और यहाँ के स्थानीय कलाकारों की प्रतिभा विश्व पटल पर स्थापित करने में मील का पत्थर साबित होगा। यह शहर स्वतंत्रता संग्राम में शहीद होने वाले अनेक शूरवीरों जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहूति दी है उनकी स्मृतियाँ भी संरक्षित है। महोत्सव के आयोजन के अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा है कि स्मारिका के माध्यम से गोरखपुर की प्रतिभा को एक उच्च आयाम एवं ख्याति मिलेगी जिससे उनका आत्मबल बढ़ेगा।

हम गोरखपुर महानगर की समस्त जनता की तरफ से महोत्सव में आने वाले कलाकारों खिलाड़ियों, प्रबुद्ध जनों, महिलाओं, किसानों, छात्र-छात्राओं सहित जन-जन के उज्ज्वलमय भविष्य की मंगल कामना करते हैं।

शुभकामनाओं सहित !

भवदीय,

(सीताराम जायसवाल)
महापौर

संदेश

सत्यमेव जयते

RAVI KISHAN SHUKLA
Member of Parliament
(Lok Sabha)
64, Gorakhpur

Flat No. 508, Arched Green Apartment,
Mohaddipur, Gorakhpur (U.P.)-273008
Mob. : 9415800601, 09013997467
9415258620, 0551-2272211
ravikishanbjp@gmail.com

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की नगरी एवं बुद्धिष्ट सेक्टर के केन्द्र बिन्दू के रूप में गोरखपुर प्राचीन काल से अपनी पहचान स्थापित किये हुए है। पूर्वांचल की पावन अध्यात्मिक एवं अर्वरा भूमि प्राचीन काल से ही भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, संत कबीर, महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी के आध्यात्मिक एवं सामाजिक संदेशों की महक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फैलाने वाली तपोभूमि रही है। इस भूमि पर गोरखपुर महोत्सव 2020 का आयोजन किया जाना व महोत्सव स्मारिका का प्रकाशन नि:संदेह अह्लादकारी है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी परम पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज की अगुवाई में तरक्की की दिशा में अग्रसर पूरे प्रदेश की झांकी के रूप में यह गोरखपुर महोत्सव लघु भारत की तस्वीर भी पेश करेगा।

हम गोरखपुर महानगर की समस्त जनता की ओर से महोत्सव में आने वाले कलाकारों, प्रबुद्ध जनों, छात्र-छात्राओं सहित जन-जन के उज्ज्वलमय भविष्य की कामना करता हूँ।

॥ हर-हर महादेव, जय बाबा गुरु गोरक्षनाथ ॥

रवि किशन शुक्ला

संदेश

राजीव अग्रवाल
महाप्रबन्धक
RAJIV AGRAWAL
General Manager

पूर्वोत्तर रेलवे
गोरखपुर–273 012 (उत्तर प्रदेश)
North Eastern Railway
Gorakhpur-273 012 (Uttar Pradesh)
फोन Phone : 0551-2201041
फैक्स Fax : 0551-2201299
ईमेल Email : gm@ner.railnet.gov.in

यह अत्यन्त हर्ष और गर्व का विषय है कि गोरखपुर महानगर में विगत वर्षों की भांति महोत्सव समिति द्वारा गोरखपुर महोत्सव 2020 का आयोजन 11 से 13 जनवरी 2020 तक किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

महायोगी गोरक्षनाथ की तपोभूमि एवं बुद्धिष्ठ सेक्टर के केन्द्र बिन्दु के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुके गोरखपुर महानगर में गोरखपुर महोत्सव की अपनी समृद्ध परम्परा है। इसमें न केवल पूर्वांचल की संस्कृति, बल्कि यहाँ की अनेक हस्तशिल्प कलाओं, संगीत तथा अन्य विधाओं में दक्षता को प्रदर्शित करने का भरपूर मौका मिलता है। यह प्रतिभाओं को मुखरता प्रदान करने का एक सशक्त मंच होने के साथ-साथ उभरती प्रतिभाओं को भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करता है। यह महोत्सव न केवल गोरखपुरवासियों अपितु आसपास के क्षेत्रों की जनता के लिए भी एक बहुप्रतीक्षित आयोजन होता है जिसमें जनता का भरपूर मनोरंजन होने के साथ-साथ सांस्कृतिक विधाओं का भी सशक्त परिचय होता है। इस तरह के आयोजन सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और उसे और समृद्ध करने में सहायक सिद्ध होंगे।

मैं गारेखपुर महोत्सव 2020 के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका हेतु अपनी शुभकानाएं देता हूँ।

रा० अग्रवाल
(राजीव अग्रवाल)
महाप्रबन्धक

संदेश

जयन्त नार्लिकर
आई.ए.एस.
आयुक्त

☎ (0551) 2335238 (O)
2336022 (R)
2338817 (Fax)

गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर
/अध्यक्ष महोत्सव समिति

राप्ती... (प्राचीन अचिरावती) नदी के तट पर स्थित गोरखपुर प्राचीन काल से ही नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गुरु गोरक्षनाथ के नाम से विख्यात रहा है। यह नगर प्राचीन काल से आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, पुरातात्विक एवं प्राकृतिक विविधता को समेटे हुए है। इस पवित्र पावन भूमि को तीर्थंकर महावीर, महात्मा बुद्ध, संत कबीर, मुंशी प्रेमचन्द व फिराक गोरखपुरी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नये प्रतिमानों के साथ प्रतिस्थापित किया। इसके साथ ही साथ जनपद गोरखपुर युगों-युगों से आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक क्रिया कलापों का प्रमुख केन्द्र रहा है।

व्यक्ति निर्माण एवं ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं में अध्ययन एवं अनुसंधान के केन्द्र के रूप में पं. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय इस महानगर को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाने में अग्रणी रहा है। गोरखपुर में स्थित गीता प्रेस, धार्मिक-आध्यात्मिक महत्ता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया है।

पूर्वांचल की संस्कृति, कला, साहित्य एवं ज्ञान के संवर्धन एवं संरक्षण में गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन निश्चित रूप से पूर्वांचल की प्रगति, संस्कृति, पर्यटन व विकास के लिए सतत प्रयत्नशील है। साथ ही साथ इस आयोजन का साक्षी होना मेरे लिए अतिशय गौरव का पल है।

गोरखपुर महोत्सव-2020 के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर स्मारिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभ कामना।

J. Narlikar

(जयन्त नार्लिकर)
आयुक्त

संदेश

दावा शेरपा
आई.पी.एस.

अपर पुलिस महानिदेशक
गोरखपुर जोन
फोन/फैक्स नं. 0551-220097
फोन आ. 2333777
मो. नं. 9454400141

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि उदारचेत्ता लोकरक्षक, योग-साधना की विशिष्टतम् विभूति महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ की तपोभूमि पर गोरखपुर महोत्सव का भव्य एवं गौरवपूर्ण आयोजन किया जा रहा है।

गोरखपुर जहाँ एक ओर गोरखधाम पीठ, महात्मा बुद्ध एवं संतकबीर की आध्यात्मिक तपोभूमि का साक्षी है वहीं दूसरी ओर मुंशी प्रेमचन्द, फिराक गोरखपुरी, शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल एवं अशफाकउल्ला खां जैसी महान विभूतियों की कर्मभूमि भी है। गोरक्षनाथ मंदिर, गीताप्रेस, विष्णु मंदिर, इमामबाड़ा, गुरुद्वारा, गिरजाघर आदि की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को समेटे हुए यह नगर सामाजिक समरसता, आपसी भाई-चारा की अद्भूत मिसाल है।

आशा ही नहीं विश्वास है कि इस आयोजन से गोरखपुरवासियों को उत्कृष्ट कला, मनोरंजन, खेल, संगीत, शिल्प, विकास एवं विज्ञान मेला आदि विविध विधाओं की अद्भुत छटा को निहारने का अवसर प्राप्त होगा।

मैं गोरखपुर महोत्सव के सकुशल आयोजन तथा स्मारिका के सफल प्रकाशन से जुड़े हुए समस्त महानुभावों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

भवदीय,

(दावा शेरपा)

संदेश

जय नरायन सिंह
आई.पी.एस.

अ.शा.पत्र.सं.: सीओजी/सीए-17-2019/23726

अपर पुलिस महानिदेशक/
पुलिस महानिरीक्षक,
गोरखपुर-परिक्षेत्र, उ.प्र.

दिनांक : गोरखपुर, दिसम्बर 12, 2019

दिनांक 11-01-2020 से 13-01-2020 तक आयोजित होने वाले ''गोरखपुर महोत्सव-2020'' के अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन हर्ष का विषय है। गोरखपुर जनपद सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से महायोगी गोरक्षनाथ जी की नगरी है एवं बुद्धिष्ठ-क्षेत्र के केन्द्र बिन्दु के रूप में स्थापित है। ऋग्वेद में उल्लिखित अचिरावती (राप्ती नदी) नदी के तट पर स्थित गोरक्षनाथ मंदिर भारतवर्ष में प्राचीन-काल से स्थापित महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है तथा यहाँ पर प्रतिवर्ष मकर-संक्रान्ति का पर्व लगभग एक माह तक बड़े धूमधाम से मनाया जाता है जिसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार तथा नेपाल राष्ट्र से लाखों की संख्या में स्त्री/पुरुष गोरक्षनाथ-मंदिर में आकर श्रद्धापूर्वक खिचड़ी चढ़ाते हैं। गोरक्षनाथ मंदिर धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं पर्यटन के दृष्टिकोण से वैश्विक-स्तर पर आकर्षण का अति-महत्वपूर्ण प्रमुख केन्द्र है। महाभारत-काल की स्मृतियां संजोये इस ऐतिहासिक गोरक्षनाथ-मंदिर में भारतवर्ष के कोने-कोने से लाखों-श्रद्धालु आकर भीमसेन-मंदिर एवं भीम-सरोवर का दर्शन करते हैं। गोरखपुर के अन्य ऐतिहासिक स्थलों में 1700 एकड़ में फैला रामगढ़ताल, प्रसिद्ध तरकुलहा देवी शक्तिपीठ व गीताप्रेस जनपद के वैभवशाली इतिहास को प्रदर्शित करते हैं। इसी क्रम में गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन होना अत्यधिक हर्ष का विषय है। गोरखपुर महोत्सव-2020 का आयोजन भविष्य में गोरखपुर की गौरवशाली आध्यात्मिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत का स्तम्भ सिद्ध होगा।

मेरी तरफ से ''गोरखपुर महोत्सव-2020'' को आयोजित कराये जाने वाली टीम एवं गोरखपुर के समस्त नागरिकों को ढेर सारी शुभकामनाएं।

(जय नरायन सिंह)

संदेश

के. विजयेन्द्र पाण्डियन
आई.ए.एस.
जिलाधिकारी, गोरखपुर

अर्द्ध शा. पत्र सं. ....
दिनांक ....

O - 0551-2336005
R - 0551-2336007
Fax - 0551-2334569

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिकोण से विश्वविख्यात महायोगी गोरक्षनाथ जी की नगरी गोरखपुर में आगामी 11 से 13 जनवरी 2020 को गोरखपुर महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा।

इस तरह के आयोजन से जहाँ स्थानीय कलाकारों को पूर्वान्चल की लोक संस्कृति, कला कौशल एवं इस क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं की झलक दर्शाने का प्रयास किया जायेगा, जो सराहनीय है। ज्ञानवर्धक सामग्री से युक्त प्रकाशित होने वाली यह स्मारिका निश्चय ही समाज के विकास और उत्थान में सहायक सिद्ध होगी।

गोरखपुर महोत्सव के आयोजन की सफलता एवं स्मारिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी सहयोगियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(के. विजयेन्द्र पाण्डियन)
जिलाधिकारी
गोरखपुर

अनुक्रम

क्र.स.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	शुभकामना संदेश	
2.	गोरखपुर महोत्सव का प्रतीक चिह्न	
3.	गोरखनाथ मंदिर एवं उसका सामाजिक सरोकार - **योगी आदित्यनाथ**	1
4.	बौद्ध साहित्य एवं उसका अवदान - **प्रो. राजवन्त राव**	4
5.	गीताप्रेस, गोरखपुरका संक्षिप्त परिचय - **डॉ. मणिन्द्र यादव**	8
6.	दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर: अभिप्रेरणा के एक वर्ष - **प्रो. रविशंकर सिंह**	11
7.	असहयोग आन्दोलन के 100 वर्ष (विश्व को फिर से आवश्यकता एक अहिंसक वैचारिक क्रांति की) - **डॉ. अजय कुमार सिंह**	14
8.	गोरखपुर नगर निगम का इतिहास - **सुबोध कुमार मिश्रा**	18
9.	आध्यात्मिक चेतना के अमूल्य धरोहर हैं : कल्याणांक - **रामप्यारे मिश्र**	22
10.	गोरखपुर का स्त्री विमर्श - **डॉ. रंजना जायसवाल**	26
11.	गोरखपुर में सिनेमाई परिदृश्य - **डा. चन्द्र भूषण 'अंकुर'**	29

12. गोरखपुर परिक्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनाएँ
- राम कृष्ण शरण मणि त्रिपाठी 'मणि जी' 32

13. गोरखपुर के कुछ प्रमुख अधिवक्ता
- निकेत नारायण सेवक पाण्डेय 35

14. मातृशक्ति और लोक परम्पराएं
- डॉ. मनोज कुमार गौतम 38

15. पर्यटन की नई तस्वीर के रूप में उभरता गोरखपुर
- के. विजयेन्द्र पाण्डियन 43

16. विरासत संरक्षण को समर्पित संस्था ''भारतीय सांस्कृतिक निधी'' (इनटैक)
- ई. महावीर प्रसाद कन्दोई, डॉ. मुमताज खान, अचिन्त्य लाहिड़ी 45

17. रोटरी इण्टरनेशनल बृहद सामाजिक संरोकारों से जुड़ी एक वैश्विक संस्था
- रो. अनूप अग्रवाल, रो. ई. महावीर प्रसाद कन्दोई 47

18. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर
- डॉ. संजीव मिश्रा 49

19. गोरखपुर महोत्सव समिति 51

20. न्यूनतम रहा अपराध
- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक 55

21. शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान, गोरखपुर
- एन.के. जानू 59

22. तस्वीरों में बोलता गोरखपुर
- संदीप कुमार श्रीवास्तव 63

23. थीम साँग

गोरखनाथ मंदिर एवं उसका सामाजिक सरोकार

योगी आदित्यनाथ

(यह सुखद संयोग है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ब्रह्मलीन युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महराज का 125वाँ जयन्ती वर्ष एवं ब्रह्मलीन राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महराज का शताब्दी वर्ष मना रहा है। इसके अन्तर्गत परिषद् सामाजिक सरोकार एवं शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम के आयोजन द्वारा गोरक्षपीठ के आचार्यद्वय को श्रद्धांजलि देने का काम कर रहा है। गोरखपुर परिक्षेत्र का समाज इन पूज्य सन्तों का ऋणी है। यह आलेख भावपूर्ण श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित है।)

भारतीय संस्कृति, धर्म, समाज एवं साधकों के उद्धार हेतु साधना की पवित्रता, संयमपूर्ण जीवन-सूत्र, चारित्रिक श्रेष्ठता एवं आडम्बर रहित जीवन के उद्घोषक महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ के नाम से उत्तर प्रदेश के उत्तरी पूर्वी छोर पर स्थित गोरखपुर अंचल अनेक संत-महात्माओं एवं महापुरुषों की तपस्थली एवं कर्मभूमि रहा है। बौद्धिक क्रान्ति के रूप में अभ्युदित बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध एवं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर इसी परिक्षेत्र में अवतरित हुए। भक्ति आन्दोलन के अग्रणी सन्तों में प्रतिष्ठित कबीर की निर्वाण स्थली होने का सौभाग्य भी 'गोरखपुर' को ही प्राप्त हुआ। **कल्याण** पत्रिका के संपादक ''भाई जी'' हनुमान प्रसाद पोद्दार, हिन्दी साहित्य के यशस्वी कथाकार मुंशी प्रेमचन्द्र और अंग्रेजी एवं उर्दू साहित्यकार फिराक गोरखपुरी भी गुरु श्रीगोरक्षनाथ की इसी तप:स्थली की देन है।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी एवं ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जन-विद्रोह के प्रतीक महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के संस्थापक युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज इसी गोरखपुर की पहचान बनें। युग पुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने संसार एवं आध्यात्मिकता के प्रति समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाते हुये दोनों को एक दूसरे का पूरक माना। उनका मानना था कि संसार परमात्मा का ही विलास है। बिना आध्यात्मिकता के सद्‌गुणी संसार का निर्माण नहीं हो सकता है। यह एक अद्‌भुत बात थी कि उन्होंने मंदिर को आध्यात्मिकता के साथ ही सामाजिक सरोकार से भी जोड़ा। पीड़ित मानवता की सेवा को भी उन्होंने आध्यात्मिकता का आधार बनाया। यही कारण है कि कहीं किसी को भोजन न मिले तो मंदिर में भोजन मिल जायेगा। आज गोरखपुर के प्रत्येक भूखे व्यक्ति को मंदिर की ओर से यह आश्वस्ति है कि वह भूखा नहीं रहेगा। भारतीय संस्कृति के संबर्धन के साथ-साथ मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने की चिंता मंदिर करता रहता है। महन्त दिग्विजयनाथ जी महराज ने यह महसूस किया कि शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से ही भारत का नवनिर्माण किया जा सकता है। इस निमित्त उन्होंने 1932ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना की। उनकी यह मान्यता थी कि मनुष्य के मुक्ति एवं बेहतर जीवन का मार्ग उसकी अपनी संस्कृति से होकर ही जाता है। अतएव महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा की व्यवस्था की। कुशल, संस्कारयुक्त, उत्तरदायित्वपूर्ण एवं ज्ञानवान नागरिकों का निर्माण महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का उद्देश्य है।

गोरखनाथ मन्दिर नाथ पंथ का सर्वोच्च केन्द्र है। हिन्दू धर्म, दर्शन, अध्यात्म और साधना के अन्तर्गत समय-समय पर प्रवर्तित एवं विकसित सम्प्रदायों में नाथ पंथ का प्रमुख स्थान है। भारत वर्ष का कोई प्रदेश, अंचल या जनपद नहीं है जिसे नाथ पंथ के सिद्धों या योगियों ने

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

अपनी चरणरज से, साधना और तत्वज्ञान की महिमा से पवित्र न किया हो। देश के कोने-कोने में स्थित नाथ पंथ के तीर्थ स्थल, मन्दिर, मठ, आश्रम, दलीचा, खोह, गुफा और टिल्ले इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि नाथ पंथ का भारत वर्ष में व्यापक आधार था। यह पंथ महलों से कुटियों तक फैला सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने वाला लोकप्रिय एवं लोकव्याप्त पंथ रहा है। भारत की वर्तमान भौगोलिक सीमा को लाँघते हुए नाथपंथ तिब्बत, मंगोलिया, नेपाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, म्यांमार, भूटान आदि एशिया के अनेक देशों में योग के प्रचार-प्रसार के द्वारा लोक कल्याण करते हुए भारतीय संस्कृति का ध्वजवाहक बना।

स्वातन्त्रयोत्तर काल में गोरखनाथ मन्दिर हिन्दू धर्म-दर्शन का प्रधान केन्द्र बना। युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 'अखिल भारत वर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ-योगी महासभा' का गठन कर जहाँ योगियों की राष्ट्रीय-सामाजिक भूमिका सुनिश्चित करायी वहीं हिन्दू महासभा को पुनर्गठित करते हुए भारतीय राजनीति को भारतीय संस्कृति केन्द्रित करने का प्रयास किया। परिणामत: पांथिक मत-मतान्तरों की सीमाओं को तोड़ते हुए समन्वय-सामंजस्य के साथ हिन्दुत्व केन्द्रित राष्ट्रीयता की निरन्तर प्रज्ज्वलित लौ का केन्द्रबिन्दु बना गोरखनाथ मन्दिर।

साधु-सन्तों को स्वयं की मोक्ष-प्राप्ति की साधना के साथ-साथ सामाजिक-राष्ट्रीय भूमिका से जोड़ने का भगीरथ प्रयास गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने जारी रखा। साथ ही हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों, छुआ-छूत आदि के विरुद्ध उनके शंखनाद के हम सभी साक्षी हैं। सामाजिक समरसता को जनान्दोलन का स्वरूप प्रदान करने वाले महन्त जी महाराज ने भारत के लगभग सभी मठ-मन्दिरों को इस आन्दोलन का हिस्सा बना लिया। राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए उनका यह भगीरथ प्रयास स्वातन्त्रयोत्तर भारत के अब तक के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है। श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन इसी राष्ट्रीय एकता-अखण्डता एवं सांस्कृतिक अभियान के विकास में जन सहभागिता का एक प्रतीक था।

गोरखनाथ मन्दिर 'हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयता' के अपने घोषित सूत्र पर आगे बढ़ते हुए पांथिक समन्वय की दिशा में भी सक्रिय हुआ। इसका साक्षात् प्रमाण है गोरक्षनाथ मन्दिर परिसर, जहाँ शिवावतारी गुरू श्री गोरक्षनाथ के मन्दिर के साथ ही सभी देव विग्रह विराजमान हैं। मन्दिर परिसर में स्थित 'दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार' में प्रतिष्ठित भारत माता की मूर्ति के साथ भारतीय संस्कृति के सभी देवी-देवता, सन्त-महात्मा एवं महापुरुषों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। भारत के सभी पंथ एक साथ इस सभागार में अपने-अपने प्रतीकों के माध्यम से विद्यमान हैं। धर्म और राष्ट्रीयता का ऐसा एकाकार रूप विरले ही कहीं दिखेगा। वस्तुत: गोरखनाथ मन्दिर ने धर्म और राष्ट्रीयता के इसी भाव से समाज के साथ सीधा संवाद स्थापित किया और लोककल्याण को आधार बनाया। भारतीय संस्कृति की प्रतीक 'गो' माता की सेवा गोरखनाथ मन्दिर की एक अन्य विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति के धर्म (हिन्दुत्व) एवं राष्ट्रीयता रूपी रथ को गोरक्षनाथ मन्दिर ने गो-सेवा एवं जनसेवा के दो चक्रों पर आरूढ़ कर गतिमान किया।

भारतीय संस्कृति के अनुरूप सामाजिक-राजनैतिक परिवर्तन हेतु सक्रिय गोरखनाथ मन्दिर ने गो-सेवा और जन-सेवा को आन्दोलन का रूप दिया। गो-वध पर प्रभावी रोक तथा गोसेवा हेतु जन-जागरण करने वाले गोरखनाथ मन्दिर परिसर में प्रतिष्ठित गो-शाला का दृश्य अद्‌भुत एवं अद्वितीय है। इस गोशाला में भारतीय नस्ल की गोवंश का श्रद्धा के साथ पालन हो रहा है। गोसेवा का अनूठा एवं अकथनीय केन्द्र गोरखनाथ मन्दिर है। गोरखनाथ मंदिर गाय को भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानता है। गोरक्षा प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य होना चाहिए।

गोरखनाथ मन्दिर ने शिक्षा और स्वास्थ्य को जन-सेवा का प्रमुख माध्यम बनाया। युगपुरुष गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज द्वारा 1932 ई. में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना इसी परिकल्पना का प्रस्फुटन था। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में शैक्षिक पुनर्जागरण का जो दीप प्रज्ज्वलित किया उसी लौ

से निकला प्रकाशपुन्ज है-दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा सिविल लाइन्स गोलघर में स्थापित तत्कालीन महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय की समस्त भूमि, भवन, विद्यार्थी एवं शिक्षक को महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज गोरखपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु उत्तर प्रदेश शासन को समर्पित कर गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना के सूत्रधार बने। दीनदयाल उपाधयाय गोरखपुर विश्वविद्यालय का 'महाराणा प्रताप परिसर' (जिसमे वाणिज्य संकाय, एम.बी.ए., प्रौढ़ शिक्षा, शिक्षा संकाय संचालित है) तथा 'महिला छात्रावास' महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा समर्पित किया गया परिसर ही है।

विश्वविद्यालय की स्थापना के अतिरिक्त महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् ने स्वयं भी प्राथमिक से उच्च शिक्षा तक के शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं की श्रृंखला खड़ी की है। आज लगभग चार दर्जन से अधिक प्राथमिक विद्यालय से महाविद्यालय की उच्च शिक्षा तक के शिक्षण संस्थान, पालिटेक्निक, बी.एड., एम.एड. आदि पाठ्यक्रमों की संस्थाओं के साथ-साथ नि:शुल्क सिलाई-कढ़ाई, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, संस्कृत विद्यालय एवं महाविद्यालय, योग संस्थान, महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेद चिकित्सालय, व्यायामशाला के माध्यम से गोरखनाथ मन्दिर का लोक-कल्याण अभियान अनवरत गतिमान है। चिकित्सा सेवा का माध्यम बना है गोरखनाथ मन्दिर परिसर से सटे गुरु श्रीगोरक्षनाथ चिकित्सालय एवं उसके द्वारा संचालित नि:शुल्क प्रकल्प एवं चिकित्सा शिविर। दूर-दराज गाँवों तक जहाँ सरकार द्वारा प्रदत्त चिकित्सकीय सुविधाएँ सर्व-सुलभ नहीं है, गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय के नि:शुल्क चिकित्सा शिविर एवं गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार केन्द्र के माध्यम से चिकित्सा सेवा पहुँचाकर स्वास्थ्य सेवा के पथ पर निरन्तर बढ़ते रहने का प्रयास जारी है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् का उद्देश्य अपनी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को अत्याधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा देने के साथ-साथ उनका समग्र व्यक्तिव विकास करना है। भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा, राष्ट्र के लिए त्याग, समर्पण, सामाजिक सहभाग विद्यार्थियों के व्यक्तिव का हिस्सा बने, इस बात पर विशेष बल दिया जाता है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपनी संस्थाओं में विविध प्रकार के अकादमिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रति वर्ष 4 से 10 दिसम्बर तक सम्पन्न होने वाला संस्थापक-सप्ताह समारोह संयुक्त रूप से सभी शिक्षण-प्रशिक्षण व चिकित्सा संस्थानों के छात्र-छात्राओं के सामूहिक प्रतिस्पर्धा के आधार पर व्यक्तिव विकास का माध्यम है। इस आयोजन में गोरखपुर की अन्य सभी शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थाओं तथा विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राएँ भी प्रतिभाग करते हैं। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की समस्त संस्थाओं तथा उद्घाटन समारोह के अवसर पर आयोजित शोभा-यात्रा में सम्मिलित अन्य विद्यालयों के कक्षा 6 से स्नातकोत्तर स्तर तक की सभी कक्षाओं में प्रथम-द्वितीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को मुख्य महोत्सव में वार्षिक छात्रवृति दी जाती है। इस समारोह में लगभग साढ़े सात सौ विद्यार्थी छात्रवृति/पुरस्कार प्राप्त करते हैं। नि:सन्देह पूर्वी उत्तर प्रदेश में आयोजित होने वाला यह सबसे बड़ा अकादमिक आयोजन है। भारतीय संस्कृति के सभी पर्व त्योहारों विशेषकर नागपंचमी, विजयादशमी, श्रीराम नवमी, होली इत्यादि में परम्परागत रूप से श्री गोरक्षपीठ सहभागी है। मकर संक्रान्ति पर्व श्री गोरखनाथ मन्दिर का विशेष पर्व है। इस पर्व पर माह भर चलने वाले मेले की अपनी विशिष्ट पहचान है।

गोरखनाथ मंदिर अपने आराध्य महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ के भाव, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अनुरूप सामाजिक परिष्कार, आर्त एवं पीड़ित जनता की आवाज बनने के लिए कृतसंकल्प है। श्री गोरखनाथ मंदिर समरस समाज एवं उत्तरदायित्वपूर्ण-संस्कारपूर्ण समाज बनाने का हामी है। इसके अतिरिक्त प्रकृति, लोक, संस्कृति एवं शास्त्र सभी में सामन्जस्य स्थापित करना उद्देश्य है। आज भी श्री गोरक्षनाथ द्वारा स्थापित श्रेष्ठतम परम्पराओं के साथ सेवा तथा साधना की लौ निरन्तर प्रज्ज्वलित है।

बौद्ध साहित्य एवं उसका अवदान

प्रो. राजवन्त राव

शब्द और अर्थ की संयुति ही साहित्य है। कालिदास ने शिव-पार्वती की वन्दना करते हुए उन्हें वागर्थ की भाँति संपृक्त कहा- ''वागर्थाविव संपृक्तौ'', किन्तु साहित्य में शब्द और अर्थ का सन्निवेश अर्धनारीश्वर की भाँति नहीं, जहाँ दोनों सम्पृक्त होते हुए भी अलग-अलग भी दिखायी देते हैं। वे जल और उससे उठने वाली तरंगों की भाँति एकाकार हैं- ''गिरा अरथ जल-वीचि सम कहियत भिन्न-भिन्न''। साहित्य वैचारिक अभिव्यक्ति की एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। इसका आकार विशाल है और इसके रूप विविध। अपने अध्ययन की सीमाओं के कारण हम उसे धार्मिक, साहित्य लौकिक साहित्य, ब्राह्मण साहित्य, बौद्ध साहित्य एवं जैन साहित्य आदि में विभक्त करते हैं।

बौद्ध साहित्य विपुल है- त्रिपिटक से आज तक प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य में बुद्ध के उपदेशों का संकलन है। इसका उन्मेष धर्मचक्र प्रवर्तन के साथ हुआ होगा। सारनाथ में तथागत के पंचवर्गीय भिक्षुओं को प्रथम उपदेश दिया था और वहीं से बुद्ध-वचनों का प्रचार-प्रसार प्रारम्भ हुआ। लम्बे समय तक बुद्ध ने अपने जीवन काल में स्वयं चारिका करते हुए अपने धर्म का उपदेश दिया था तथा भिक्षुओं ने मौखिक रूप से उसका संगायन। बुद्ध के उपदेश संवाद शैली में होते थे। यह शैली तत्कालीन समाज में काफी लोकप्रिय हुई थी। यह शैली संवेदना के स्तर पर तत्कालीन जनमानस में भीतर तक उतरती और प्रभावित करती थी। इसका प्रभाव अशोक के अभिलेखों पर भी पड़ा। यद्यपि बुद्ध के महापरिनिर्वाण के उपरान्त प्रथम बौद्ध संगीति में विनय और धर्म सम्बन्धी नियमों के संकलन का प्रयत्न हुआ, किन्तु उसके बाद भी लगभग दो शताब्दियों तक वैदिक साहित्य की भाँति ही बौद्ध साहित्य भी मौखिक रूप से ही सुरक्षित रखा गया। अशोक के शासन काल तक बौद्ध साहित्य कुछ व्यवस्थित रूप ग्रहण कर चुका था। अशोक के वैराट अभिलेख में धर्म पर्यायों की चर्चा है, जिसके अन्तर्गत अलियवसानि, अनागत भयानि, थेरगाथा, मुनिसुत्त, लाघुलोवाद आदि का उल्लेख मिलता है। त्रिपिटक साहित्य ने अधिकांशतः अपना अन्तिम रूप द्वितीय सदी ईस्वी तक प्राप्त कर लिया था, क्योंकि भरहुत और सांची के अभिलेखों में 'पेटकि' और पचनेकानिक (दीघनिकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय) शब्दों का प्रयोग मिलता है, जो पिटकों और निकायों के सूचक हैं। प्राचीन बौद्ध साहित्य तीन पिटकों में विभाजित होने के कारण त्रिपिटक के रूप में ज्ञात- विनय, सुत्त और अभिधम्म में अलग-अलग सन्दर्भों में संकलित बुद्ध के आधिकारिक वचन हैं। राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से ये तीनों महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें महाजनपद कालीन संस्कृति का चित्र विनय और सुत्तपिटक में अधिक सुरक्षित और प्रामाणिक हैं। प्रारम्भिक बौद्ध साहित्य जहाँ एक ओर प्रचलित सांस्कृतिक जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है, वहीं बुद्ध के जीवन चरित्र और उनके उपदेशों से उत्पन्न सांस्कृतिक परिवर्तन की ओर भी इंगित करता है। त्रिपिटक के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महात्मा बुद्ध ने प्रचलित धार्मिक मान्यताओं पर प्रश्न-चिह्न लगाते हुए बुद्धि और तर्क पर आधारित नवीन मान्यताओं की स्थापना की। उनके प्रयत्नों से ही भारतीय मनीषा आस्था को छोड़कर मानवीय तर्क बुद्धि के मार्ग पर अग्रसर हुई। बुद्ध ने भी सनातनियों की भाँति दृश्यमान जगत् में मनुष्य के आवागमन से मुक्ति को समस्त मानवीय प्रयत्नों का सबसे बड़ा लक्ष्य माना। विश्व के प्रति मनुष्य के प्रवृत्तिमार्गी होने को ही उसके दुःख का कारण माना। बुद्ध इस अर्थ में असनातनी

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

थे कि उन्होंने मोक्ष के मार्ग के रूप में कर्मकाण्ड को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने ईश्वर की सत्ता तथा वेदों की अपौरुषेयता का खण्डन किया। जगत् में व्याप्त दुःख के कारणों की व्याख्या की तथा उनसे मुक्ति का तर्कसंगत आचारपरक मार्ग सुझाया। धर्मदर्शन के क्षेत्र में उनके द्वारा प्रवर्तित प्रतीत्यसमुत्पाद और निर्वाण की अवधारणा भारतीय चिन्तन परम्परा की महान देन रही है। इनके अवधारणाओं की व्याख्या नई-नई दृष्टियों से निरन्तर चलती रही है। अश्वघोष, नागसेन, नागार्जुन, दिङ्नाथ, वसुबन्धु आदि अनेक गम्भीर दार्शनिकों और विचारकों से लेकर आधुनिक काल में आचार्य नरेन्द्र देव, राधाकृष्णन् राहुल सांकृत्यायन एवं गोविन्दचन्द पाण्डेय आदि ने अपनी दृष्टि से इनकी व्याख्या का प्रयत्न किया है।

त्रिपिटक साहित्य में सुरक्षित बुद्ध वचनों से अनेक मौलिक सांस्कृतिक अवधारणाओं का बोध होता है। बुद्ध ने धार्मिक जगत् को संघीय जीवन पद्धति दी, जिसका अवान्तरकालीन सम्प्रदायों के संगठन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने नैतिक जीवन के कुछ नये मानदण्ड स्थापित किये, जिनमें अहिंसा का सिद्धान्त प्रमुख था। उल्लेखनीय है कि बुद्ध का काल साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों के उत्कर्ष का भी काल था। प्रायः सभी पड़ोसी राज्य साम्राज्यलिप्सा के कारण संघर्षरत थे। कोसल ने काशी को और मगध ने अंग को आत्मसात कर लिया था। बुद्ध के समय में मगध-वज्जि संघ के साथ दीर्घकालिक संघर्ष में उलझा हुआ था। हिंसात्मक युद्ध जनजीवन को भी त्रस्त कर रहे थे। वैदिक धर्म की अश्वमेध और वाजपेय यज्ञों की परम्परा साम्राज्य लिप्सा के यज्ञ में आहुति डालने का कार्य कर रही थी। इस तुमुल कोलाहल और कलह के वातावरण में महात्मा बुद्ध ने अहिंसा की शंखध्वनि की थी। यह एक दुस्साहसपूर्ण चुनौती थी, जिसने तत्काल हिंसा और युद्ध का अन्त तो नहीं किया, किन्तु एक शुभ और कल्याणकारी चिन्तनधारा का सृजन किया, जिसने अधिसंख्य पीड़ित समाज की भावनाओं को सहलाया और हिंसामुक्त समाज के सृजन की आशा उत्पन्न की। एक शुभ विचार के पल्लवन और प्रोहण में शताब्दियाँ बीत जाती है। महात्मा बुद्ध के वचन भी क्रमशः साकार हुए। उसके आदर्शों से प्रभावित होकर ही अशोक ने अपने प्रथम शिलालेख में यह घोषणा की- ''न किंचि जीवं आरभिप्ता प्रजूहितव्यं'' तथा राजत्व का आदर्श बदलते हुए यह घोषित किया कि लोकहित से बढ़कर कोई कार्य नहीं है।

बुद्ध द्वारा उपदिष्ट अहिंसा परमो धर्मः का सिद्धान्त क्रमशः प्रभावशाली होता गया। लोकमानस में यह संस्कार गहरे जमते गये और धीरे-धीरे मानसिक धरातल पर यह सम्पूर्ण एशिया में फैल गया। अहिंसा की शक्ति और नैतिक बल की सार्थक अभिव्यक्ति गांधी के आन्दोलन में दिखायी दी। आज विश्व की मानवता के समक्ष हिंसामुक्त समाज एक आदर्श की भाँति है।

इसी प्रकार बौद्ध साहित्य में वर्णित संघीय जीवन पद्धति ने जिसे बौद्ध भिक्षुओं के लिये व्यवस्थित किया गया था, सामन्तवादी समाज की अवधारणा को जन्म दिया। वर्णों और जातियों में विभक्त समाज को बुद्ध तथा बौद्ध भिक्षुओं ने जन्मगत श्रेष्ठता का तिरस्कार करते हुए कर्मगत श्रेष्ठता की अवधारणा को प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। महात्मा बुद्ध कहा करते थे कि जिस प्रकार सागर में मिलकर नदियाँ अपना नाम-धाम खो देती हैं, उसी प्रकार संघ में प्रवेश के बाद जाति और वर्ण भी विलुप्त हो जाते हैं। उन्होंने न केवल शूद्रों को वरन् स्त्रियों को भी संघ में प्रवेश देकर अपने युग के प्रचलित विश्वासों से टक्कर ली थी। बुद्ध ने जनसामान्य के बीच रहते हुए उन्हीं की भाषा में उपदेश दिया। उनके उपदेशों की भाषा तत्कालीन काशी, कोशल और मगध क्षेत्र की प्रचलित लोकभाषा थी, जिसके माध्यम से उन्होंने गूढ़ आध्यात्मिक विचारों को जनसाधारण तक लोकभाषा में पहुँचाने का सफल प्रयत्न किया। इससे उनके विचार विशिष्ट समाज और लोक समुदाय में एक साथ स्वीकार किये गये।

पालि बौद्ध ग्रन्थों में संकलित बुद्ध वचनों ने आगे चलकर वैदिक चिन्तन को भी प्रभावित किया। भगवद्गीता में अनेकशः मुक्ति के लिए निर्वाण शब्द का प्रयोग मिलता है। ब्राह्मण धर्म में पुरुषार्थों और चतुराश्रमों की जो

अवधारणा विकसित हुई, उसके पीछे भी परोक्षत: बौद्ध धर्म के जीवन मूल्यों का प्रभाव था। निवृत्ति मूलक आदर्शों का समायोजन धर्मसूत्रों में अंशत: बौद्ध प्रभाव के कारण ही सम्भव हुआ। वस्तुत: पालि बौद्ध साहित्य और उसमें सन्निहित बुद्ध के वचनों ने भारतीय संस्कृति की निर्मिति में अनेक दृष्टियों से योगदान दिया। बौद्ध साहित्य त्रिपिटक के साथ समाप्त नहीं होता। पश्चातवर्ती बौद्ध साहित्य के अवदान भी महत्त्वपूर्ण हैं।

काल के प्रवाह के साथ बौद्ध धर्म का विकास और विस्तार हुआ। ईस्वी सन् अथवा उसके कुछ पूर्व ही महायान बौद्ध धर्म का उदय हुआ और उसके साथ ही बौद्ध धर्म के मौलिक स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ। बुद्ध के लोकोत्तर व्यक्तित्व की परिकल्पना के साथ ही पूजा, भक्ति जैसे तत्त्व भी बौद्ध धर्म में स्वीकृत हुए। इसके साथ ही प्रचलित राजत्व के मानदण्डों के प्रभाव के कारण बुद्ध का भौतिक स्वरूप भी महिमामण्डित हुआ। उल्लेखनीय है कि मज्झिम निकाय में सम्बोधि के पूर्व अपनी बाल्यावस्था का स्मरण करते हुए बुद्ध अपने उस ध्यान का स्मरण करते हैं जो उन्हें अपने पिता के खेत के किनारे जामुन के पेड़ के नीचे बैठे हुए प्राप्त हुआ था। निश्चय ही यह एक सामान्यकुलोत्पन्न बालक का स्वरूप है, किन्तु महाकवि अश्वघोष ने उन्हें एक वैभवशाली राजा के रूप में प्रस्तुत कर दिया। संन्यासी भिक्षु के रूप में बुद्ध का स्मरण करते हुए यशोधरा कहती हैं कि- 'स्वर्णमय पर्यङ्क पर सोने वाला, प्रतिदिन तूर्य वाद्ययन्त्रों के मधुर ध्वनि से प्रबोधित होने वाला मेरा संन्यासी भूमि पर एक वस्त्र विछाकर कैसे सोता होगा।' यह उल्लेखनीय है कि महायान के उदय के साथ ही संस्कृत बौद्ध साहित्य की भाषा बन गयी। अश्वघोष ने एक ओर जहाँ बौद्ध साहित्य को लोकप्रियता प्रदान की, वहीं संस्कृत साहित्य को भी समृद्ध किया। उन्होंने बौद्ध धर्म-दर्शन को रसात्मक अभिव्यक्ति दी तथा बुद्धचरित की रचना कर चरितकाव्य की परम्परा का प्रारम्भ किया। कालान्तर में राजाओं के दैवीकरण के साथ राजाओं के चरितकाव्य परम्परा का सूत्रपात हुआ (यथा- हर्षचरित, दशकुमारचरित, विक्रमाकदेवचरित, कुमारपाल चरित आदि)। अश्वघोष की शैली ने कालिदास को भी प्रभावित किया। सौन्दरनन्द के काव्य बिम्बों, शैली एवं प्रतीकों का प्रभाव कालिदास के कुमारसंभव पर दिखायी देता है। अश्वघोष ने आधुनिक युग के भी अनेक लेखकों को प्रभावित किया। अश्वघोष की कृतियों को ही आधार बनाकर मोहन राकेश ने ''लहरों का राजहंस'' एवं भगवान सिंह ने ''महाभिषग'' लिखा। अश्वघोष के बाद संस्कृत भाषा में विपुल बौद्ध साहित्य की रचना हुई। दिव्यावदान, ललित विस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक, आर्यमंजुश्रीमूलकल्प जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे गये। ललितविस्तर एवं सद्धर्मपुण्डरीक की गणना बौद्ध धर्म के पवित्र गन्थों में की जाती है एवं पालि तथा संस्कृत भाषा में लिखे बौद्ध ग्रन्थों का व्यापक अनुवाद हुआ। सर्वास्तिवादी इत्सिंग 7वीं शताब्दी में भारत आया था। उसने विनय पिटक का चीनी भाषा में अनुवाद किया था। सद्धर्मपुंडरीक का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। बुद्धचरित का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। 'बुद्धचरित' सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला ग्रन्थ था।

महायान के अन्तर्गत ही शून्यवाद और विज्ञानवाद जैसे गम्भीर दार्शनिक मतों का प्रतिपादन हुआ। इस दार्शनिक मतों ने ब्राह्मण दार्शनिक चिन्तन को भी प्रभावित किया। शंकर के वेदान्त पर भी किंचित मात्रा में बौद्ध शून्यवादी दर्शन का प्रभाव दिखायी देता हैं शंकराचार्य ने शून्यवाद की अवधारणा को उपनिषदों के आनन्दमय ब्रह्मतत्त्व से जोड़ दिया। इतिहासकारों ने शंकर को प्रच्छन्न बौद्ध कहा। महायान साधना पद्धति ने ब्राह्मण तथा बौद्ध मतों में दार्शनिक स्तर पर जहाँ मतभेद और विवाद उत्पन्न किये, वहीं उपासना के स्तर पर अनेक समानतायें भी उत्पन्न कीं और अन्तत: वैष्णव भक्तों ने बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में ग्रहण कर लिया। महायान में 'बोधिसत्व' की अवधारणा के विकास ने हिन्दू धर्म को दूर तक प्रभावित किया। महायान को बोधिसत्त्व-यान भी कहते हैं। महाकरुणा एवं लोककल्याण की भावना से प्राणिमात्र के लिये पूर्ण समर्पण इसकी विशेषता थी। इसी से अन्य ब्राह्मण सम्प्रदायों में 'पराई पीर' के प्रति संवेदना प्रस्फुटित हुई- वैष्णव जन

तो तेने कहिए जे पीर पराई जाणे रे।' बौद्ध साहित्य के अनुसार शुद्धोदन पुत्र सिद्धार्थ के अतिरिक्त पूर्व में भी अनेक बुद्ध हो चुके हैं। समाधिराजसूत्र में बुद्धों की अस्सी करोड़ संख्या का उल्लेख है। यद्यपि उसमें तथागत के 120 नाम ही मिलते हैं। ललितविस्तर, क्रियासंग्रह, रक्षाभगवती आदि के आधार पर पाश्चात्य इतिहासकार हाडसन ने 1043 बुद्धों के नाम दिये हैं। जातकों में बुद्ध के पूर्वरूप बोधिसत्व के 545 जन्मों की कथा है। निदानकथा में 27 बुद्धों का जीवन चरित है। आनन्द कौसल्यायन ने जातकों के आधार पर 24 बुद्धों का निष्कर्ष निकाला है। एक परम्परा पूर्ववर्ती बुद्धों की संख्या छः या सात बताती है- विपूस्सी, सिखी, वेस्सभू, ककुसंघ, कोनानमन, कस्सप, गौतम।

महायान मत में प्रचलित पूजा उपासना ने नवीन कला परम्पराओं को जन्म दिया। ईस्वी सन् के आस-पास गांधार और मथुरा कला शैलियों में बुद्ध की प्रतिमाएँ निर्मित होने लगीं तथा ईस्वी सन् के आस-पास अजन्ता के चित्रों का सृजन भी प्रारम्भ हो गया। कहना कठिन है कि भागवत धर्म के अन्तर्गत विष्णु की मूर्तियों का निर्माण हुआ अथवा महायान धर्म के अन्तर्गत बुद्ध की। मथुरा के भक्ति प्रधान वातावरण ने निश्चय ही महायान धर्म को प्रभावित किया होगा और स्तूप-प्रतीक पूजा का स्वाभाविक पर्यवसान बुद्ध के धर्मकाय पूजा में हुयी होगी। महायान बौद्ध धर्म के प्रेरणा से भारत के बाहर भी बौद्ध कलाकृतियों की रचना हुई। इस दृष्टि से बोरोबुदूर स्तूप और आनन्द पैगोड़ा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बौद्ध धर्म ने शिक्षा के प्रचार-प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। एक संघटित बौद्ध विहारों ने क्रमशः महान शिक्षा केन्द्रों ने महानशिला केन्द्रों का रूप ग्रहण किया। इनमें नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय महत्त्वपूर्ण थे, जहाँ चीन, मध्य एशिया, तिब्बत आदि से जिज्ञासु आये थे।

बौद्ध धर्म में परिवर्तन एवं प्रसार के साथ बौद्ध साहित्य भी वर्धमान रहा। पूर्वमध्य काल में तांत्रिक बौद्ध धर्म का उदय हुआ, जिसके अन्तर्गत गुप्त साधनाएँ प्रचलित हुईं। तान्त्रिक बौद्ध सम्प्रदायों में वज्रयान और सहजयान का विशेष प्रचार-प्रसार हुआ। तान्त्रिक साधनाओं का प्रभाव ब्राह्मण धर्म पर भी पड़ा। तान्त्रिक साधनाओं का प्रभाव धर्म, कला एवं साहित्य पर पड़ा और विकृतियाँ उत्पन्न हुईं। अन्ततः तान्त्रिक साधनाओं ने बौद्ध धर्म के पतन का मार्ग प्रशस्त किया। बौद्ध तान्त्रिकों ने भी रस-रसायन और औषधि विज्ञान के विकास में योगदान दिया।

अपने विकास और विस्तार की प्रक्रिया में बौद्ध धर्म ने भारत की भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए वृहत्तर भारतीय संस्कृति की संरचना में भी योगदान दिया। इस प्रक्रिया में सिंहली, चीनी, जापानी तुरफान एवं काशगर आदि भाषाओं में भी बौद्ध साहित्य का अनुवाद हुआ तथा मौलिक बौद्ध ग्रन्थों की रचना भी हुई। बौद्ध धर्म की ओर आधुनिक काल में यूरोपीय लेखक भी आकृष्ट हुए। मैथ्यु अर्नाल्ड ने Light of Asia की रचना की। आज भी देश-विदेश में बुद्ध के जीवन और उपदेशों को लेकर नवीन व्याख्याओं और आयामों के साथ साहित्य की रचना हो रही है। आधुनिक इतिहासकार भी बौद्ध धर्म के विभिन्न पक्षों की व्याख्या समकालीन सन्दर्भों में करने में संलग्न हैं।

निष्कर्षतः हम यह देखते हैं कि हिमालय की उपत्यका की एक वनस्थली में उत्पन्न सिद्धार्थ ने सम्बोधि के पश्चात् जिस धर्म का बोध और प्रचार किया, वह धीरे-धीरे विश्व के एक विस्तृत भूखण्ड में व्याप्त हो गया। वस्तुतः भारतीय महापुरुषों में शायद ही किसी दूसरे ऐतिहासिक व्यक्ति पर इतना विशाल साहित्य लिखा गया हो, जितना बुद्ध पर और शायद ही किसी व्यक्ति ने भारतीय संस्कृति सहित एशियाई संस्कृति को इतना प्रभावित किया हो, जितना बौद्ध धर्म ने।

☸

॥ श्रीहरिः॥

गीताप्रेस, गोरखपुरका संक्षिप्त परिचय

डॉ. मणिन्द्र यादव

''गीताप्रेस'' के संस्थापक ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय श्रीजयदयालजी गोयन्दका (सेठजी)- का जीवनव्रत था-गीता-प्रचार। उनकी मंगल अभिलाषा थी कि गीतासे जो प्रकाश उन्हें मिला है वह मानवमात्रको मिले। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये 'गीताप्रेस' की स्थापना विक्रम संवत् 1980 (सन् 1923 ई.) के मई महीनेमें हुई। गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाताके नामसे सोसाइटी पंजीयन अधिनियमके अन्तर्गत पंजीकृत गीताप्रेस आरम्भसे ही एक धार्मिक संस्थाके रूपमें प्रतिष्ठित रहा है।

इसका संचालन संस्थाके ट्रस्ट-बोर्डके नियन्त्रणमें होता है। गीताप्रेस मुख्य कार्य सस्ते-से-सस्ते मूल्यपर सत्साहित्यका प्रचार और प्रसार करना है। पुस्तकोंके मूल्य प्राय: लागतसे कम रखे जाते हैं, परन्तु इसके लिये यह संस्था किसीसे किसी प्रकारका आर्थिक सहयोग स्वीकार नहीं करती।

गीताप्रेस अब तक लगभग 70 करोड़से अधिक पुस्तकें उपलब्ध करा चुका है। कल्याण, कल्याण कल्पतरु एवं युग कल्याणकी प्रकाशित प्रतियाँ इसमें सम्मिलित नहीं हैं।

सन् 2019 के नवीन प्रकाशन गीताप्रेस अपने पुराने प्रकाशनोंके पुनर्मुद्रण तो करता ही है साथ-साथ प्रतिवर्ष कुछ नयी पुस्तकोंको भी प्रकाशित करता रहता है। इस क्रममें वर्ष 2019 में कुल चौहत्तर नयी पुस्तके प्रकाशित की गयी हैं। इनमें अधिकांश पुस्तके गीताप्रेससे प्रकाशित पुस्तकोंका अन्य भाषामें अनुवाद भी है।

गीताप्रेसके इसी प्रकाशन-प्रक्रियाके अन्तर्गत इस वर्ष हिन्दी भाषा में बारह पुस्तके, बँगला भाषामें छ: पुस्तके, गुजरातीमें, छ: पुस्तके, अंग्रेजीमें नौ पुस्तके, कन्नड़में चार पुस्तके, नेपाली में चौबीस पुस्तके, मलयालममें तीन पुस्तके और तमिलमें एक पुस्तक-इस प्रकार कुल चौहत्तर पुस्तके प्रकाशित की गयी हैं।

हिन्दी प्रकाशनोंमें प्रमुख रूपसे सरल श्रीदुर्गासप्तशती (मूल पाठविधिसहित) का प्रकाशन सही उच्चारण सीखनेवाले सामान्य पाठकोंकी सुविधाके लिये किया गया है। इसमें श्लोकके प्रत्येक चरणके कठिन शब्दोंको सामासिक चिह्नोंसे अलग करके दो रंगों में छापा गया है।

महापुराणोंके क्रममें श्रीमहाशिवपुराणका विशेष माहात्म्य है। इस महापुराणमें कुल सात संहितायें हैं। इसे सचित्र, मूल श्लोक, हिन्दी अनुवादसहित दो खण्डोंमें प्रकाशित किया गया है।

कर्मकाण्ड एवं संस्कारक दृष्टिसे उपनयन-संस्कार-पद्धति, विवाह-संस्कार-पद्धति एवं पंचांग-पूजन-पद्धतिका प्रकाशन किया गया है। इसी प्रकार तेलुगु भाषामें श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (मूल) तथा तमिल भाषामें श्रीविष्णुपुराण और श्रीमद्भागवतमहापुराण वचनमु का दो खण्डोंमें प्रकाशन किया गया है।

श्रीमद्भागवतमहापुराणम् (सटीक) का प्रकाशन मलयालम भाषामें पहली बार किया गया है। तीन खण्डोंमें विभक्त इस महापुराणके बारहों स्कन्धोंकी मलयालम भाषामें बहुत ही सरस, सरल व्याख्या की गयी है।

गीताप्रेसके लगभग 1927 वर्तमान प्रकाशनोंमें लगभग 877 प्रकाशन संस्कृत एवं हिन्दी के हैं। शेष प्रकाशन मुख्यतया गुजराती, मराठी, तेलुगु, बँगला, ओड़िया, तमिल, कन्नड़, अंग्रेजी आदि भारतीय भाषाओंमें है। श्री रामचरितमानस

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

आदिका प्रकाशन नेपाली भाषामें भी है।

गीताप्रेसकी पुस्तकों एवं कल्याणका प्रचार 21 निजी थोक, 4 फुटकर पुस्तक दूकानों, 51 स्टेशन स्टेशन-स्टालों तथा हजारों पुस्तक-विक्रेताओंके माध्यमसे होता है।

'कल्याण', 'युग-कल्याण' एवं 'Kalyana-Kalpataru'-गीताप्रेस-द्वारा तीन मासिक पत्र 'कल्याण' तथा 'युग-कल्याण' हिन्दीमें एवं 'Kalyana-Kalpataru' अंग्रेजीमें प्रकाशित किये जाते हैं।

'कल्याण' की वर्तमान समयमें लगभग 1,85,000 प्रतियाँ छपती है। वर्षका पहला अंक किसी विषयका विशेषांक होता है। जनवरी 2019 का विशेषांक-'राधामाधव-अंक' तथा जनवरी 2020 का विशेषांक-'बोध कथा-अंक' है। 'कल्याण' भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म, सदाचार एवं साधना-संबन्धी सामग्रीद्वारा जन-जनको कल्याणके पथपर अग्रसरित करनेका निरनतर प्रयास कर रहा है। दिसम्बर 2019 तक इसकी लगभग 16 करोड़ 17 लाख प्रतियाँ छप चुकी हैं।

'Kalyana-Kalpataru' के अबतक 64 विशेषांक निकल चुके हैं। अक्टूबर 2019 का विशेषांक-'Narayaniyam' है।

नित्यलीलालीन परम श्रद्धेय श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार (भाईजी)-ने आजीवन 'कल्याण' एवं 'Kalyana-Kalpataru' का सम्पादन-कार्य किया। महात्मा गांधीजीकी सम्मतिके अनुसार 'कल्याण' एवं 'Kalyana-Kalpataru' में आरम्भसे ही न तो कोई विज्ञापन छापा जाता है और न पुस्तकोंकी समालोचना ही की जाती है।

'गीताप्रेसका मुख्य द्वार 'लाला-चित्र-मन्दिर', गोरखपुरका एक महत्त्वपूर्ण दर्शनीय आकर्षक स्थल है। इनका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्रप्रसादजीने अपने कर-कमलोंद्वारा 29 अप्रैल 1955 को किया था।

गीताप्रेस-मुख्य द्वार-गीताद्वारकी रचनाके प्रत्येक पादमें भारतीय संस्कृति, धर्म एवं कलाकी गरिमाको सन्निहित करनेका प्रयास किया गया है। इस मुख्य द्वारके निर्माणमें देशकी गौरवमयी प्राचीन कलाओं तथा विख्यात प्राचीन मन्दिरोंसे प्रेरणा ली गयी है और इनकी विभिन्न शैलियोंका आंशिकरूपमें दिग्दर्शन करानेका प्रयास किया गया है।

लीला-चित्र-मन्दिर-गीताप्रेसके लीला-चित्र-मन्दिरमें भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाओंके रमणीय 684 चित्रोंके अतिरिक्त प्रतिभावान् चित्रकारोंद्वारा बनाये हुए अनेक हस्त-निर्मित चित्रोंका संग्रह है। चित्र-मंदिरकी दीवार पर संगमरमरके पत्थरोंपर सम्पूर्ण श्रीमद्भावद्गीता एवं संत-भक्तोंके 700 से अधिक दोहे तथा वाणियाँ खुदी हुई हैं।

पुस्तकोंका प्रदर्शन-गीताप्रेस, गोरखपुरके मुख्यद्वार के सामने निर्मित वातानुकूलित पुस्तक-दुकानमें विभिन्न भाषाओंमें गीताप्रेमद्वार प्रकाशित पुस्तकोंके भव्य प्रदर्शन एवं बिक्रीकी व्यवस्था है।

संस्था के अन्य कार्यकलाप

गीताभवन-स्वर्गाश्रम-पुण्यसलिला भगवती भागीरथी श्रीगंगाजीके तटपर स्थित गीताभवनमें दुर्लभ सत्संगका नित्यप्रति आयोजन चलता है। यहाँपर 1000 से अधिक कमरे हैं जिसमें साधकोंके लिये आवास, निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा तथा कम मूल्यपर भोजन आदिकी व्यवस्था है। साधुओंको मुफ्त भोजन, वस्त्र आदि दिये जाते हैं। गंगातटपर श्रद्धालुओंद्वारा 31 अरब रामनामकी हस्तलिखित पुस्तिकाओंकी नींवपर बना रामनाम स्तम्भ आगन्तुक भक्तोंकी परिक्रमा एवं साधनाका एक सुन्दर सील है। यहाँपर बना कथा-स्थल तथा रमणीय घाटोंपर गंगास्नान, साधना एवं भजन आदिकी सुन्दर व्यवस्था है।

'गीताभवन-आयुर्वेद संस्थान' स्वर्गाश्रममें शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियोंके निर्माण एवं स्वर्गाश्रम, कोलकाता, गोरखपुर, चूरू, सूरत आदि स्थानोंपर निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्साकी व्यवस्था है।

ऋषिकुल-ब्रह्मचर्याश्रम, चूरू (राजस्थान)-में प्राचीन पद्धतिके अनुसार ब्रह्मचारियोंके निःशुल्क शिक्षा,

आवास, चिकित्सा आदिकी तथा अल्प मासिक शुल्कपर भोजनकी व्यवस्था है।

गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता - संस्थाके प्रधान कार्यालय, कोलकाताके विशाल सभागारमें नित्य गीता-पाठ और संत-महात्माओंके प्रवचनकी व्यवस्था है। यहाँ स्वप्रकाशित पुस्तके, आयुर्वेदिक औषधियों एवं कपड़े आदि कुछ हिंसारहित शुद्ध वस्तुओंकी उचित मूल्यपर बिक्री करनेकी व्यवस्था है।

संस्थाके अन्य विभागोंमें गीता-रामायण-परीक्षा-समिति, साधक-संघ, नाम-जप-विभाग एवं गीताप्रेस-हस्त-निर्मित-वस्त्र-विभाग आदि हैं।

गीताप्रेस-सेवादल दुर्भिक्ष, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओंमें पीड़ितोंकी यथासम्भव आवश्यक सेवा करता है।

जनपद-गोरखपुर

- जयन्त नार्लिकर

यह अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है कि महायोगी श्री गोरक्षनाथ, महात्मा गौतम बुद्ध तथा संत कबीर जैसे महापुरुषों के पावन संस्मरणों से समृद्ध गोरखपुर में 11 से 13 जनवरी, 2020 तक गोरखपुर महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। मा. मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में इस जनपद में विकास की गंगा अनवरत प्रवाहित है, जिसका एक संक्षेपित विवरण देने का प्रयास इस लेख में किया गया है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में इन्सेफेलाइटिस की बीमारी पर **''दस्तक''** अभियान के द्वारा एक प्रभावी कार्यवाही की गयी है। वर्ष 2019 में इस बीमारी से 15 बच्चों की मृत्यु हुई, जो वर्ष 2016 में इस बीमारी से मृतकों की संख्या 127 से अत्यन्त कम है। इस अभियान की सफलता का प्रमुख कारण उच्चत्म स्तर से सशक्त पर्यवेक्षण एवं स्वास्थ्य शिक्षा, पंचायत, ग्रामीण विकास, पशुपालन, नगर विकास आदि विभागों के मध्य सुदृढ़ समन्वय रहा है। विगत वर्ष एम्स, गोरखपुर में 50 विद्यार्थियों को पाठ्यदान नवनिर्मित कैम्पस में दिया जा रहा है। इसके साथ ही ओ.पी.डी. की सेवायें पूर्णरूपेण प्रारम्भ कर दी गयी है तथा इस वर्ष एम्स समस्त विधाओं में जन-स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान कर देगा। इसके साथ ही बी.आर.डी. मेडिकल कॉलेज में लगभग 308 करोड़ रूपये की योजना से अवस्थापना सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। केन्द्र सरकार की सहायता से आर.एम.आर.सी. एवं सी.आर.सी. लगभग 55 करोड़ रूपये से बनाया जा रहा है। जनपद में आयुष्मान भारत के अन्तर्गत 2,33041 पारिवारों को भी लाभान्वित किया जा रहा है।

गर्व का विषय है कि स्वच्छता सर्वेक्षण (ग्रामीण) में जनपद गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम स्थान पर तथा देश में 26वें स्थान पर रहा है। स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत जनपद में 5,64,347 शौचालयों का निर्माण पूर्ण करते हुये 2957 गांवों एवं 171 वार्डों को ओ.डी.एफ. घोषित किया जा चुका है। इसी प्रकार प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत जनपद में 40,000 से अधिक लाभार्थी आवास पाने में सक्षम हुये हैं।

प्रधानमंत्री कृषक सम्मान निधि द्वारा जनपद में 3,72,459 कृषक भाईयों को डायरेक्ट बेनीफिट ट्रान्सफर के माध्यम से 6,000 रूपये प्रति वर्ष दिये जा रहे हैं। इसके साथ ही सरकार ने मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, निराश्रित महिला पेंशन तथा वृद्धा पेंशन के माध्यम से महिलाओं को दीर्घकालिक लाभ प्रदान किया है।

जनपद के नगरीय अंचलों में अमृत, स्मार्ट सिटी योजना (राज्य पोषित) एवं नमामि गंगे के माध्यम से घरों में शुद्ध पेयजल की उपलब्धता, सीवर लाइन का निर्माण, पार्कों का पुनर्निर्माण, स्मार्ट एवं सुरक्षित नगरीय अंचल का विकास एवं जलाशयों/नदियों में गिरने वाले नालों का आधुनिकतम् तकनीकी से शोधन की व्यवस्था की जा रही है।

निराश्रित गोवंश संरक्षण पर बल देते हुये जनपद में 49 गो-आश्रय स्थलों का निर्माण किया गया है, जिसमें नगर निगम, गोरखपुर क्षेत्र में 10 करोड़ रूपये से अधिक धनराशि से स्थापित कान्हा उपवन प्रमुख है। इन स्थलों में 2300 निराश्रित गोवंश संरक्षित हैं।

उपरोक्त योजनाओं के अतिरिक्त जनपद में विभिन्न विभागों द्वारा अवस्थापना उन्नयन हेतु वृहद् स्तर पर कार्य प्रगति पर है, जिसमें शहीद अशफाक उल्लाह खाँ प्राणि उद्यान का निर्माण 122 एकड़ क्षेत्र में 181.82 करोड़ रूपये की लागत से किया जा रहा है एवं इस वर्ष यह जनसामान्य के लिये उपलब्ध होगा।

रामगढ़ ताल क्षेत्र में लगभग 200 करोड़ रूपये से अधिक की योजनाओं से जलाशय का शुद्धिकरण एवं

आयुक्त, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर।

संरक्षण, ट्रैक का निर्माण, फाउन्टेन, लाइट एण्ड साउण्ड शो विकसित किया गया है। इस परिक्षेत्र में स्मार्ट टॉयलेट एंव फूड कोर्ट बनाया जाना प्रस्तावित है। इसी परिक्षेत्र में वॉटर स्पोर्ट्स काम्पलेक्स 40 करोड़ रूपये की लागत से निर्माणाधीन है, जिसमें वॉटर स्पोर्ट्स का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का प्रशिक्षण कार्य इस वर्ष से आरम्भ किया जाना है। गोरखपुर के रंगकर्मियों का बहुप्रतीक्षित आधुनिक प्रेक्षागृह का निर्माण 49.50 करोड़ रूपये की लागत से किया जा रहा है, जो इस वर्ष जनमानस को समर्पित किया जायेगा।

धुरियापार में आई.ओ.सी.एल. द्वारा बायो फ्यूल कारखाने का निर्माण लगभग 1100 करोड़ रूपये की लागत से आरम्भ कर दिया गया है, जो फसल अवशिष्ट को प्रयुक्त करते हुये ईंधन बनायेगा। जिससे एक तरफ पराली जलाने की समस्या का निदान होगा, वहीं कृषकों की आय में वृद्धि भी होगी। पिपराईच में 385 करोड़ रूपये की लागत से आधुनिक चीनी मिल का पुनर्निर्माण किया जा चुका है, जिससे मण्डल के समस्त कृषकों को लाभ मिलेगा। इसी वर्ष हिन्दुस्तान उर्वरक एवं रसायन लि. द्वारा 7086 करोड़ रूपये की लागत से उर्वरक कारखाने का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया जायेगा, जिससे किसानों को उर्वरक की उपलब्धता के साथ-साथ इस क्षेत्र के युवाओं को रोजगार के नये अवसर भी प्राप्त होंगे।

गोरखपुर विमानपत्तन से दिल्ली, मुम्बई, बंगलुरू, हैदराबाद, कोलकता, प्रयागराज जैसे नगर हवाई सेवा से संयोजित हुये हैं, जो गोरखपुर के लिये हर्ष का विषय है। विमानपत्तन पर नये सिविल टर्मिनल बिल्डिंग का निर्माण अतिशीघ्र आरम्भ हो जायेगा।

जनपद गोरखपुर के युवाओं को तकनीकी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिये सहजनवां तहसील में रु. 15.78 करोड़ की लागत से राजकीय पालिटेक्निक एवं चौरीचौरा में औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण रु. 5.93 करोड़ की लागत से कराया जा रहा है। इनके निर्माण से जनपद के छात्र-छात्राओं को व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा सुगमता के साथ उपलब्ध हो सकेगी। इसी क्रम में पशु चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना भी जनपद में प्रस्तावित है एवं इस हेतु भूमि भी चिन्हांकित की जा चुकी है।

खेल के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिये बीर बहादुर सिंह स्पोर्ट्स कॉलेज में रु. 7.71 करोड़ की लागत से हाकी मैदान में एस्ट्रो टर्फ लगाने का कार्य किया जा गया है, जिससे हॉकी के खिलाड़ियों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा हेतु तैयार किया जा सकेगा।

राप्ती नदी के दोनों (राजघाट एवं रामघाट) तटों पर लगभग 50 करोड़ रूपये की लागत से पक्के स्नान घाटों एवं पूजा स्थल के निर्माण से धार्मिक पर्यटन को एक नया आयाम प्राप्त होगा।

गोरखपुर महानगर में दो नये बस स्टेशन कचहरी एवं नौसढ़, लगभग 6 करोड़ रूपये की लागत से विकसित किये गये हैं। इसके साथ ही महेसरा एवं कालेसर में अन्तर्राज्यीय बस अड्डों का निर्माण कार्य भी प्रस्तावित है। नगरीय अंचल में परिवहन की सुविधा को सुदृढ़ करने के लिये 27 लो-फ्लोर विद्युत संचालित स्मार्ट बसों का संचालन इस वर्ष किया जायेगा, जिसके लिये 2 चार्जिंग स्टेशन का निर्माण कार्य प्रगति पर है। मा. मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में लगभग 5000 करोड़ रूपये की लागत से गोरखपुर लाइट मेट्रो रेल का प्रस्ताव अपने अन्तिम चरण में है एवं इस वर्ष में परियोजना का कार्य प्रारम्भ होने की आशा है।

नागरिक सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ करने हेतु गोरखपुर में तीन नये पुलिस थाना-रामगढ़ ताल, एम्स एवं गीडा की स्वीकृति प्राप्त हुई है।

गोरखपुर को अन्य नगरों/प्रदेशों से जोड़ने हेतु बहुमुखी सम्पर्क मार्ग, यथा, गोरखपुर-वाराणसी (लगभग 1030 करोड़ रुपये), गोरखपुर-महराजगंज-निचलौल (लगभग 341 करोड़ रुपये), गोरखपुर-देवरिया, गोरखपुर-सोनौली (लगभग 151.84 करोड़ रुपये), कालेसर-जं. कौड़िया बाईपास (लगभग 531 करोड़ रुपये) का निर्माण अपने अन्तिम चरण में है। इसके साथ ही जनपद के आन्तरिक सड़क मार्गो का चौड़ीकरण भी वृहद स्तर पर किया जा रहा है।

मा. मुख्यमंत्री जी के दिशा-निर्देशन में जनमानस में एक नई कार्य संस्कृति एवं सकारात्मक मानसिकता का प्रादुर्भाव, भ्रष्टाचार पर प्रभावी रोक, पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता तथा विकास के लिये सद्भावपूर्ण वातावरण का सृजन हो रहा है।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुरः अभिप्रेरणा के एक वर्ष

प्रो. रविशंकर सिंह

01 मई, 1950 ई. को पं. गोविन्द वल्लभ पंत, मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र. के कर कमलों द्वारा गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के शिलान्यास में तत्कालीन गोरक्षपीठाधीश्वर ब्रह्मलीन दिग्विजयनाथ जी महाराज का बहुश्रुत, तथ्यपरक अमिट योगदान है क्योंकि महाराज श्री ने श्रीगोरक्षपीठ, श्रीगोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर द्वारा पोषित महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद (स्थापना वर्ष-1932 ई.) द्वारा संचालित दो महाविद्यालयों- महाराणा प्रताप महाविद्यालय, सिविल लाइन्स, गोरखपुर एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय, सिविल लाइन्स, गोरखपुर- की भू, भवन, परि-सम्पत्ति एवं मानव संसाधन को विश्वविद्यालय स्थापना-यज्ञ में आहूति के रूप में दान कर दिए। लगभग छः वर्षों तक विश्वविद्यालय की प्रकृति एवं प्रसार पर विचार-विमर्श के उपरान्त 1956 में गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर उ.प्र. विधान सभा द्वारा अधिनियमित हुआ। सन् 1997 में विश्वविद्यालय का पुनर्नामांकरण एकात्म मानव दर्शन के प्रवर्तक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के नामानुसार हुआ। आज 07 संकायों एवं 29 विभागों एवं दो नव शोधपीठों- दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ और महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ- के साथ लगभग छः दशकों से अधिक दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर अपने क्षेत्रीय, प्रदेशीय, राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय उत्तरदायित्वों के निर्वहन में निरन्तर अग्रसर है।

गतवर्ष विश्वविद्यालय ने त्रि-स्तरीय- शैक्षिक, शोध एवं प्रशासनिक - नवाचारों का सूत्रपात किया है। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा संघटक-01, शासकीय (08), सहायता प्राप्त अशासकीय (21) एवं स्ववित्तपोषित (310) सहयुक्त महाविद्यालयों का प्रवेश, परीक्षा एवं प्रशासनिक निगरानी की जाती है। विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित उल्लेखनीय कार्य प्रारम्भ हुए हैं-

- कौशल विकास को ध्यान में रखकर प्रथम बार सत्र 2019-20 से विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर स्तर के सभी पाठ्यक्रमों में Choice Based Credit System (CBCS) लागू कर दिया गया है।
- महाविद्यालयों में भी स्नातकोत्तर स्तर के विज्ञान संकाय के पाठ्यक्रमों में Choice Based Credit System (CBCS) सत्र 2019-20 से लागू कर दिया गया है।
- पंचवर्षीय बी.ए.-एल.एल.बी. (ऑनर्स) कोर्स 2018-19 से विधि संकाय में संचालित हो रहा है।
- विश्वविद्यालय में इन्टीग्रेटेड यूनिवर्सिटी मैंनेजमेन्ट सिस्टम लागू किये जाने हेतु Uttar Pradesh Electronics Corporation Limited (UPECL) द्वारा लेखा विभाग में सेलरी, बजट, ऑनलाइन ट्रान्जेक्शन, जी.पी.एफ. माड्यूल परीक्षा एवं प्रवेश कार्यों को ऑनलाइन कराने के लिए साफ्टवेयर बनाया जा चुका है।
- विभागों में आयोजित होने वाले पी-एच.डी. साक्षात्कार में Open Viva /Open Defence का नियम लागू है।
- 7 वर्षों बाद विश्वविद्यालय में सत्र 2019-20 से पी-एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश योग्यता परीक्षा (Research Eligibility Test) प्रथम बार ऑनलाइन परीक्षा के माध्यम से सफलतापूर्वक कराये गये हैं। RET में कुल 400 शोधार्थियों को Pre-Ph. D. कोर्स हेतु उत्तीर्ण पाया गया।

विशेष कार्याधिकारी, महायोगी गुरुश्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ; अधिष्ठाता, छात्र-कल्याण; आचार्य, भौतिकी विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर-273009 (उ.प्र.) भारत

➢ शोध कार्य में साहित्यिक चोरी रोकने हेतु विश्वविद्यालय के केंद्रीय ग्रंथालय में दिनांक 31 अगस्त 2019 तक 18 शोध प्रबंधों का परीक्षण UGC & INFLIBNET द्वारा प्राप्त URKUND सॉफ्टवेयर द्वारा किया जा चुका है।

➢ **Ph.D. में पंजीकृत अधिकतम 100 छात्रों को विश्वविद्यालय के सामान्य निधि से बजट में प्रावधानित रु. 25,00,000/- (पच्चीस लाख मात्र) द्वारा विश्वविद्यालय शोध-प्रोत्साहन छात्रवृत्ति (University Research-Incentive Scholarship) प्रदान करना।**

➢ **नवनियुक्त कुल 18 सहायक आचार्यों ने UGC की START-UP योजना एवं DST द्वारा लगभग कुल धनराशि रू. 2.15 करोड़ प्रोजेक्ट के रूप में अर्जित की।**

➢ महायोगी गुरुश्री गोरक्षनाथ शोधपीठ द्वारा प्रकाशित पुस्तिकायें :-

(1) **'गोरखनाथ और भोजपुरी'**, लेखक-डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त

(2) **'नाथ पंथ का समाज दर्शन'**, लेखक-डॉ. प्रदीप कुमार राव

(3) **'नाथ पंथ'**, लेखक-डॉ. प्रदीप कुमार राव

(4) **'सृष्टि सृजन और योग का विज्ञान', डॉ. भारती सिंह एवं प्रो. दिनेश कुमार सिंह**

(5) **'गोरखनाथ एवं विविध संदर्भ', डॉ. संतोष कुमार सिंह**

- **अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'नाथ प्रज्ञा'** का प्रकाज़न एवं **ISBN** नम्बर के लिए प्रेषित।
- **दिनांक 21 जून, 2019 को महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' के सुअवसर पर प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले एकल व्याख्यान माला का उद्घाटन एकल व्याख्यान परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महंतश्री योगी आदित्यनाथ जी महराज, मा. मुख्यमंत्री, उ.प्र. द्वारा किया गया।**
- **नाथ पंथ विश्वकोष के निर्माण के लिए दो कार्यशालाओं (26-27 जुलाई, 2019 एवं 14-15 दिसम्बर, 2019) का आयोजन सम्पन्न।**

➢ पं. दीनदयाल उपधयाय शोधपीठ- विश्वविद्यालय परिसर में पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ की स्थापना की जा चुकी है। इस शोधपीठ के लिए शासन से **रु. 50.00 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ** है। शोध पीठ सुचारु रूप से संचालित हो रहा है।

- 25 सितम्बर, 2018 को पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती के अवसर पर ''एकात्म मानववाद एवं सामाजिक समरसता'' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ।
- नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं को पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की कृत्तिव एवं व्यक्तिव की जानकारी हेतु 04 जुलाई, 2019 से प्रारम्भ सभी कक्षाओं के प्रवेश के अवसर पर पं. दीनदयाल जी के जीवन पर आधारित हस्तपुस्तिका वितरित की गयी।

➢ विश्वविद्यालयों में एक मेगावाट सौर ऊर्जा का उपयोग करने पर बल प्रदान करना। प्रकाज़ हेतु पारम्परिक उपकरणों के स्थान पर एल.ई.डी. का उपयोग एवं परिसर को ग्रीन कैम्पस में परिवर्तन करना।

➢ महायोगी गुरु गोरखनाथ चिकित्सालय, श्रीगोरक्षनाथ मंदिर, गोरखपुर एवं एन.एस.एस. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा Blood Bank के लिए MOU पर हस्ताक्षर।

➢ **एन.एस.एस. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा 05 गांवों को गोद लिया गया जिसमें गांवों के शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता सम्बन्धी जानकारियों से विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों द्वारा रूबरू कराया गया।**

➢ **कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उ.प्र. के सदेच्छानुसार दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के कुलपति,**

अभिरक्षकगण, संकायाध्यक्षगण, अधिष्ठाता, छात्र-कल्याण, मानद ग्रन्थालयी, समन्वयक-रूसा, समन्वयक-एन.एस.एस., कुलसचिव, परीक्षा नियंत्रक, लेखाधिकारी आदि द्वारा कुल 15 क्षयरोगियों को गोद लिया गया।

- IVRI, B.R.D. Medical College, Gorakhpur बायोटेक्नोलाजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के बीच शोध के लिए MOU पर हस्ताक्षर।
- NBRI, Lucknow एवं वनस्पति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के बीच शोध के लिए MOU पर हस्ताक्षर।
- रू. 74.40 लाख से रोवर्स एवं रेंजर्स के भवन का निर्माण विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में शुरू।

उत्कृष्ट समाजोपयोगी शोध कार्य

- भौतिकी विभाग- 16.4% दक्षता का 4 cm^2 का सिलिकन आधारित सोलर सेल का निर्माण व सफलतापूर्वक परीक्षण। टनल डायोड का सफलतापूर्वक निर्माण। टनल डायोड आधारित टेंडम सोलर सेल का निर्माण कार्य जारी।
- रसायन विज्ञान विभाग- ल्यूमिनिसेन्ट पदार्थ, जिसका उपयोग एम.आर.आई. एजेन्ट के रूप में, फोटोवोल्टाइल डिवाइसेज, LED वल्ब बनाने में तथा सेल इमेजिंग में किया जा सकता है।
- प्राणि विज्ञान विभाग- पशुओं में वेक्टर जनित बीमारी (फैसियोलायसिस), जैविक खाद-वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन तथा प्रयोग, कीट प्रबन्धन, जैविक कीटनाशकों का उत्पादन एवं प्रयोग, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन।
- जैव प्रौद्योगिकी विभाग- सूक्ष्म जीवाणु, बायोटिक रेजिस्टेन्ट, जीन आइसोलेशन।
- मूट कोर्ट- दिल्ली में एक मूटकोर्ट का आयोजन इण्डियन सोसाईटी ऑफ इण्टरनेशनल लॉ द्वारा दिनांक 19 से 22 सितम्बर, 2019 तक आयोजित हुआ है, जिसमें विधि के छात्र विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किए हैं।
- भूगोल विभाग- भूगोल विभाग द्वारा रिमोट सेंसिंग और Geographical Information System (GIS) 2007 से उपयोग में लाया जा रहा है।
- प्रधानमंत्री जी स्लोगन "I am fit India fit" के अन्तर्गत विद्यार्थियों के स्वास्थ्य सुधार से संबंधित योजनाएं संचालित की गई हैं।
- विश्वविद्यालय का NAAC से मूल्यांकन कराये जाने के क्रम में आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC) की वार्षिक रिपोर्ट AQAR अद्यतन NAAC को ऑन-लाइन प्रेषित की जा चुकी है। विश्वविद्यालय की Self Study Report (SSR) तैयार है।
- विश्वविद्यालय में अवस्थापना सुविधाओं को संबर्धित करने हेतु रूसा में आवंटित धनराशि लगभग रू. 15 करोड़ में से 80 प्रतिशत का उपभोग किया चुका है।

विश्वविद्यालय द्वारा भविष्यलक्षी निम्नलिखित लक्ष्य हासिल करने की योजना है-

- शासन में **लम्बित** Faculty of Engineering and Technology के स्थापना हेतु प्रयास करना।
- Agriculture Faculty की स्थापना हेतु **शासन से भूमि हेतु** प्रयास करना।
- विज्ञान संकाय में Nano Science and Technology Centre की **स्थापना के लिए अनुदान हेतु उत्तर प्रदेश शासन से** प्रयास करना।
- चार वर्षीय इंटीग्रेटेड बी.ए.-बी.एड्. कोर्स संचालित करने हेतु योजना प्रस्तावित।
- शासन से **वेतन मद में रू. 58 करोड़ की अतिरिक्त अनुदान की मांग** प्रेषित की गयी है।
- वित्तीय वर्ष 2019-20 में **गैर वेतन मद में प्रावधानित धनराशि** (चार पुरुष छात्रावास हेतु - रू. 596.67 लाख, नया निर्माण कार्य कर्मचारी/शिक्षकों के आवास हेतु रू. 734.12 लाख एवं विश्वविद्यालय में सड़क मरम्मत हेतु रू. 128.34 लाख) **कुल रू. 1459.13 लाख की मांग प्रस्तुत** की गयी।

असहयोग आन्दोलन के 100 वर्ष

(विश्व को फिर से आवश्यकता एक अहिंसक वैचारिक क्रांति की)

डॉ. अजय कुमार सिंह

इतिहास की हर घटना की शताब्दी आती है और उसे सौ साल पुराना बनाकर चली जाती है, फिर लौटता है नए रूप व संदर्भ में। गांधी जी के सत्य के साथ किए गए अनेक प्रयोगों में एक- सत्य का आग्रह, उनकी 'महात्मा' की संज्ञा को सही तौर पर परिभाषित करता है। सत्य के प्रयोग की शुरुआत तो गांधी जी ने स्वयं के परिमार्जन से की, लेकिन यही वह सत्य है जिसके समक्ष हिंसक, आक्रामक और उपनिवेशवादी ताकतवर ब्रिटिश साम्राज्य बौना सिद्ध हुआ और ठीक एक शताब्दी पूर्व इस नए प्रयोग की साक्षी बनी-हमारी अतुल्य विरासत से परिपूर्ण 'अहिंसा'। सम्पूर्ण विश्व अवाक् था- एक अहिंसक वैचारिक क्रांति के स्फुटन से। जहां संघर्ष और सृजन, दोनों के एक साथ होने की अद्‌भुत क्षमता ने मुझे हमेशा से आकर्षित किया है।

100 वर्ष पहले गांधीजी असहयोग आन्दोलन से अपने राजनीतिक सफर की शुरूआत की थी। गांधीजी ने न सिर्फ एक रास्ता दिखाया, बल्कि पूरे देश को ये एहसास कराया कि शांतिपूर्ण सत्याग्रह की क्या शक्ति होती है। हमारा देश का इतिहास वृहद, व्यापक एक ऐसा इतिहास, जो नये रूप और संदर्भों में बार-बार लौटता है और हमें मजबूर करता है कि हम अपनी आंखें खोलें और अपने राष्ट्र की गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा को पहचानें। इतिहास के कुछ पन्ने ऐसे होते हैं, कि वे जब भी आपको या आप उनको छूते हैं, खोलते हैं तो आपको कुछ नया बनाकर जाते हैं। इसे पारस स्पर्श कहते हैं, इतिहास का पारस स्पर्श। असहयोग आन्दोलन ऐसा ही पारस है। इसलिए बहुत आवश्यक है कि हम ऐसे ऐतिहासिक अवसरों को जानें, उनसे जुड़ें, हो सकें तो उन्हें जीने का प्रयास करें।

गांधी जी को न तो भोजपुरी आती थी न ही ठीक ठीक हिन्दी। हम इस साल असहयोग आन्दोलन का शताब्दी वर्ष मना रहे हैं। गांधी के हर कार्यक्रम, किताब और यात्राओं की शताब्दी, अर्धशताब्दी मन रही है, मनाई जा चुकी है। शायद हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि गांधी को क्यों याद करते हैं और गांधी होने का मतलब क्या है। गांधी होने का एक ही मतलब है- बिना हिंसा का सहारा लिये, बिना किसी से मदद की उम्मीद किये, अपने वक्त की सबसे ताकतवर संस्था और व्यक्ति के सामने तन कर खड़े हो जाना। असहयोग आन्दोलन के सौ वर्ष ये ऐसा कालखंड है, जो हम 20वीं सदी के गांधी को 21वीं सदी में जीने का, आधुनिक रूप-रंग के साथ जीने का, नई सोच के साथ जीने का, नये संकल्प के साथ जीने का, नई उम्मीदों को जगाने के लिए जीने का एक नया अवसर के रूप में ले करके चलने का।

असहयोग आन्दोलन के 100 साल पूरे होने पर होने वाले कार्यक्रम सिर्फ औपचारिकता नहीं होंगे। ये हमारे लिए एक पवित्र अवसर है। बापू के आदर्शों से प्रेरित होकर देश-हित के लिए खुद को संकल्पित करने का, समर्पित करने का। हमें अब महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि के साथ-साथ कार्यांजलि भी अर्पित करनी है। अपने कार्यों को उन्हें अर्पित करना है। गांधीजी कहते थे, ''मेरा जीवन ही मेरा दर्शन है।'' और यही हमने असहयोग आन्दोलन में देखा है। गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि कैसे लोगों को अपनी शक्ति का एहसास हुआ और ये भी समय आया कि परिवर्तन हो सकता है, बदलाव हो सकता है।

सीनियर एकेडमिक फेलो, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (भारत सरकार), नई दिल्ली

यानि ऐसी स्थिति जब लोग ये मानने लगें कि कुछ हो ही नहीं सकता, कुछ परिवर्तन आ ही नहीं सकता, उसे गांधी जी ने लोगों का भ्रम कहा है। इस भ्रम को उन्होंने तोड़ा, और लोगों को अपनी शक्ति का एहसास कराया। असहयोग आन्दोलन से जो कुछ भी मंथन हुआ, जो प्रयास हुए, उसमें से हमें पंचामृत मिला। जन-सामान्य को जोड़ करके, मंथन करके, कार्य करके, संघर्ष करके इस पंचामृत से देश के स्वतंत्रता आंदोलन को नई धार मिली। अगर हम बारीकी से देखें तो पाएंगे कि असहयोग आन्दोलन में गांधीजी ने जो कुछ किया, उससे पांच अलग-अलग अमृत देश के समक्ष प्रस्तुत हुए। ये पंचामृत आज भी देश के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है-

पहला अमृत : सत्याग्रह की ताकत से लोग परिचित हुए,

दूसरा अमृत : जनशक्ति की ताकत से लोग परिचित हुए,

तीसरा अमृत : स्वच्छता और शिक्षा को लेकर भारतीय जनमानस में नई जागृति आई,

चौथा अमृत : महिलाओं की स्थिति सुधारने का प्रयास हुआ,

और पांचवां अमृत : अपने हाथों से काते गए वस्त्र पहनने की सोच पैदा हुई। ये पंचामृत असहयोग आन्दोलन का सार हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का मात्र एक ही उद्देश्य था भारत की अंग्रेजी दासता से मुक्ति। परन्तु इस स्वतंत्रता संघर्ष में हमें कई विचारधाराएँ दिखती हैं। एक वर्ग अहिंसक और संवैधानिक परिवर्तनों के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने के पक्ष में था तो दूसरा वर्ग क्रांति के माध्यम से भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में था। लेकिन कई अवसरों पर दोनों वर्ग उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक होकर आन्दोलनरत हो जाते थे। 1920 के असहयोग आन्दोलन, 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन एवं 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय सभी वर्ग के लोगों ने आपसी मतभेदों को छोड़कर, एक होकर संघर्ष किया। 1920 के असहयोग आन्दोलन में क्रांतिकारी विचारधारा के लोगों को गांधी जी का यह नारा आकर्षक लगा कि एक वर्ष में स्वराज मिल जायेगा। सभी क्रांतिकारियों ने गांधी जी के नेतृत्व को स्वीकार कर लिया परन्तु शीघ्र ही उनका मोह भंग हो और पुन: क्रांति के रास्ते पर लौट आये इसी का परिणाम चौरी-चौरा की घटना थी।

1920 में गांधी जी द्वारा शुरू किये गये असहयोग आन्दोलन तथा उनके द्वारा दिये गये यह आश्वासन कि एक वर्ष के अन्दर स्वराज मिल जायेगा। क्रांति की भावना से प्रेरित युवा वर्ग असहयोग आन्दोलन में शामिल हुआ था। परन्तु आन्दोलन के लम्बे खींचने तथा गांधी जी द्वारा अहिंसा की बात करने से युवा वर्ग सोचने लगा था कि गांधी जी भिक्षावृत्ति की राजनीति की तरफ मुड़ रहे हैं। असहयोग आन्दोलन के दौरान 8 फरवरी 1921 को गांधी जी गोरखपुर में आये थे। गोरखपुर के बालेमियां मैदान में विशाल जनसमूह उनकी बातों को सुनने के लिए आया था। गांधी जी को सुनने के बाद सभी वर्गों में अलग-अलग प्रतिक्रिया हुई थी। इसी से प्रभावित होकर प्रेमचन्द्र और रघुपति सहायक 'फिराक' राष्ट्रीय आन्दोलन की तरफ आकर्शित हुए थे। असहयोग आंदोलन में गोरखपुर के क्षेत्र में आंदोलन को गति प्रदान करने वाले प्रमुख नेताओं में भगवती प्रसाद दूबे, ठाकुर प्रसाद, स्वामी सच्चिदानन्द, मुहम्मद फारुक साहब, अनवर अली, दशरथ प्रसाद द्विवेदी, शाकिर अली, बाबा राघवदास, विध्यवासिनी वर्मा, बाबू त्रिवेणी सहाय, विन्ध्यवासिनी प्रसाद श्रीवास्तव, बाबू नरसिंह दास, मौलवी सुभानउल्लाह, प्रभात कुसुम बनर्जी तथा डॉ. विश्वनाथ मुखर्जी थे। मूलत: महाराष्ट्र के निवासी बाबा राघव दास बरहज नामक स्थान को अपनी कर्मस्थली बनाकर आंदोलन को संचालित किया। बाबा राघवदास आंदोलन में इतने समर्पित थे कि उन्हें पूर्वी उत्तर प्रदेश का गांधी कहा जाने लगा था।

1921 के अन्त में और 1922 के प्रारम्भ में संयुक्त प्रान्त में असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ करने की जिम्मेदारी मोती लाल नेहरू को सौपी गयी थी, इसके लिए गोरखपुर में सहजनवां और चौरी चौरा का क्षेत्र चुना गया था। परन्तु दो वर्ष बीत जाने के कोई परिणाम आता न देखकर युवा

वर्ग अपना धैर्य खो रहा था इसी का परिणाम था चौरी-चौरा का गदर। चौरी-चौरा के इस घटना को गांधी जी ने भले ही अपराध घोषित कर दिया तथा कांग्रेस ने पल्ला झाड़ लिया परन्तु इन शहीदों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उन्होंने 9 फरवरी 1922 को बम्बई से तार भेजकर देवदास गांधी को गोरखपुर में चौरी चौरा काण्ड की पूरी जानकारी भेजने को कहा, देवदास गांधी ने 11 फरवरी को ही पूरी जानकारी दी थी 16 फरवरी 1922 को यंग इण्डिया में ''चौरी चौरा का अपराध'' शीर्षक से एक लेख भी लिखा। इसी घटना का परिणाम था कि युवाओं का एक वर्ग गांधीवादी आन्दोलन से अलग होकर क्रांति के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने की सोची।

ऐसा लगता है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश का वह वर्ग जो असहयोग आंदोलन की नीतियों से दबा था अब निकल कर एक नये उद्देश्य के साथ आजादी के लिये आगे बढ़ चला। इसी वर्ग में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल जैसे नेता थे। गोरखपुर परिक्षेत्र में हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय कार्यकर्ताओं में श्री विद्याधार शाही, बैजनाथ सिंह, हृदय नरायण लाल, रामकृष्ण दूबे, बालकृष्ण शर्मा, रमाशंकर सिंह, पंडित अवधराज त्रिपाठी और लक्ष्मी नरायण पाण्डेय थे। चौरी चौरा की घटना के बाद सम्पूर्ण देश में अंग्रेजों की हिंसात्मक गतिविधियां भी प्रारम्भ हुयी, फिर भी इस घटना के बाद पूर्वी उत्तर प्रदेश में अनेक राजनीतिक सम्मेलन और सभायें हुयी इसमें बाबा राघव दास की महत्वपूर्ण भूमिका रही, यही कारण था कि इस घटना के बाद भी अंग्रेजों के अत्याचार उनके अमानवीय कृत्य इस क्षेत्र के क्रांतिकारियों का मनोबल नहीं गिरा सके, जिसका प्रथम आगामी आन्दोलनों में और अधिक उत्साह के साथ हर वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका दिखायी दिया।

चौरीचौरा में जो कुछ भी घटित हुआ वह पूर्व नियोजित नहीं था और इस तरह की कार्यवाही हेतु तत्कालीन कांग्रेसी नेतृत्व ने कोई दिशा निर्देश जारी नहीं किया था किंतु यह भी सत्य है कि आंदोलनकारियों में अनेकानेक कांग्रेसी कार्यकर्ता थे और तत्कालीन पुलिस की उकसावे की कार्यवाही एवं जलियांवाला बाग जैसी घटना से भयग्रस्त लोगों ने पुलिस की बर्बर कार्यवाही से पहले ही गुस्से में आत्मरक्षा हेतु पुलिस थाने को फूंक दिया। जनता के तत्कालीन आत्म रक्षार्थ कार्यवाही की स्थानीय कांग्रेसी नेताओं ने गांधी जी को गलत तरीके से रिपोर्ट भेजी और उस समय अहिंसा के पुजारी गांधी ने असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। चौरीचौरा की इस घटना की महत्ता का यथोचित विश्लेषण न करते हुए कांग्रेस ने गांधीजी को ढाल बनाते हुए अपना पल्ला झाड़ने की कोशिश की और इसमें अभियुक्त बनाए गए लोगों की किसी प्रकार से सहायता करने से भी इनकार कर दिया। यद्यपि मदन मोहन मालवीय जैसे लोगों ने व्यक्तिगत रूप से अवश्य अभियुक्त बनाए गए लोगों की सहायता की। आगे चलकर इतिहासकारों के एक वर्ग ने इस घटना के साथ अन्याय करते हुए इसे एक दुर्घटना के रूप में प्रस्तुत किया जबकि 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान इसी घटना की सैकड़ों बार पुनरावृत्ति पूरे देश में की गई तो उसे उचित ठहराया क्योंकि इससे कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्व स्वीकृति प्राप्त हो चुकी थी। मुद्दा यह है कि क्या किसी आंदोलन अथवा घटना का मूल्यांकन कांग्रेस की पूर्वस्वीकृति के आधार पर किया जाना चाहिए अथवा उसमें शामिल लोगों की भावनाओं, मनोदशाओं, उद्देश्यों एवं तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर किया जाना चाहिए। इतिहासकारों ने अपनी कांग्रेस केंद्रित मानसिकता के तहत भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, वीर सावरकर, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे अनेकानेक वीर बलिदानियों की छवि को धूमिल करते हुए उन्हें अपमानित करने का प्रयास किया। चौरीचौरा की घटना के पश्चात फांसी, काले पानी एवं जेल की सजा पाए पूर्वांचल की धरती के वीर सपूतों के साथ भी ऐसा ही अन्याय किया गया। आवश्यकता इस बात की है कि कांग्रेसी रणनीति से हटकर कार्य करने वाले इन वीर बलिदानों को भी उचित सम्मान प्राप्त कर उन्हें इतिहास में उनका हक प्रदान किया जाए।

Work Cited

* MAHATMA (In 8 Volumes) By: D. G. Tendulkar (First Edition : January 1954) [The Publications Division, govt. of India, New Delhi]

* MAHATMA GANDHI -(In 10 Volumes) {*The Early Phase* to *Last Phase*} - By Pyarelal & Sushila Nayar, Navajivan Publishing House, Ahmedabad इस दूसरे महाग्रंथ के अंतिम खण्ड (स्रेंज चैंम) का चार खण्डों में हिन्दी अनुवाद महात्मा गांधी : पूर्णाहुति नाम से प्रकाशित है।

* महात्मा गाँधी के संचित लेख, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सुचना एवम प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1994

* लुईस फिशर, द एसेनसियल गांधी : उनके जीवन, कार्यों और विचारों का संग्रह, न्यूयार्क, 2002

* रोमां रोलां, महात्मा गांधी: जीवन और दर्शन, साहित्य अकादमी, लोकभारती प्रकाशन द्वारा प्रकाशित, नई दिल्ली, 2008

गोरखपुर नगर निगम का इतिहास

सुबोध कुमार मिश्रा

गोरखपुर नगर चार ऐतिहासिक कालखंड प्राचीन काल, मध्यकाल, ब्रिटिश काल एवं स्वाधीनता के पश्चात् युग विकास की प्रक्रिया से गुजरते हुए अपने वर्तमान स्वरूप तक पहुंचा है। यह उत्तर में झुंगिया यानी मेडिकल कॉलेज, भारतीय उर्वरक निगम और मोहरीपुर के पास से दक्षिण में रामगढ़ ताल तक फैला हुआ है। पूरब में खोराबार से लेकर पश्चिम में राप्ती नदी के तट तक विकसित है। ब्रिटिश शासन के पूर्व गोरखपुर जिला अवध के नवाबों के राज्य का हिस्सा था। नवाब द्वारा नियुक्त राजस्व संग्रहकर्ता को 'आमिल' कहा जाता था। ऐसी शिकायतें आम थी कि 'आमिल' राजस्व वसूली के लिए प्राय: प्रजा पर जुल्म ढाया करते थे। इनसे तंग आकर इस जिले की आबादी का एक बड़ा हिस्सा पड़ोसी देश नेपाल और सीमावर्ती राज्य बिहार में पलायन कर गया। 10 नवंबर 1801 को अवध के वजीर सआदत अली खान ने गोरखपुर जिला, लार्ड वेलेजली को क्षतिपूर्ति के रूप में एक संधि के तहत ऋणों की अदायगी के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के हवाले कर दिया। इस तरह गोरखपुर अंग्रेजों के शासन में आ गया। तत्कालीन गोरखपुर में देवरिया, बस्ती सम्मिलित थे तथा गोंडा जिला बहराइच की तहसील थी। इस प्रकार यह विस्तृत भूखंड ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभुत्व में हो गया।

गोरखपुर क्षेत्र की विशाल श्रम संपदा देखकर अंग्रेजी शासन ने यहां एक लेबर डिपो की स्थापना की और इसी लेबर डिपो पर पूर्वी उत्तर प्रदेश के श्रमिकों को अंग्रेजों ने गिरमिटिया मजदूर के रूप में भर्ती करके भेजने का काम किया। ब्रिटिश गुयाना, सूरीनाम, फिजी, मारीशस इत्यादि उपनिवेश में यहां से श्रमिकों को अंग्रेजों ने गन्ने के खेतों में भेजा। कोयला, लोहा, अभ्रक की खानों में काम करने के लिए भी यहां से लेबर की भर्ती होती थी। 1857 महाविद्रोह के दमन के उपरांत अंग्रेजों ने प्रशासनिक दृष्टि से गोरखपुर को पुन: व्यवस्थित करना शुरू किया और गोरखपुर जिले से 2600 वर्ग मील क्षेत्र अलग करके जिले के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र में बस्ती नामक जिले का गठन किया गया। 7 सितंबर 1869 को गोरखपुर शहर में नगर निकाय का गठन किया गया लेकिन इसमें निर्वाचित सदस्यों की व्यवस्था नहीं थी। 1873 ईस्वी में शहर का पुर्नसीमांकन किया गया और निर्वाचित सदस्यों की परंपरा का प्रारंभ हुआ। इसके अंतर्गत 20 सदस्य म्युनिसिपल बोर्ड की व्यवस्था की गई जिसमें 15 सदस्य निर्वाचित तथा 5 सदस्य शासन द्वारा नामित होते थे। इन 20 सदस्यों के अतिरिक्त एक निर्वाचित सभापति (चेयरमैन) तथा एक वेतनभोगी सचिव भी बोर्ड में होता था।

ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रारंभिक काल में गोरखपुर में पांच तहसीले थी। सदर हवेली, सलेमपुर, बांसी, भौवापार तथा पडरौना। 1818 में तिलपुर व विनायकपुर को मिलाकर महाराजगंज तहसील बनी। 1840 में भौवापार के स्थान पर बांसगांव तथा 1902 में सलेमपुर के स्थान पर देवरिया तहसील बनी। 1865 में बस्ती और बढ़यापार को मिलाकर बस्ती जिला घोषित हुआ। वेंटिंग ने प्रथम बंदोबस्त कराया, केनिंग ने पोस्ट ऑफिस तथा डफरिन ने हॉस्पीटल स्थापित किया। 1884 में रेलवे स्टेशन तथा 1899 में टाउन हॉल का निर्माण हुआ। पालिका अंग्रेजी म्यूनिसपैलिटी का हिंदी रूपांतर है। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के म्युनिसिपल से हैं जिसका अर्थ स्वशासित नगर से है। एक निश्चित आबादी तथा आय पर कर लेने पर इसे महापालिका की संज्ञा दी जाती है। भारत में ऐसा शासन मेयो की देन है। लिटन ने इसी आधार पर जिला परिषद तथा नगर परिषद का गठन किया था। जिलाधीश दोनों परिषदों का चेयरमैन होता था।

सदस्य, गोरखपुर नगर निगम इतिहास लेखन समिति

ए.ओ. ह्यूम के पहल पर रिपन ने तथा डफरिन ने पालिकाओं में भारतीयों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया। पालिका के समस्त अधिकार व कर्तव्य ईस्ट इंडिया कंपनी में निहित थे।

15 जून 1916 में तत्कालीन गवर्नर जनरल द्वारा उत्तर प्रदेश म्युनिसिपल एक्ट अनुमोदित किया गया। 1910 में गोरखपुर पालिका के प्रथम अध्यक्ष मोहम्मद खलील थे। उस समय यह पालिका श्रेणी 3 थी जिसका कार्यालय रीड साहब धर्मशाला के समीप स्थित पशु चिकित्सालय भवन में था। इस पालिका का क्षेत्र 24 वर्ग किलोमीटर था। 1929 में नगर के उत्तर एक अतिरिक्त पालिका का गठन हुआ जिसका क्षेत्र 12 वर्ग किमी था। इसका कार्यालय गांधी आश्रम के पीछे वर्तमान मुख्य नगर अधिकारी आवास में था। उस काल मे महेवा छोटा प्लाट तथा बड़ा प्लाट, बिलंदपुर खत्ता, हुमायूंपुर खत्ता, रामलीला मैदान में मैला को दफन करने व काश्तकारी करने हेतु किए गए नीलाम से प्राप्त आय, नार्मल तिराहा, विष्णु मंदिर के समीप, पैडलेगंज, तोपखाना चौराहा आदि स्थलों पर टैक्सी स्टैंडों की नीलामी से आय, नगर के सब्जी बाजारों की नीलामी से आय, साईकिल, रिक्शा ठेला के लाइसेंस से आय, हैकनी कैरेज एक्ट के अंतर्गत निर्धारित भैंस गाड़ियों से लाइसेंस फीस से आय, फेरिज एक्ट के अंतर्गत घाटों की नीलामी से आय, केटिस ट्रेस पास एक्ट के अंतर्गत मवेशी खानों से आय, कूड़ा बिक्री तथा नगर में विक्रय हेतु आने वाली सामग्री पर चुंगी से आय मुख्य स्रोत थे जो नगर के विकास व प्रबंध के लिए बिल्कुल अपर्याप्त थे। विदेशी नियंत्रको, शासकों, बोर्ड द्वारा नगर के विकास एवं नागरिक सुविधाओं को उपलब्ध कराने की दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किया गया। 1949 में भारत के स्वतंत्रता के फलस्वरूप विदेशी ताकतों से मुक्ति मिलते ही बोर्ड को अवक्रमित कर नगर के सर्वांगीण विकास हेतु प्रथम चरण में हालसीगंज में आधुनिक व्यवसायिक प्रतिष्ठान तथा शिशुओं के मनोविनोद व प्रदूषण निवारण हेतु स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय बंधु सिंह की स्मृति में पार्क का निर्माण हुआ। वर्ष 1949 में नगर क्षेत्र 24 वर्ग किमी को विस्तारित कर 36 वर्ग किमी कर दिया गया। फलस्वरुप नगर के दक्षिणी क्षेत्र की नगर पालिका इसमें समाहित हो गई। व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के निर्माण की श्रृंखला में होम सिमसिम बाजार, लाल डिग्गी पार्क में दुकान, जलकर परिसर (गोलघर) में दुकान, टाउन हॉल पूर्वी गेट पर दुकानों का निर्माण कराया गया। नगर को पूर्ण रूप से विकसित कर नागरिकों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने की दृष्टि से 1949 में नगर पालिका को द्वितीय श्रेणी में तथा 1956 में नगरपालिका श्रेणी प्रथम के रूप में संगठित किया गया।

1956 में प्रथम श्रेणी नगरपालिका घोषित होने के पश्चात पहला चुनाव 1958 में हुआ। इस समय नगर 15 वार्ड में विभाजित था तथा 38 सदस्य होते थे। समाज के सभी वर्गों को प्रतिनिधित्व देने की व्यवस्था थी। अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति, महिला तथा स्वीपर की निर्णय में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए इन वर्गों का प्रतिनिधित्व अनिवार्य था। इन वर्गों के सदस्य चयनित न होने पर प्रदेश शासन द्वारा इन वर्गों के स्थानीय प्रतिनिधित्व को नामित करने का विधान था। प्रदेश शासन ने आय के स्रोतों में वृद्धि किए जाने में हो रहे व्यवधान को दूर करने के दृष्टि से 11 फरवरी 1969 को तत्कालीन निर्वाचित बोर्ड अवक्रमित कर दिया तथा वर्ष 1970 में भूमि भवन कर को समाप्त कर नगरपालिका को गृहकर, जलकर निर्धारण का संवैधानिक अधिकार दे दिया। इसके कारण 1 अप्रैल 1969 से भूमि भवन कर के निर्धारण हेतु आगणित वार्षिक किराया मूल्य का अधिग्रहण कर गृह कर, जल कर का निर्धारण एवं संग्रह प्रारंभ किया गया। जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण उत्तर प्रदेश शासन ने नगर के क्षेत्रफल 36 वर्ग किमी को विस्तारित कर 147 वर्गकिमी करते हुए 15 जून 1982 को नगर महापालिका के रूप में संगठित किया। सीमा विस्तार के फलस्वरूप 47 ग्राम नगर में सम्मिलित हुए। नगर को सुनियोजित ढंग से विकसित किए जाने की दृष्टि से 5 जनवरी 1977 को गोरखपुर विकास प्राधिकरण की स्थापना की गई। गोरखपुर महायोजना 13 मार्च 1980

से प्रभावी है।

सीमा विस्तार तथा नगर के स्तरोन्नयन के फलस्वरूप क्षेत्र की जनसंख्या के अनुरूप महानगर को 30 वार्ड में विभाजित किया गया तथा प्रत्येक वार्ड के लिए 2 सभासदों की संख्या निश्चित हुई। महापालिका के गठन के पश्चात जनवरी 1988 में चुनाव हुए। 74वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 की अपेक्षानुसार 30 मई 1994 को नगर महापालिका का स्वरूप परिवर्तित कर नगर निगम के रूप में अधिसूचित किए जाने के फलस्वरुप नगर निगम को स्थाई प्रबंध के समस्त संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुए। नगर निगम घोषित होने के पश्चात निर्वाचित निगम सभा ने संसाधनों का सृजन कर अपने अनिवार्य कर्तव्यों का प्रभावी निर्वहन किया है।

हम 2020 में प्रवेश कर रहे हैं और इसी के साथ अनेक नई चुनौतियां भी गोरखपुर नगर निगम के सामने होंगी। बढ़ती जनसंख्या का दबाव, कूड़ा प्रबंधन, सीवेज, पेयजल जैसे पारंपरिक समस्याओं के साथ नवीन समस्याएं भी जन्म लेंगी। गोरखपुर नगर का विकास तीव्र गति से हो रहा है। सुनियोजित विकास नगर निगम की प्रमुखता होगी। नगर विकास के इस दौर में सुनियोजित नगर विकास के लिए आधारभूत नगरीय सुविधाओं का होना अत्यंत आवश्यक है।

गोरखपुर नगर निगम का संक्षिप्त क्रमिक विकास

नगरपालिका श्रेणी-3

* क्षेत्रफल- 24 वर्ग किमी
* कार्यालय- रीड साहब धर्मशाला, समीप पशु चिकित्सालय भवन
* 7 सितंबर 1869 को जिलाधीश की अध्यक्षता में पालिका समिति का गठन
* 1910 में पालिका समिति का प्रथम चुनाव संपन्न
* प्रथम अध्यक्ष- मोहम्मद खलील, कार्यकाल (1910-1916)
* दूसरा अध्यक्ष- मोहम्मद इस्माइल, कार्यकाल (1916-1932)
* तीसरा अध्यक्ष- श्री चारु चंद्र दास व श्री आर.एन. सान्याल, कार्यकाल (1932-1941)

पालिका श्रेणी-3 (अतिरिक्त) 1929

* क्षेत्रफल-12 कि.मी.
* कार्यालय- गांधी आश्रम, गोलघर के समीप वर्तमान नगर आयुक्त आवास

पालिका श्रेणी-2 1949

* क्षेत्रफल-36 वर्ग कि.मी.
  (दोनों नगरपालिका 24 वर्ग कि.मी. तथा 12 वर्ग कि. मी. को सम्मिलित कर)।
* कार्यालय- गांधी आश्रम गोलघर के समीप वर्तमान नगर आयुक्त आवास
* अध्यक्ष श्री अद्या प्रसाद श्रीवास्तव, कार्यकाल (1941-1948)
* अध्यक्ष श्री लक्ष्मी शंकर वर्मा, कार्यकाल (1952-1956)

नगर पालिका श्रेणी-1

क्षेत्रफल-36 वर्ग कि.मी.

* अध्यक्ष चौधरी श्री राम लखन चन्द, कार्यकाल (1958-1963)
* अध्यक्ष लक्ष्मी शंकर खरे, कार्यकाल (1964-1966)
* अध्यक्ष श्री शंभू शरण श्रीवास्तव, कार्यकाल (1967)
* अध्यक्ष डॉ. के.एन. लहरी, कार्यकाल (1968)
* अध्यक्ष श्री अवधेश कुमार, कार्यकाल (1968-11 फरवरी 1969)

नगर पालिका श्रेणी-

* जून 1982
* क्षेत्रफल - 147.5 वर्ग कि.मी.
* नगर प्रमुख- श्री पवन बथवाल, कार्यकाल (12.2.1988-22.2.1993)

नगर निगम 30 मई 1994 कुल वार्ड संख्या-70

क्षेत्रफल 147.5 वर्ग कि.मी

* नगर प्रमुख श्री राजेंद्र शर्मा, कार्यकाल (30.11.1995-30.11.2000)
* नगर प्रमुख अमरनाथ उर्फ आशा देवी, कार्यकाल (30.11.2000-21.11.2002),
* महापौर अमरनाथ उर्फ आशा देवी कार्यकाल (21.11.2002-29.11.2005),

  (23.12.2005-5.1.2006)
* महापौर श्रीमती अंजू चौधरी, कार्यकाल (17.11.2006-15.7.2012)
* महापौर डॉ. सत्या पाण्डेय, कार्यकाल (16.7.2012-7.8.2017)
* महापौर श्री सीताराम जायसवाल, कार्यकाल (12.12.2017 से अबतक)

Work cited

- Gorakhpur District Gazetteer, 1978, chapter-I, II, X,XI, XIV, XV
- District Gazeteer of the United Provinces of Agra and Oudh, H.R.Nevill, Vol-31, Allahabad, 1909, Chapter-I, III, IV, V
- Imperial Gazetteer of India V.12
- District Gazettreer under revision, A.W. Cruickshank,1881
- Settlement Report 1891

आध्यात्मिक चेतना के अमूल्य धरोहर हैं : कल्याणांक

रामप्यारे मिश्र

पुण्यसलिला अचिरावती के तट पर रची-बसी गोरखपुर नगरी का नामकरण श्री महागुरु गोरक्षनाथ के नाम पर रखा गया। इस आध्यात्मिक नगरी में सन् 1923 में सत्य एवं शान्ति हेतु मानव मात्र के कल्याण के लिए गीताप्रेस की स्थापना हुई। गीताप्रेस के संस्थापक ब्रह्मलीन श्रद्धेय श्री जयदयाल गोयन्दका (सेठ जी) के जीवन का व्रत था - गीता का प्रसार। उनका अभिमत था कि गीता से जो प्रकाश मिलता है वह जन-मन को प्राप्त हो। इसी उद्देश्य की कामना हेतु गीता प्रेस की स्थापना विक्रम संवत् 1980 (सन् 1923 ई.) के मई के महीने में हुई। गीताप्रेस का संचालन संस्था के ट्रस्ट-बोर्ड के द्वारा नियंत्रित होता है।

तपोवन के उपवन के रूप में गीताप्रेस का मूल उद्देश्य सस्ते मूल्य पर सद्ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार रहा है। यह संस्था किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग लिये बिना सद्ग्रन्थों का प्रकाशन कर लोकोपयोगी कार्य को करती है। गीताप्रेस द्वारा विभिन्न भाषाओं यथा - संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, तेलगु, बँगला, ओड़िया, तमिल, कन्नड़, अंग्रेजी तथा नेपाली आदि में प्रकाशित किया जाता है।

यही नहीं 'कल्याण', 'युग-कल्याण' एवं 'कल्याण कल्पतरु' का प्रकाशन गीताप्रेस द्वारा किया जाता रहा है। अबतक कल्याण की 16,16,61,612 प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। संस्थापक श्री जयदयाल गोयन्दकाख आदि सम्पादक नित्यलीलालीन भाई जी श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार, वर्तमान सम्पादक श्री राधेश्याम खेमका, सह सम्पादक डॉ. प्रेमप्रकाश लक्कड़ ने कल्याण के अंकों का प्रकाशन कर भक्ति रस की ऐसी त्रिपथगा गंगा बहायी जिसमें मज्जन, पान एवं स्नान कर मरणधर्मा प्राणी चाहे समानधर्मा हो या एकधर्म अमरत्व का अनुभव करने लगता है।

'कल्याण' शब्द का अभिधार्थ है - आनन्ददायक, सुखकर, सौभाग्यशाली, भगवान्, सुन्दर, रुचिकर, मनोहर, श्रेष्ठ, गौरवयुक्त शुभ, शिव, श्रेयस्कर, मंगलप्रद, लाभदायक एवं हितकर। अनेक अभिधानों या नामों से जाना जाने वाला 'कल्याण' शब्द प्राचीन भारतीय वाङ्मय में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। इसी कारण कल्याण के सम्पादकों ने इस नाम का चयन कर मान-हितों कीबात सोची तदनन्तर इसका नामकरण 'कल्याण' रखा गया।

मन्त्रद्रष्टा ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों, साधकों, चिन्तकों, यतियों, दार्शनिकों, योगियों, तत्त्व चिंतकों एवं ब्रह्मवादियों तथा श्रेष्ठ महापुरुषों ने अपनी दिव्य दृष्टि से परमपिता की आज्ञानुसार शुभकार्य करते हुए अन्त में परमात्म की प्राप्ति कर लेने को ही परम कल्याण माना है। इसी को ब्रह्मवेत्ता महापुरुष मोक्ष कहते हैं। हिन्दू जीवन दर्शन का परम लक्ष्य सद्गति अथवा मुक्ति की प्राप्ति ही रहा है। इसी उद्देश्य की कामना हेतु कल्याण के मनीषियों द्वारा 'कल्याण' का उद्भव हुआ जो देश एवं विदेश में लोकप्रिय रहा।

'कल्याण' जगती का हार और शृंगार ही नहीं है प्रत्युत कल्याण की कल्पवल्ली और मांगल्य की मधुमय अभिव्यक्ति है। 'कल्याण' व्यवहार की सम्पादिका है तथा अध्यात्म की आह्वान कर्ती भी है। 'कल्याण' प्राणियों के हृदय को आकर्षित करने की क्षमता रखती है तथा साथ ही साथ उसका परम शाश्वत मंगल-साधन करती है।

'कल्याण' मनोहर होते हुए भी जगत् की मंगल साधिका है। मनोहरता तथा मंगल-सम्पन्नता का जहाँ योग होता है वही 'कल्याण' का अपना रूप है। अपने रमणीय रूप की सम्पत्ति से सम्पन्न कल्याण में जितना मधुरिमा का भार रहता है उतना ही अपने समग्र मानव जाति के शाश्वत

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

कल्याण की कामना मूर्तिमती बनकर हमें पद-पद पर आश्वासन, आवर्जन तथा आह्लादन किया करती है। कल्याण द्वारा प्रदत्त जीवन तथा रूप मंगल एवं माधुर्य का अनुपम सम्मिलन है।

'कल्याण' भारतीय संस्कृति का एक सुन्दर सन्देश वाहक बनकर अपने भव्य रूप की सम्पत्ति से सम्पन्न है। आध्यात्मिकता की छाप उसके ऊपर इतनी है कि इसके चिन्तन-मनन से पाठक को आनन्दानुभूति होने लगती है और उसका क्लान्त, श्रान्त मन एकाग्र होकर अपने आराध्य नायक में तल्लीन हो जाता है।

कल्याण के अद्यतन प्रकाशित अंको का विवरण निम्नवत है :

क्रम	अंक
1.	साधारण अंक
2.	भगवन्नामांक
3.	भक्तांक
4.	श्रीमद्भग्वद्गीतांक
5.	रामायणांक
6.	श्रीकृष्णांक
7.	ईश्वरांक
8.	शिवांक
9.	शक्ति-अंक
10.	योगांक
11.	वेदान्तांक
12.	संत-अंक
13.	मानसांक
14.	गीता-तत्त्वांक
15.	साधनांक
16.	भगवतांक
17.	संक्षिप्त महाभारतांक (दो खंडों में)
18.	संक्षिप्त वाल्मीकि-रामायणांक
19.	संक्षिप्त पद्म पुराणांक
20.	गो-अंक
21.	संक्षिप्त मार्कण्डेय ब्रह्मपुराणांक
22.	नारी-अंक
23.	उपनिषद् अंक
24.	हिंदू-संस्कृति-अंक
25.	संक्षिप्त स्कंदपुराणांक
26.	भक्त-चरितांक
27.	बालक-अंक
28.	संक्षिप्त नारद विष्णुपुराणांक
29.	संतवाणी-अंक
30.	सत्कथा-अंक
31.	तीर्थांक
32.	भक्ति-अंक
33.	मानवता-अंक
34.	संक्षिप्त देवीभागवतांक
35.	संक्षिप्त योगवासिष्ठ-अंक
36.	संक्षिप्त शिवपुराणांक
37.	संक्षिप्त ब्रह्मवैवर्त्तपुराणांक
38.	श्रीकृष्ण-वचनामृतांक
39.	श्री भगवन्नाम-महिमा और प्रार्थनांक
40.	धर्मांक
41.	श्री रामवचनामृतांक
42.	उपासना-अंक
43.	परलोक और पुनर्जन्मांक
44.	अग्निपुराण गर्ग-संहिता अंक
45.	अग्निपुराण गर्ग-संहिता नरसिंहपुराणांक
46.	श्रीरामांक
47.	श्रीविष्णु-अंक
48.	श्रीगणेश-अंक
49.	हनुमान-अंक
50.	श्रीभगवत्कृपा-अंक
51.	श्रीवाराहपुराणांक
52.	सदाचार-अंक
53.	सूर्यांक

54. निष्काम कर्मयोगांक
55. भगवत्तत्त्वांक
56. श्रीवामन-पुराणांक
57. चरित्र-निर्माणांक
58. मत्स्यपुराणांक (पूर्वार्द्ध)
59. मत्स्यपुराणांक (उत्तरार्द्ध)
60. संकीर्तनांक
61. शक्ति-उपासना-अंक
62. शिक्षांक
63. पुराणकथांक
64. देवतांक
65. योगतत्त्वांक
66. संक्षिप्त भविष्य-पुराणांक
67. शिवोपासनांक
68. श्रीरामभक्ति-अंक
69. गोसेवा-अंक
70. धर्मशास्त्रांक
71. कूर्मपुराणांक
72. भगवल्लीला-अंक
73. वेद-कथांक
74. संक्षिप्त गरुड़पुराणांक
75. आरोग्यांक
76. नीतिसार-अंक
77. भगवत्प्रेम-अंक
78. व्रतपर्वोत्सव-अंक
79. देवीपुराण (महाभागवत) शक्तिपीठांक
80. संस्कार-अंक
81. अवतार-कथांक
82. श्रीमद्देवीभागवतांक (पूर्वार्द्ध)
83. श्रीमद्देवीभागवतांक (उत्तरार्द्ध)
84. जीवनचर्या अंक
85. दानमहिमा अंक
86. श्रीलिंगमहापुराणांक
87. भक्तमाल अंक
88. ज्योतिषतत्त्वांक
89. सेवा अंक
90. गंगा अंक
91. श्रीशिवमहापुराणांक (पूर्वार्द्ध)
92. श्रीशिवमहापुराणांक (उत्तरार्द्ध)
93. श्रीराधामाधव-अंक

इन अंकों में अनेक ऐसे लोकप्रिय हुए जिनका पुनः प्रकाशन किया गया जो गीताप्रेस का अत्यन्त सराहनीय कार्य रहा है। इन अंकों के माध्यम से लोक हितकारी एवं लोकोपयोगी भारतीय आध्यात्मिक चेतना के स्वर मुखरित हुए।

'कल्याण' में प्रकाशित चित्र अत्यन्त मनोरम हैं। चित्र वह है जो चित्त को आकर्षित करे। कलाकारों द्वारा मनोहारी चित्रों को बनाकर जनमानस में उकरने का कार्य तथा देवता से सामीप्य स्थापित करने का एक अभिनव प्रयत्न भी श्लाघ्य है।

कल्याण अंकों में वैदिक वाङ्मय से लेकर अवान्तर काल के विभिन्न धर्मग्रन्थों में उल्लिखित धर्म-दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, कला-कौशल, योग, संगीत, शिल्प, मर्यादा, लोक-आचरण, संस्कार, वर्णाश्रम धर्म आदि अन्यान्य मानव जीवन के लौकिक एवं पारलौकिक उत्थान के लिए उपयोगी सभी सिद्धान्तों, मतों एवं उपदेशों का रोचक प्रेरक वर्णन उल्लिखित है। तदन्तर संहिता, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, उपनिषद्, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष आदि वेदांगों, महाकाव्यों एवं पौराणिक ग्रन्थों आदि का परिचयात्मक विवेचन तथा शिक्षाप्रद कथाओं का प्रतिपादन के साथ ही साथ मन्त्रद्रष्टा ऋषियों के जीवन-चरित्र के माध्यम से जीवनोपयोगी मूल्यों की स्थापना 'कल्याण' का मूल प्रतिपाय रहा है। राजनीति, नीति, दण्डनीति, गणित, प्रतिमा विज्ञान, स्थापत्य कला वेदों में सदाचार-मीमांसा, राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता आदि पर विद्वानों द्वारा लिखित लेखों के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि किस तरह समाज एवं सामाजिक परिवेश को नियंत्रित किया जा सकता है।

'कल्याण' के दानमहिमा अंक के माध्यम से दान, दान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है कि 'दानमेकं कलौ युगे' अर्थात् कलियुग में एकमात्र दान मनुष्य के कल्याण का साधन है। नित्यदान, नैमित्तिक दान एवं काम्य दान के फलों पर बड़ा सुन्दर प्रकाश डाला गया है और कहा गया है कि मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण दान है। उपनिषद् अंक में आत्मा, ब्रह्म, जीव, जगत, माया, अविद्या का सांगोपांग विवेचन करते हुए यह उल्लेख है कि आत्मा अकाट्य है, अच्छेद्य है, अजन्मा है, नित्य है, शाश्वत है, अणु से अणुतर है, महान से महत्तर है, सच्चिदानन्द, अविनाशी है, प्रकाशों का प्रकाश है आदि विशेषताओं को बतलाते हुए कहा गया है कि आत्म-ज्ञान से मुक्ति हो जाती है और व्यक्ति जन्म-मरण चक्र से सर्वदा के छुटकारा पा जाता है।

सुगमता तथा सार्वजनीनता के होने के कारण ही 'कल्याण' भक्ति पंथ का विपुल प्रचार कर आध्यात्मिक जगत में अपने उद्देश्य में पूर्णरूपेण सफल रहा है। भक्ति के द्वारा भगवान् के साथ अपना रागात्मक सम्बन्ध स्थापित कराने का मार्ग 'कल्याण' ही है। ईश्वर में अनुराग एवं उत्कृष्ट प्रेम स्थापित करने वाला यह 'कल्याण' मानव कल्याण के सर्वांगीण विकास में सहायक रहा है। वस्तुतः जीव ही शिव है किन्तु माया, मोह, कलह, फूट, ईर्ष्या, द्वेष एवं क्लेश के कारण वह आच्छन्न है। जब शिव की कृपा से आवरण हट जाता है तो वही जीव शिव हो जाता है और इसके साधन कल्याण उल्लिखित धर्म एवं दर्शन सम्बन्धी लेख उपादेय हैं।

धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना पर प्रकाश डालने वाला पुनर्जन्मांक में पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्थापित कर दिया कि मनुष्य अपने प्रारब्ध के कर्मों को अवश्य भोगता है। बिन भोगे कर्मों का क्षय अर्थात् नाश नहीं होता। महाभारत से इस बात की पुष्टि भी होती है -

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।
ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि।।"

अर्थात् जो हम करके आये हैं उसे भोगना ही है। चाहे इसके लिए कल्प-कल्पान्तर, युग-युगान्तर या जन्म-जन्मान्तर क्यों न जन्म लेना पड़े। अवतारों, विशेषतः दशावतारों का उल्लेख भी 'कल्याण' का उद्देश्य रहा है। अवतारों के माध्यम से यह बात स्पष्ट है जब-जब धर्म की हानि एवं असुरों का प्रावल्य होता है तब-तब मैं पृथ्वी पर अवतरित होकर राक्षसों का नाश एवं साधुओं (सज्जनों) की रक्षा करता हूँ। संस्कारों के सन्दर्भ में 16 संस्कारों का उल्लेख यह द्योत्ति करता है कि संस्कार मनुष्य को आचारवान बनाते हैं जिनकी हिन्दू जीवन दर्शन में अत्यधिक उपादेयता है। निगमागम धर्मसम्मत हमारी आर्ष परम्परा अर्थात् सनातन संस्कृति ही रही है। 'धर्मस्य तत्त्वं निहिंत गुहायाम्' धर्म का तत्त्व अत्यन्त गुह्य है जो सार्वभौमिक, सार्वकालिक अक्षुण्ण होने के कारण युगों-युगों से प्रवहमान है जिनका वर्णन वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, महाकाव्यों, पुराणों तथा धर्मशास्त्र आदि निबन्ध ग्रन्थों में द्रष्टव्य है।

धार्मिक चिन्तन और दार्शनिक या आध्यात्मिक चेतना के धरोहर के रूप में कल्याणांक समग्र मानव जाति के कल्याण की वह त्रिपथगा गंगा है जिसमें मञ्जन, पान एवं स्नान करने वाले प्राणियों को चाहे जैनियों का कैवल्य हो या बौद्धों की बोधावगति या निर्वाण हो, सांख्य का ज्ञान हो, या योगियों का प्राकाम्य हो, धर्मशास्त्रियों की स्मृति हो या वेदान्तियों संविति वैदिकों का परा विद्या हो या ब्रह्मवादियों की शाश्वत ज्योति सब के सब एक ही विवश्वान् महाज्योतिरूमान परम ब्रह्म नारायण में समाहित हो जाते हैं तथा संसार चक्र, भवचक्र के आगमन से सर्वथा भुक्त हो जाते हैं।

गोरखपुर का स्त्री विमर्श

डॉ. रंजना जायसवाल

वैसे तो साहित्य को मानवीय संवेदनाओं का वाहक कहा जाता है, पर वह स्त्री विमर्श को सही रूप में चित्रित नहीं कर पा रहा है। वह यथार्थवादी होने का दावा तो करता है पर स्त्री विमर्श के मूल अवधारणाओं को रेखंकित कर आमजन के बीच उनपर कोई समझदारी विकसित नहीं कर पा रहा है। यह दुखद है क्योंकि स्त्री विमर्श जीवन का केन्द्रीय सवाल है, हाशिए का नहीं। आज भी हिंदी साहित्य की मुख्य धारा उसको उपेक्षित करती दिख रही है। मुख्यधारा में स्त्री की मौजूदगी दो रूपों में दिखाई देती है या तो वह सेक्सुअल आब्जेक्ट है या फिर संघर्षशील। संघर्षशील रूप में भी वह पितृसत्ता का पोषण करती दिखती है। उसकी सोच पुरुषवादी होती है। इसका कारण यही है कि हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा वर्चस्वशाली पुरुष लेखन की है जो स्त्री प्रश्न को हमेशा से उपेक्षित करता आया है। यहाँ तक कि हिन्दी आलोचना भी इस सम्बन्ध में गैर अकादमिक व उपेक्षापूर्ण रवैया अपनाए हुए है।

अक्सर स्त्री विमर्श को देह विमर्श के समानान्तर देखा जाता है, जो स्त्री विमर्श को सीमित रूप में देखना है। क्योंकि स्त्री देह को बेचना व स्त्री को सेक्सुएल अथवा बाजार के उत्पाद के रूप बदलना तो पूंजीवादी पितृ सतात्मक व बाजारवादी रणनीति है। इस मानसिकता का सक्रिय विरोध किए बिना तो स्त्री विमर्श असम्भव है। स्त्री विमर्श हमेशा से इस मानसिकता के विरोध में रहा है फिर उसे देह विमर्श कहना कहाँ तक उपयुक्त है?

स्त्री विमर्श को सीमित मानने वालों का यह भी कहना है कि साहित्य का सामाजिक दायित्व होता है जो तभी पूरा होगा, जब स्त्री विमर्श स्त्री की दैहिक पीड़ा से परे जाकर उसकी वर्गीय, जातीय एवं लैंगिक पीड़ा को व्यक्त करेगा। जैसा कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय में हुआ था। उस दौर में अपनी जातीय अस्मिता की पहचान और जनता के अधिकारों के माँग के साथ-साथ स्त्री मुक्ति चेतना निर्मित हुई थी। साठ-सत्तर के दशक में भी स्त्री के विद्रोही तेवर सराहनीय थे, जिनका आज अभाव दिखता है। सामाजिक आंदोलन की तेजी खत्म होते ही स्त्री को हाशिए पर धकेल दिया गया। स्त्री आंदोलनों में स्त्री जीवन से जुड़े प्रत्येक पक्ष में स्वतंत्रता व समानता की माँग थी, आज स्त्री की देहमुक्ति में उसकी आजादी देखी जा रही है। जो लेखक ऐसा कर रहे हैं उन्होंने ही स्त्री विमर्श के विस्तृत फलक को सीमित किया है। वे लेखक फैशन की तरह स्त्री विमर्श पर लेखन कर रहे हैं। क्रांतिकारी विमर्शों, संघर्षों एवं विचारधाराओं का अभाव है। यह समकालीन समाज की विषमताओं का गहरे रूप में पड़ताल नहीं करता। इसके केन्द्र व परिधि दोनों पर स्त्री है स्त्री मुक्ति का मुखर स्वर मूलतः और मुख्यतः अभिजन समाज की स्त्री का है, समस्त स्त्री जाति का नहीं।

स्त्री अस्मिता का प्रश्न व्यक्तिगत अस्मिता का नहीं, बल्कि सामाजिक अस्मिता का प्रश्न है जिसके सामने बड़ी चुनौती पितृसतात्मक संबंध, मूल्य और संस्थाएँ हैं परन्तु उससे भी विकट है स्त्री की स्वयं की इच्छा। स्त्री की इच्छाएँ भी समाज से अलग नहीं हो सकती क्योंकि स्त्री समाज की निर्मिति है। स्त्री का लेखन अनुभवजन्य होता है तथा आत्मीय भाव से भरा हुआ भी। इसलिए आत्मीय शैली ही स्त्री की शैली होनी चाहिए। जरूरत है स्त्री प्रश्नों पर ठोस सैद्धान्तिक बहसों की ताकि साहित्य में स्त्री विमर्श की परम्परा शुरू की जा सके। हिंदी साहित्य में ऐसे लेखन की सख्त आवश्यकता है जो पितृ सतात्मक जनमानस में उद्वेलन पैदा कर सके। घरेलू हिंसा की सूक्ष्म जड़ों को तलाशने की जरूरत है। पुरुषवादी बौद्धिक विमर्शों से स्त्री

सुपरिचित कवयित्री, गद्यकार

को तीन तरह से गायब किया जाता रहा है। पहला बौद्धिक क्षेत्र से स्त्री का निष्कासन, स्त्री की छद्म समाविष्टि तथा स्त्री को अलग-थलग करना। सुभद्रा कुमारी चौहान, मन्नू भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा, कात्यायनी की कौन सी परम्परा है, यह आज तक तय नहीं है लेकिन अज्ञेय, राजेन्द्र यादव और उदय प्रकाश की परम्परा तय है।

हिन्दी का स्त्री साहित्य और उसका सरोकार आज तक अकादमिक जगत में प्रवेश नहीं कर पाया है और ना ही अकादमिक जगत साहित्य में चल रहे स्त्री विमर्श से कोई जुड़ाव महसूस कर पा रहा है। जरूरत है स्त्री विमर्श और साहित्य के स्त्री विमर्श के द्वंद्व को समझने की। जब तक सृजनात्मक साहित्य स्त्री अधीनता के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पक्षों की सैद्धान्तिकी को समझकर उसे साहित्य में रूपायित नहीं करता तब तक आम पाठक स्त्री विमर्श तक नहीं पहुँच पाएगा।

आज स्त्री विमर्श विश्व के मानवाधिकार से जुड़ गया है जिसमें दुनिया भर की स्त्रियाँ शामिल है। आज का स्त्री विमर्श मानवाधिकारों का स्त्री विमर्श बन चुका है। प्रत्येक विमर्श अपने समय में तर्कों, अध्ययनों, मनन और चिंतन की प्रक्रिया से गुजरता है परंतु व्यवहार का विमर्श विचार के विमर्श से अलग ही रहता है।

स्त्री को दी गयी और मान्य सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक स्थितियाँ, सभी स्तरों पर दृश्य से अधिक विकराल अदृश्य हिंसा में सक्रिय हैं और ये स्त्री के स्व उसकी सोच और उसके व्यक्ति को नष्ट करती हैं उसके दमन को गौरवान्वित करती हैं। आज का स्त्री विमर्श चेत गया है और उसका प्रतिकार कर रहा है। हाइटेक संस्कृति, साइबर संसार, वैश्वीकरण के साथ भौतिकतावाद और उपभोक्तावादी संस्कृति से त्रस्त स्त्री विमर्श ने पहले देह विमर्श का आश्रय लिया और सवालों के घेरे में घिर गयी। आज का स्त्री विमर्श का दायरा काफी बढ़ गयी है। स्त्री पुरुष के बीच की सरहदे टूट रही हैं सरोकार एक हो रहे हैं।

जहां तक हमारे शहर गोरखपुर का सवाल है, वहाँ स्त्रियों की स्थिति वैसी ही है जैसी अन्य छोटे शहरों में। सिद्धान्त और व्यवहार का फर्क यहाँ भी स्पष्ट देखा जा सकता है। सिद्धान्तः तो वह हर क्षेत्र की तरह लेखन में भी बेहतर कार्य कर रही है पर व्यवहार में देखें तो ऐसी रचनाकार अंगुलियों पर गिनी जा सकती हैं। पुरुषों की समानान्तर वे दोयम दर्जे की रचनाकार मानी जाती हैं। उनका उपयोग सभा-सम्मेलनों की शोभा बढ़ाने के लिए किया जाता है। जो इसके लिए राजी नहीं होती, उन्हें सिरे से नकार दिया जाता है। गोरखपुर में कवियों की भरमार हैं पर कवयित्रियाँ गिनी-चुनी हैं, उनमें भी गंभीर रचना करने वाली कम ही हैं। कई तो दो-चार रचनाएँ ही मंचों पर गाती रहती हैं। कविता में गीत-गजल ही उन्हें ज्यादा पसंद हैं। उनके गले अच्छे हैं और गीत-गजल भी ऐसे जो पुरुष मानसिकता का ध्यान रखकर लिखे गए हैं, इसलिए वे हिट हो जाते हैं और वे मंचों पर बुला ली जाती हैं। साहित्य की अन्य विधाओं में रचना करने वाली एकाध ही हैं और वे देश भर में जानी जाती हैं, पर शहर में नहीं। शहर के रचनाकर उन्हें रचनाकार नहीं मानते क्योंकि वे उनकी सोच से आगे की रचनाकार हैं। शोभा बढ़ाने के लिए उनका इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

शहर के लिए लेखिकाएँ स्त्री पहले है रचनाकार बाद में। वे आज भी यही मानते हैं कि स्त्री मौलिक सृजन नहीं कर सकती। अगर किसी स्त्री की रचना प्रसिद्धि पाती है तो वे मान लेते हैं कि इसके पीछे जरूर कोई पुरुष है। जिस शहर में स्त्री के प्रति ऐसी सोच हो वहाँ स्त्री विमर्श कैसे संभव है? ऐसा नहीं कि यहाँ स्त्री विमर्श पर आयोजन नहीं होते हैं, होते हैं पर उनमें अधिकांशतः विद्वान ही बोलते हैं। कभी-कभार दूसरे शहरों से स्त्री रचनाकर भी बुलाई जाती हैं ताकि कोई सवाल नहीं उठाए कि स्त्री विमर्श के आयोजन में कोई स्त्री ही नहीं। वैसे भी वे वही बोलेती हैं, जैसा वे चाहते हैं। सुखी, सम्पन्न, सम्मानित स्त्री रचनाकार, जिनके अपने जीवन में संघर्ष नहीं, वे स्त्री विमर्श पर बोलने योग्य मानी जाती हैं। जबकि उनमें से

अधिकांशत: वे पुरुष मानसिकता से ग्रस्त होती हैं। आम स्त्री के दुख-संघर्ष को वे क्या समझेंगी? स्त्री विमर्श एक खास वर्ग की बपौती नहीं है। मुझे तो लगता है कि स्त्री विमर्श के आयोजनों में हर वर्ग की स्त्री को बुलाना चाहिए। ये ठीक है कि सभी अच्छी वक्ता नहीं होंगी पर वे जो कहेंगी वह सच होगा। फैशन के तौर पर होने वाले आयोजन बंद होने चाहिए।

इस दृष्टि से गोरखपुर लिटरेरी फेस्ट में स्त्री विमर्श पर जो आयोजन हुआ वह अपेक्षाकृत अधिक संतोषजनक रहा। इसमें स्त्री विमर्श के क्षेत्र में काम करने वाली रचनाकारों के साथ शहर की रचनाकार को भी शामिल किया गया, जिसमें सभी ने बिना किसी दबाव के अपनी बात रखी। आयोजन से स्पष्ट हो गया कि स्त्री विमर्श न तो कोई फैशन है न पुरुष विरोध। यह स्त्री को मानुषी स्वीकार करने की लड़ाई है जिससे लिंग जनित सारे भेद-भाव समाप्त किए जा सकें। स्त्री पुरुष को समानान्तर लाने की जद्दोजहद है स्त्री विमर्श और यह तभी सफल होगा जब पुरुष सहयोग करेगा।

गोरखपुर में सिनेमाई परिदृश्य

डा. चन्द्र भूषण 'अंकुर'

सिनेमा का आविष्कार 1895 ई. में फ्रान्स में हुआ था। फ्रान्स के ल्यूमिऐर बन्धुओं ने जो सिनेमा के आविष्कारकर्ता थे। उन्होंने ही पहली बार दिसम्बर 1895 में फ्रान्स की राजधानी पेरिस के 'ग्रान्डकैफे' में सिनेमा का प्रदर्शन किया था। ल्यूमिऐर बन्धुओं को ऐसा लगता था कि चलती फिरती तस्वीरों का उनका यह आविष्कार क्षणिक महत्व का है। इससे पहले कि इसका जादू समाप्त हो जाय वे लोग इसे दुनिया भर में दिखाकर और सिनेमा के उपकरण बेचकर मुनाफा कमा लेना चाहते थे। इन्हीं के प्रतिनिधियों ने पहली बार भारत में भी बम्बई के काला घोड़ा क्षेत्र में स्थित '**वाटसन होटल**' में 7 जुलाई 1896 ई. को पहली बार सिनेमा का प्रदर्शन किया और प्रदर्शन में उपस्थित कुछ उत्साही भारतीय उद्यमियों को सिनेमा बनाने के उपकरण भी बेचें।

जिस दिन भारत में सिनेमा का पहला प्रदर्शन हुआ उसी दिन रूस में भी जार की उपस्थिति में सिनेमा दिखया गया। इस तरह सिनेमा पूरी दुनिया में लगभग एक साथ ही पहुंचा। किन्तु गोरखपुर के दर्शकों को भारत में सिनेमा प्रदर्शन के लगभग तीन दशक बाद देखने का मौका मिला। जब यह पहला सिनेमा हॉल बक्शीपुर में 'कृष्णा' नाम से 1926 ई. में खुला। इस सिनेमा की स्थापना का श्रेय किसी गोरखपुरी को नहीं बल्कि गुजरात के एक व्यवसायी 'चक्कू' भाई को है, जिन्होंने नये व्यवसाय की गोरखपुर में शुरुआत की।

कृष्णा सिनेमा में उन दिनों थर्ड क्लास, सेकेण्ड क्लास, फर्स्ट क्लास और बालकनी हुआ करती थी जिनका टिकट क्रमश: दो आना, चार आना, आठ आना और एक रूपया था। उस समय मूक फिल्मों का जमाना था और ज्यादातर विदेशों में बनी मूक फिल्में खास तौर पर इंग्लैण्ड और अमेरिका में बनी फिल्में शहर में प्रदर्शित होती थी। मसलन 'एडी पोलो', 'हैरी हिल' इत्यादि। भारत में 1896 ई. के बाद बम्बई प्रान्त में कुछ उद्यमियों ने पहले छोटी-छोटी दो-चार मिनट की फिल्में बनायी। फिर बड़े आयोजनों की या घटनाओं का कैमरा रिकार्डिंग शुरू हुआ। 1908 ई. में मराठी फिल्मकार 'सवेदादा' ने आधे घण्टे की एक फिल्म 'कोकोनट फेयर' बनायी। किन्तु भारतीय सिने इतिहास में फुल लेंथ कथा फिल्म बनाने का श्रेय 1913 ई. में प्रदर्शित 'राजा हरिशचन्द्र' के कारण दादा साहेब फाल्के को मिला और दादा साहेब फाल्के भारतीय सिनेमा के पितामह घोषित हो गये। जबकि आज के सर्वाधिक विकसित राष्ट्र अमेरिका में पहली फुल लेंथ कथा फिल्म भारत से एक वर्ष के बाद 1914 ई. में बनी-'बर्थ ऑफ दी नेशन'। यह फिल्म ग्रिफिथ ने बनायी थी। जब भारत में फिल्में बनने लगी तो उनको दिखाने के लिए स्थान की समस्या आयी। निर्माताओं ने जगह-जगह टेंट थिएटर लगाकर सिनेमा का प्रदर्शन किया। टेंट थिएटर से तात्पर्य टेंट तानकर निर्मित किए गये अस्थायी थिएटरों से था। जो घूम-घूम कर शहरों, कस्बों में फिल्मों का प्रदर्शन करते थे। हालांकि गोरखपुर में टेंट थिएटर में फिल्म दिखाने का कोई विवरण हमें प्राप्त नहीं हो सका।

मूक फिल्मों के दौर में हमारे शहर में कृष्णा सिनेमा का एकाधिकार बना रहा। यहां दूसरा सिनेमा हॉल जुबली भी बक्शीपुर में खुला। जब भारत में बोलती फिल्में 1931 ई. में आलम-आरा के प्रदर्शन के साथ बनने लगी। बोलती फिल्में को 'टॉकी' कहा जाता था। सम्भवत: इसी का कारण जुबली टॉकिज नाम भी रखा गया। जुबली टॉकिज के निर्माण की ठीक-ठाक तारीख नहीं पता चल सकी। किन्तु विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इसका प्रारम्भ 1934-35 ई. में हुआ। इस सिनेमा हॉल का निर्माण भी कानपुर के किसी रस्तोगी परिवार ने कराया था।

किसी गोरखपुरी द्वारा निर्मित पहला सिनेमा हॉल युनाइटेड है जो सन् 1942 मुख्तार अहमद बिजलीवाले ने

मध्यकालीन इतिहास विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

शुरू किया था। उन्हीं दिनों जुबली टॉकिज वाले रस्तोगी परिवार ने वर्तमान सिनेमा रोड के निकट स्थित तब के तमकुही कम्पाउण्ड में निशान्त नाम से एक अस्थायी सिनेमा हॉल का निर्माण भी कराया। जिसमें ज्यादतर अंग्रेजी फिल्में प्रदर्शित होती थी और उन्हें अंग्रेज अधिकारी, कर्मचारी एवं शहर के अन्य सभ्रान्त वर्गों के लोग देखते थे। बाद में यह सिनेमा हॉल जो अस्थायी था बन्द हो गया। युनाइटेड के मालिक मुख्तार भाई ने तो दीवार खड़ी करके छत पर त्रिपाल डालकर ही फिल्म प्रदर्शन प्रारम्भ कर दिया था, फिर धीरे-धीरे हॉल व्यवस्थित हुआ।

आजादी के ठीक पहले 27 जुलाई 1947 ई. को गोरखपुर में चौथा सिनेमा हॉल वीनस के रूप में प्रारम्भ हुआ। इसके मालिक शान्ताराम थे। वीनस 1990 ई. में बन्द हो गया। त्तपश्चात उस हॉल का प्रयोग लम्बे समय तक कपड़े की सेल लगाने में होता था। वर्ष 2014 में वीनस की बड़ी भवन को गिरा दिया गया और अब वहाँ वीनस मल्टीपलैक्स बना दिया गया है। 1999 ई. में श्री शान्ताराम जी से लेखक की बात-चीत हुई थी जिसमें उन्होंने वीनस सिनेमा से जुड़ी अपनी स्मृतियों को साझा किया था।

उन्होंने बताया था कि वीनस में प्रदर्शित पहली ही फिल्म पन्ना ने अच्छा खासा व्यवसाय किया था। वीनस में ही अंग्रेजों और अन्य अभिजात्य वर्ग के लोगों के लिए सुबह के शो में अंग्रेजी फिल्में का प्रदर्शन शुरू हुआ था और ऐसे प्रदर्शनों की शुरुआत फिल्म 'स्मोकी' से हुई जिसका उद्घाटन तत्कालीन कलेक्टर मिस्टर वॉकर ने किया था। शान्ताराम जी ने मुझे बताया था तब के सिने दर्शकों में सब्जीवाले, रिक्शावाले, तांगा और ठेला वाले, बूचड़ एवं समाज के अन्य निम्न वर्गो के लोग ज्यादा होते है। जबकि धार्मिक फिल्में देखने के लिए पूरा का पूरा कुनबा ही आता था। पर्दा प्रथा के कारण तब सिनेमा हॉलों में बालकनी के ही हिस्से में या नीचे डी.सी. क्लास के हिस्से में लेडिज क्लास हुआ करता था। जहाँ एक दाई गेटकीपर के रूप में तैनात रहती थी। कनात में घेर कर अलग बनाये गये लेडिज क्लास के तरफ किसी पुरुष का जाना वर्जित था। उस जामने में सिनेमा के मात्र दो शो हुआ करते थे। पहला छः बजे शाम से और दूसरा रात नौ बजे से, जिन्हें फर्स्ट शो और सेकेण्ड शो के नाम से जाना जाता था। मैटनी शो और नून शो की परम्परा दर्शकों की वृद्धि होने पर पहले पहल वीनस टॉकिज ने शुरू की। अलग से मार्निंग शो का जनक भी वही था।

आजादी के बाद गोरखपुर में खुलने वाला पहला सिनेमा हॉल विजय था। फिर 1956 ई. में असुरन क्षेत्र में **छाया** खुला। छाया के मालिक राय मधुसूदन प्रसाद जैन के परिवार ने ही 1959 ई. में चौरहिया गोला में झंकार छवि गृह भी बनवाया। छाया में 1959 ई. के आस-पास प्रदर्शित मुगले आजम ने सिल्वर जुबली मनाई थी। इसके पूर्व विजय टॉकिज में प्रदीप कुमार की फिल्म नागिन और कृष्णा टॉकिज में दिलीप कुमार की फिल्म आजाद 1953-54 ई. में एक साथ प्रदर्शित हुई थी। दोनों ही फिल्में खासी हिट हुई थी। उस जमाने में शहर के सिनेमाबाजों का प्रिय शगल होता था। इन दोनो फिल्में को बार-बार देखना और यह बाजी लगाना की कौन सी फिल्म ज्यादा चलेगी। जब दिलीप कुमार की आजाद एक हफ्ते से ज्यादा चल गई तो दो रूपये की बाजी नागिन प्रशंसक हार गये। दोनों ही फिल्मों ने सिल्वर जुबली मनाई थी।

गोरखपुर में सिनेमा हॉलो के निर्माण का ठीक-ठाक कालक्रम न तो सिनेमा व्यवसाय से जुड़े सूत्र बता सके न तो जिले में लाखों रूपये से ज्यादा का कर वसूलने वाले मनोरंजन कर अधिकारी का कार्यालय, परन्तु मौखिक स्रोतों से प्राप्त जानकारी के मुताबिक 1962 ई. में इन्द्रलोक, 1964 ई. में प्रिया बाद में मानस चित्र मन्दिर, 1965 ई. में माया चित्र मन्दिर में फिर 70 के दशक में तरंग थिएटर, त्तपश्चात मेनका, फिर राज थिएटर और सबसे अन्त में श्री टॉकिज 1981 ई. में मोहद्दीपुर में बना। इस तरह शहर में 1990 ई. तक कुल 14 सिनेमा घर हुआ करते थे। तमाम शुरुआती मापदण्ड बनाने वाले वीनस के 1990 ई. में बन्द होने से शहर में सिंगल स्क्रीन थिएटरों के बन्दी की शुरूआत हुई और वर्तमान में 4 स्क्रिन थिएटर चल रहे है। बाकी सभी बन्द हो गये है। सन् 2008 में शहर में माया चित्र मन्दिर को तोड़कर माया सिनेपलैक्स बना तथा एस. आर.एस सिनेमा ने सिटी मॉल में तीन स्क्रीन वाले मल्टीपलैक्स

की शुरूआत की।

2019 का वर्ष शहर में सिनेमा प्रदर्शन की सुविधाओं में विस्तार की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। 2019 में ए. डी. मॉल में तीन स्क्रिन, पी.वी.आर. सिनेमा जो पुराने वीनस सिनेमा के परिसर में ही खुला, नया बना है। इसमें तीन स्क्रीन है। नये साल के ठीक पहले मोहद्दीपुर में खुले ओरियन मॉल में तीन स्क्रीन वाले मल्टीपलैक्स की शुरूआत हो गयी है। इस तरह वर्तमान में चार मल्टीपलैक्स में 12 स्क्रीन और 4 सिंगल स्क्रिन थिएटर्स को मिलाकर 16 सिनेमा हॉल हो गये है। इस तरह देखा जाए तो सिनेमाघरों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है परन्तु सिनेमा देखना महंगा हो गया है। जुबली टॉकिज और युनाइटेड टॉकिज ही सस्तें टिकटों वाले सिनेमा हॉल रह गये है। बाकि जगहों पर फिल्म देखने के लिए कम से कम 150 रूपये दर्शक को खर्च करने पड़ते है। यह मूल्य अधिकतम 250-300 रूपये भी पहुंच सकता है।

2019 में ही भोजपुरी और हिन्दी फिल्मों के सुपरिचित कलाकार श्री रविकिशन, भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर गोरखपुर से सांसद चुने गये। निर्वाचित सांसद ने गोरखपुर में फिल्म सिटी बनाने की मांग की है। वैसे भी शहर में तथा आस-पास भोजपुरी फिल्में की सूटिंग होती रहती है। ऐसे में फिल्म निर्माण की ढांचागत सुविधाओं में अगर वृद्धि हो तो भोजपुरी फिल्मों के निर्माण के एक बेहतर केन्द्र के रूप में गोरखपुर का विकास हो सकता है।

एक और बात का उल्लेख जरूरी लग रहा है गोरखपुर शहर का विस्तार गोरखनाथ, और मेडिकल कॉलेज की तरफ काफी दूर तक हो चुका है परन्तु इन क्षेत्रों में पता नहीं क्यूं कोई सिनेमा हॉल निर्मित नहीं हुआ। सन् 2014 में छाया सिनेमा के बन्द होने के बाद, यह कमी और खलती है।

20वीं शताब्दी में 90 के दशक तक, सिनेमा हॉल में लगे फिल्मों का प्रचार बकायदा रिक्शे और टैम्पो पर फिल्म का पोस्टर लगाकर लाउड स्पीकर के माध्यम से और टेंट के आकार के तिकोने ठेला गाड़ियों से जिनके दोनों तरफ फिल्म के बड़े-बड़े पोस्टर होते थे और कलाकारों के नाम लिखे होते थे, किया जाता था। सिनेमा के शुरूआती प्रचारक ही वस्तुत: शहर के कई ख्याति नाम उद्घोषको के लिए भी 'ट्रेंड सेटर' है। उद्घोषणा की बानगी देखिए-''कृष्णा टॉकिज के सुनहरे पर्दे पर बड़ी शान के साथ दिखाया जा रहा है, मार-धाड़, हसी-मजाक और मनोरंजक गाने से भर-पूर जी.पी. सिप्पी की फिल्म शोले। फिल्म में कलाकार है, अमिताभ बच्चन, धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी इत्यादि।''

दूरदर्शन के प्रचार एवं वीडियो के उभार के बाद जब दर्शक 80 के दशक में सिनेमा घर से गायब हुए तो सब कुछ थम गया। अब प्रचार अखबारों में विज्ञापन देकर और शहर में चिपके पोस्टरों से ही होता था। सिनेमाघर के बाहर सिनेमा की कहानी और गीतों की आठ आने में बिकने वाली पुस्तिका भी इसी दौर में बन्द हो गई। मौखिक स्रोतों एवं अभिलेखों से प्राप्त जानकारी के हिसाब से वर्ष 1994 में माया चित्र मन्दिर में प्रदर्शित 'हम आपके है कौन' शहर में अब तक प्रदर्शित फिल्में में सबसे सफल फिल्म साबित हुई। जिसने 82 हफ्तों तक एक ही छवि गृह में चलने का रिकार्ड कायम किया। इससे पूर्व यह रिकार्ड कृष्णा टॉकिज में प्रदर्शित फिल्म शोले का था, जो 52 हफ्तों तक चली थी। इससे थोड़ी ही कम 1975 ई. में विजय टॉकिज में प्रदर्शित जय माँ संतोषी चली थी।

दूरदर्शन के प्रसार और वीडियो तकनीक के उभार के चलते सिनेमा व्यवसाय 80 के दशक में उतार पर जाने लगा। सबसे पहले वीनस सिनेमा 1990 ई. में बन्द हुआ। इसके बाद सन् 2007 में माया चित्र मन्दिर बन्द हुआ और सन् 2010 में माया सिनेप्लेक्स के नाम से शुरू हुआ। सन् 2011 में तरंग, सन् 2012 में मानस, सन् 2013 में छाया, सन् 2014 में झंकार, इन्द्रलोक बन्द हो गये। सिंगल स्क्रिन सिनेमा हॉल की बन्दी ने गरीब तबके के मनोरंजन के अधिकार पर सबसे ज्यादा चोट पहुंचायी है। सिनेमा व्यवसाय से मिलने वाले धन में इजाफा हुआ है लेकिन सिनेमाघर जाकर सिनेमा देखने वाले दर्शकों में लगातार घटोतरी हुई है। मल्टीप्लेक्स संस्कृति के प्रसार में भारत की एक बड़ी आबादी को अपने मोबाईल फोन पर फिल्म देखने को विवश किया है क्योंकि 5-10 रूपये में अभी भी फिल्में डाउनलोड कर दी जाती है।

गोरखपुर परिक्षेत्र में पर्यटन की सम्भावनाएँ

राम कृष्ण शरण मणि त्रिपाठी 'मणि जी'

मशहूर शायर रियाज खैराबादी का कहना कि - **'आ के हो जिसे जाना न, आए गोरखपुर'** इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भी उतना ही सत्य है जितना उनके समय में था। कबीर की कर्मभूमि, गोरख की तपस्थली और बुद्ध का परिनिर्वाण स्थल आज भी देशी-लाखों विदेशी सैलानियों का मन मोह लेता है। इसके अतिरिक्त यह गोरखपुर का सौभाग्य है कि उत्तर प्रदेश के मुखिया माननीय योगी आदित्यनाथ जी हैं जो गोरखनाथ मन्दिर के पीठाधीश भी हैं।

इस संयोग का उपयोग करते हुए और उसी से प्रेरणा एवं निर्देशन प्राप्त करके हम भी कोई न कोई संकल्प करें कि जीवन में विजयश्री प्राप्त कर यह सिद्ध कर देंगे कि सामूहिकता में शक्ति होती है।. . . .

इस क्रम में इण्टेक की महत्वूर्ण भूमिका है। इसी भूमिका को ध्यान में रखते हुए मैंने गोरखपुर के साथ-साथ तथागत से जुडे अन्य स्थलों का भ्रमण किया और जो समझा, उसी के अनुरूप पर्यटन के थीम **यूपी नही देखा तो इण्डिया नहीं देखा. . .** .दृष्टिकोण से 'आनन्द बुद्ध विहार' (व्यूजलाइज शैक्षणिक भ्रमण स्थल के रूप में एक पर्यटन स्थल का निर्माण करने में कार्यरत हूँ। इसके अतिरिक्त भगवान बुद्ध के पंचशील सिद्धान्तों के अनुरूप विकसित एवं उनके सबसे प्रिय शिष्य के नाम पर प्रस्तावित है।

आनन्द बुद्ध विहार : व्यूजूअल शैक्षिक भ्रमण, पर्यटन-स्थल केन्द्र के निमाण के लिए मैंने 'पर्यटन' को अपने प्रोजेक्ट/सब्जेक्ट के रूप में चुना है। पर्यटन के अपार संभावनाओं को देखते हुए अभी हाल ही में गोरखपुर में 27 सितम्बर 2019 को पर्यटन दिवस के अवसर पर पर्यटन विभाग की ओर से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। अपने उद्‌बोधन में जिलाधिकारी, गोरखपुर ने कहा था कि गोरखपुर और आस-पास के क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं। आवश्यकता है तो इसके ब्राडिंग की। इसके लिए हर किसी को आगे आना होगा। पर्यटन से होने वाले लाभों की चर्चा करते हुए जिलाधिकारी महोदय ने कहा था- कोई भी पर्यटक गोरखपुर में एक रुपया भी खर्च करता है तो अप्रत्यक्ष रूप से इससे कई लोगों को रोजगार मिलता है।

आयोजन का थीम वाक्य था- 'पर्यटन एवं रोजगार: सभी के लिये बेहतर भविष्य।

इसी अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी श्री रवीन्द्र कुमार मिश्र जी ने कहा था कि पर्यटन विकास पर 2000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च किये जा रहे हैं।

उपरोक्त कार्यक्रम के थीम के साथ माननीय मुख्यमंत्री महोदय की सोच पहले से ही विस्तृत आकार ले चुकी है जिसका दृश्य विश्व ने प्रयागराज कुम्भ-2019 के रूप में देखा और माना।

माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सोच है कि- 'पर्यटन' के पहले स्थान पर हो- यूपी।

विगत 4 फरवरी 2019 सोमवार को लखनऊ में आयोजित विधान भवन में संसदीय पत्रकारिता पर कार्यशाला के उदघाटन के अवसर पर मीडिया की भूमिका की सराहना करते हुए उन्होंने कहा था कि यूपी में चल रहे कुम्भ के बाद यह राज्य पर्यटन के क्षेत्र में नम्बर एक पर होगा।

इसी क्रम में 27 सितम्बर 2019 को न्यूयाक में माननीय प्रधानमंत्री जी ने संयुक्तराष्ट्र महासभा के अधिवेशन में विश्व के नेताओं के सामने आतंकवाद पर कड़ा प्रहार

सामाजिक कार्यकर्ता/पत्रकार, मो.- 9889049645

करते हुए स्पष्ट कर दिया था कि भारत ने दुनिया को 'युद्ध नहीं बुद्ध' दिया है। यह तथागत के व्यक्तित्व का ही परिणाम है कि सम्पूर्ण विश्व आज उनके सामने नतमस्तक है।

इसी क्रम में हाल ही में (10 दिसम्बर 2019) सिद्धार्थनगर के इटवा विधानसभा क्षेत्र के बिस्कोहर गाँव में माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा था कि भगवान गौतम बुद्ध के कारण ही सिद्धार्थनगर की पहचान पूरी दुनिया में है। उनके महान व्यक्तित्व और कृतित्व से लाखों लोगों में परिवर्तन हुआ है।

गोरखपुर मण्डल में तथागत के जीवन से जुड़े कई स्थलों के प्रति भारतीय ही नहीं, जापान, थाइलैण्ड, श्रीलंका, कम्बोडिया, ताइवान, सिंगापुर, मलेशिया, दक्षिण कोरिया, उत्तर कोरिया, चीन तथा मंगोलिया आदि देशों के विदेशी पर्यटकों में भी काफी श्रद्धा है। ये बौद्ध मतावलम्बी कुशीनगर, कपिलवस्तु आदि क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य बौद्धस्थलों का भी भ्रमण करते हैं।

गोरखपुर परिक्षेत्र में गोरखपुर-बस्ती मंडल के सभी सात जिलों (गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, महराजगंज, बस्ती, सिद्धार्थनगर व संतकबीर नगर) में पर्यटन की अपार संभावनाओं को देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी ने स्वतः सज्ञान लेते हुए अनेक स्थलों का चयन किया है। किन्तु तथागत से जुड़े कई स्थान अभी भी दृष्टिगत नहीं हैं। इसी काल से सम्बन्धित एक स्थान गोरखपुर में भी है (अन्य स्थलों की तलाश जारी है।) जिसकी ऐतिहसिकता के प्रमाण आज भी देखे जा सकते हैं। **तथागत ने अपने भाई देवदत्त के बाण से घायल हंस का उपचार कर प्राणी मात्र के साथ कपिलवस्तु झील तट पर शिक्षा दी। कपिलवस्तु में भी ऐसे पंक्षी विहार प्रस्तावित हैं- वहीं शहर गोरखपुर की प्राचीनता सन 1886 ई. में प्रकाश में आयी जब रेलवे लाइन बिछाने हेतु पिपरापुर टीले (डोमिनगढ़) की खुदाई करते समय वहाँ 'गौतम बुद्ध' के पुत्र राहुल तथा पत्नी यशोधरा के स्वर्णमण्डित आभूषण प्राप्त हुए। ये आभूषण प्रवज्या पूर्व एवं इस संगम पर विसर्जित प्रतीत होते थे। इस टीले की बुनियाद में मौर्यकालीन ईंटे उपस्थित हैं। यह विडम्बना है कि इस टीले का विस्तृत उत्खनन अभी तक नहीं कराया गया। इसी के साथ, गोरखपुर के सन्निकट उत्खनित स्थल सोहगौरा तथा पिपरहवा में भी ई.पू. 1500 तक के मानव सभ्यता तक के स्तर प्राप्त हुए हैं।**

हमारे देश में स्थानीय इतिहास के प्रति जागरुकता का अभाव है। हमारे पड़ोस के भवन, सड़कें, मुहल्ले, टीले आदि कितनी ही पुरानी घटनाओं की साक्षी है। इसके रहस्योद्घाटन से हमारा उनके प्रति लगाव उत्पन्न होता है और हम अपने भूमि के निकट आते है। गोरखपुर का इतिहास प्रस्तुत कर इस दिशा में सराहनीय प्रयास किया जा रहा हैं। (शैल नाथ चतुर्वेदी, विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास पुरात्तव एवं संस्कृति विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर का कथन)

किसी भी देश के लिए पर्यटन की दृष्टि से अपना एक अलग महत्व होता है जो प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में अपना योगदान राष्ट्रहित में प्रदान करता है। आज सरकार भी पर्यटन के दृष्टिकोण से काफी गंभीर है जिसका अंदाजा हम आगामी आने वाले समय में हम **'पूर्वांचल के विकास की संभावनाएँ'** तृतीय द्विवसीय संगोष्ठी के होने वाले पूर्व निधारित एवं प्रस्तावित कार्यशाला के विषय से लगा सकते हैं। जिसका उदघाटन माननीय यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी स्वयं करेंगे।

पर्यटन के संदर्भ में माननीय मुख्यमंत्री जी स्वयं ही इस मुहिम के ध्वजवाहक के रूप में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं। सिद्धार्थनगर बौद्धपरिपथ के अन्तर्गत आने वाला एक जनपद है जहाँ पर्यटन की अपार संभावनाएँ सुनिश्चित हैं तथा भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह स्थान योग्य एवं उपयोगी है। गोरखपुर से होते हुए एन. एच. 29 मार्ग पर उस्का बाजार और सिद्धार्थ नगर के बीच स्थित है। यह प्रोजेक्ट तथागत (गौतम बुद्ध) के प्रिय शिष्य आनन्द को समर्पित होगा तथा जिसका नाम आनंद बुद्ध विहार' होगा। राष्ट्र की आन-बान-शान और सम्मान को समर्पित

यह अद्वितीय व्यूजुअल शैक्षणिक भ्रमण बौद्ध पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा।

अपने कार्यरूप को परिणित करने के लिए मैंने सिद्धार्थ नगर में तथागत के पंचशील सिद्धान्तों को प्रचार-प्रसार करने का निश्चय किया है। जिनमें ग्रामसभा कटकी के अन्तर्गत पाँच गाँव समाहित है। जो मेरे प्रोजेक्ट के अनुरूप भगवान बुद्ध के पंचशील सिद्धान्तों के अनुरूप विकसित किये जाएँगे। जिनमें अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं के साथ-साथ बौद्धयुगीन चित्रण भी प्रदशित होगा जो देशी-विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर स्वत: ही आकर्षित करेगा। इसके अतिरिक्त डिजिटल शैक्षणिक वातावरण एवं योग केन्द्र भी उपलब्ध होगा।

प्रेरणास्रोत के रूप में महामना मदनमोहन मालवीय जी का उदाहरण है जिन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना कर निर्माण कराया। आज के परिदृश्य में देश एवं प्रदेश स्तर पर अनेक पर्यटन-स्थलों का निर्माण हुआ है जिसमें लिवर्टी ऑफ स्टेच्यू को हम देख सकते है और अभी हाल में ही विकसित गोरखपुर की रामगढ़ ताल परियोजना आपके समक्ष है। उसी परिकल्पना के अनुरूप हम ने भी अपनी कुछ रणनीति बनायी है।

'आनंद बुद्ध विहार' के इस प्रोजेक्ट की लागत लगभग 500 सौ करोड़ रुपये से ऊपर की है। यह प्रोजेक्ट सिद्धार्थनगर के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा और हजारों लोगों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से रोजगार प्रदान करने में सक्षम होगा। जहाँ साउण्ड एण्ड लाइट शो (मल्टीमीडिया फाउण्टेन) के माध्यम से भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर महाभिनिष्क्रमण की घटनाएँ, धर्मचक्र प्रवर्तन की घटना तथा इसके साथ ही देश के अन्य भागों में घटित बौद्ध धर्म से संबंधित घटनाएँ एवं महापरिनिर्वाण तक के घटनाक्रम को सेटेलाइट विडियो एवं चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जायेगा साथ ही देश के अन्य भागों में बौद्ध धर्म से संबंधित साची, भरहुत और अजंता एलोरा को प्रमुखता से दिखाया जायेगा। समय-समय पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिचर्चाओं का आयोजन भी सुनिश्चित होगा। इसके अतिरिक्त नाट्य मण्डली टीम भी तैयार है जिसने कई स्थानों पर तथागत के जन्म से समाधि तक का मंचन किया है। इसी के तहत बौद्ध तथा सांस्कृतिक, साहित्यिक धरोहरों के संरक्षण के क्रम में सांस्कृतिक साहित्यिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए अन्य नाटकों का भी मंचन होगा। एन. एस. डी. तथा भारतीय नाट्य अकादमी तथा अन्य नाट्य मंचों का सहयोग लिया जाएगा जिससे पर्यटकों को राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित कराया जा सके। प्रत्येक विभाग और दिशा के अनुरूप- जैसे संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर, साहित्य एवं कला, एक जनपद-एक उत्पाद (ODOP) के अन्तर्गत प्रदर्शित किया जाएगा।

वह दिन दूर नहीं जब अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर पर्यटन की दृष्टि से यह उत्तर प्रदेश अपनी एक अलग पहचान रखेगा और सरकार के राजस्व में वृद्धि कर राष्ट्र की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा।

गोरखपुर के कुछ प्रमुख अधिवक्ता

निकेत नारायण सेवक पाण्डेय

गोरखपुर के विधि व्यवसाय के इतिहास में अनेक अधिवक्ताओं ने इस क्षेत्र में श्रेष्ठ अधिवक्ता होने का श्रेय प्राप्त किया तथा साथ ही साथ उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायालय में न्यायमूर्ति के रूप में योगदान दिया। विभिन्न अधिवक्ताओं के विधायिका एवं कार्यपालिका में अपना योगदान किया। गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थापना एवं विभिन्न महाविद्यालयों एवं इण्टर कॉलेजों की स्थापना में अधिवक्तावर्ग की महत्वपूर्ण सहभागिता रही है। गोरखपुर के अधिवक्तावर्ग का स्वर्णिम इतिहास रहा है।, जिस पर गोरखपुर को गर्व है।

गोरखपुर सिविल कोर्ट बार एसोसियेशन के प्रथम अध्यक्ष मुंशी हरिदत्त जी रहे। मुंशी पटेश्वरी प्रसाद का नाम सिविल एवं फौजदारी के मामलों में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में जाना जाता है। सिविल कोर्ट बार ऐसोसियेशन के भवन का निर्माण इनके द्वारा कराया गया था। मुहम्मद इस्माइल लन्दन के ''लिकन्तइन'' से बैरिस्टर की उपाधि लेकर आये और यहाँ के बहुत बड़े अधिवक्ता हुए। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सरकार के अधिवक्ता एवं त्तपश्चात सन् 1937 से 1944 तक उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति रहे। इस्माइल साहब सच्चे राष्ट्रभक्त थे, उन्होंने विभाजन के समय भारत में रहना स्वीकार किया। पाक प्रधानमन्त्री लियाकत अली ने उन्हें भारत में पाक का राजदूत बनने की पेशकश की, किन्तु उन्होंने भारत की नागरिकता छोड़ने से इन्कार कर दिया तब प्रधानमन्त्री पण्डित नेहरु ने उन्हें भारत का नागरिक होते हुए भारत में पाक राजदूत बनने की अनुमति दी, और वे भारत में पाक के उच्चायुक्त बने। यह विश्व के लिये एक उदाहरण है। इस पद से रिटायर होने के बाद पाकिस्तान ने उन्हें, संयुक्त राष्ट्र में अपना प्रतिनिधि बनाना चाहा परन्तु उन्होंने इसलिये इन्कार कर दिया क्योंकि इसके लिये उन्हें भारत की नागरिकता त्यागनी पड़ती।

गोरखपुर के न्यायिक इतिहास में परिणय परिवार एक महत्वपूर्ण नाम है। छोटूलाल जी 19वीं सदी के अन्त में बैरिस्टर के रूप में ख्याति प्राप्त किये इनके दो पुत्र थे। ईश्वर शरण वकील थे और गल्लू शरण लन्दन से बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त की थी। शम्भूशरण जी अपनी वकालत के अतिरिक्त अपने अनूठे वस्त्र विन्यास के लिए भी जाने गये। ईश्वर शरण के पुत्र शंकर शरण, गोरखपुर से वकालत करने के पश्चात् उच्च न्यायालय में अधिवक्ता और त्तपश्चात सन् 1946 से 1953 तक उच्च न्यायलय के न्यायधीश रहे। वे इतिहासविद् थे और स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमती एनीबेसेन्ट के अत्यन्त निकटस्थ रहे। थियोसिफकल सोसाइटी एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय के स्थापना में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमि रही। इनके दूसरे पुत्र शेखर शरण ने उच्च न्यायालय में फौजदारी के अधिवक्ता के रूप में नाम कमाया। शेखर शरण जी के पुत्र अमर शरण भी उच्च न्यायालय में जज बने।

एक अन्य महत्वपूर्ण नाम गोरखपुर के विधि व्यवसाय के क्षेत्र में श्री अयोध्या प्रसाद का है जो लन्दन के 'इनर टेम्पिल' से बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् यहाँ के ख्यातिलब्ध अधिवक्ता बने। उस युग में बालिकाओं की शिक्षा के महत्व को समझकर बालिकाओं के लिये थियोसिफिल स्कूल की स्थापना की, जो आज ए.डी. इण्टर कॉलेज के नाम से जाना जाता है।

राय बहादुर नरसिंह प्रसाद, जिनके नाम से नरसिंहपुर मुहल्ला बसा है, के फौजदारी व सिविल के ख्यातिलब्ध अधिवक्ता थे। उन्होंने शहर की अपनी समस्त भूमि डी.ए.

एडवोकेट, सहायक शासकीय अधिवक्ता (राजस्व), आयुक्त न्यायालय, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर

बी. कॉलेज के लिये प्रदान कर दी। तत्कालीन गोरखपुर एजुकेशनल सोसायटी द्वारा संचालित विद्यालय के लिये जो भूमि बाबू गरीब दास द्वारा दी गयी थी, उसका भवन बनाने में भी इनका योगदान था। किरायेदारी के सम्बन्ध में इनकी पुस्तकें राष्ट्रीय स्तर पर पढ़ी जाती है। न्यायमूर्ति विन्ध्यवासिनी प्रसाद ने एक अधिवक्ता के रूप में बड़ा नाम कमाया। यहाँ वकालत के पश्चात् उच्च न्यायालय में अधिवक्ता एवं सन् 1947 से 1953 तक उच्च न्यायालय के न्यायधीश रहे। पण्डित हरिश्चन्द्रपति त्रिपाठी यहाँ के श्रेष्ठ अधिवक्ता रहे। यहाँ के डी.जी.सी. फौजदारी एवं उच्च न्यायालय में गवर्नमेन्ट काउन्सिल रहने के बाद सन् 1963 से 1971 तक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे। गोरखपुर के एक प्रतिष्ठित अधिवक्ता पण्डित रामवृक्ष मिश्र, इलाहाबाद उच्च न्यायालय में सन् 1968 से 1981 तक जज रहे। इसके बाद उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति के रूप में सन् 1981 से 1986 तक गोरखपुर को गौरव प्रदान किया।

लन्दन के "ग्रेज्रइन" से बैरिस्टर चारुचन्द्र दास ने विधि व्यवसाय को एक नया सम्मान दिया। एक बार उनके बीमार होने पर अंग्रेज न्यायाधीश ने उनके घर पर जाकर कोर्ट लगाया, और वहां जाकर बहस सुनी। उनकी कोई सन्तान नहीं थी, और उनकी मृत्यु टी.वी. बीमारी से हुई। चारुचन्द्र दास ट्रस्ट के माध्यम से उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति जन सेवा को अर्पित कर दी। इनके नाम से चारुचन्द्रपुरी कॉलोनी विकसित है। पं. बब्बन मिश्र, दीवानी मामलों के वरिष्ठ अधिवक्ता रहे। गोरक्षपीठ के अत्यन्त निकटस्थ पं. मिश्र गो.वि.वि. की स्थापना में ब्रह्मलीन महन्थ जी के प्रतिनिधि के रूप में सक्रिय रहे। पं. हरिहर प्रसाद दूबे एक अन्य बड़ा नाम है, जिसने वकालत पेशे को गरिमा प्रदान की। दीवानी मामलों के ख्यातिलब्ध अधिवक्ता पं. दूबे गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थापना समिति के सक्रिय सदस्य रहे विश्वविद्यालय कार्य समिति के सदस्य बने। नाथ चन्द्रावत ट्रस्ट के वे ट्रेस्टी रहे। विडम्बना है कि उनका निधन विश्वविद्यालय कार्य समिति की बैठक के दौरान हुआ। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में हिन्दू महासभा के अध्यक्ष रहे, फौजदारी मामलों के अधिवक्ता के रूप में ख्यातिलब्ध लक्ष्मीशंकर वर्मा के ब्रह्मलीन महन्थ दिग्विजय नाथ जी एवं गोरख पीठ से अत्यन्त निकट सम्बन्ध थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय स्थापना समिति के वे सदस्य तथा नगरपालिका के भी अध्यक्ष चुने गये।

इस कड़ी में बैरिस्टर शाकिर अली जो काकोरी के रहने वाले थे, लेकिन गोरखपुर को उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र बनाया, का उल्लेख और फौजदारी के बड़े अधिवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। काकोरी काण्ड के शहीद रोशन सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल एवम् अशफाकउल्लाह के समय वे अधिवक्ता रहे। रायबहादुर रामनरायन लाल एक समय में एक साथ दीवानी, फौजदारी और राजस्व मामलों के शासकीय अधिवक्ता रहे। उललेखनीय है कि तब गोरखपुर जिले में देवरिया और महाराजगंज जिले भी शामिल थे। यह उनका व्यक्तिव था कि पण्डित नेहरु के विरुद्ध सरकारी वकील के रूप में पैरवी करने से उन्होंने इन्कार कर दिया। उनकी पौत्री पूनम नारायन इलाहाबाद हाईकोर्ट की न्यायाधीश रही है।

ठाकुर सिंहासन सिंह प्रख्यात स्वतन्त्रता सेनानी एवं सांसद रहे। फौजदारी मामलों के अधिवक्ता के रुप में उन्होंने बहुत नाम कमाया। ब्रह्मलीन महन्थ दिग्विजय नाथ जी के अत्यन्त निकटस्थ ठाकुर सिंहासन सिंह, नाथ चन्द्रावत ट्रस्ट प्रकरण में वे उनके अधिवक्ता रहे। गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में उनका योगदान रहा तथा वे विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति भी बनाये गये थे।

गोरखपुर में वकालत पेशे में मुख्तार गुलाबदत्त राजस्व मामलों में एक हस्ताक्षर रहे हैं। ब्रह्मण शिक्षा परिषद के माध्यम से तुलसीदास महाविद्यालय की स्थापना के लिए उन्होंने अपनी भूमिदान कर दी थी। पण्डित जी के हंसमुख एवं हाजिर जबाबी के बारे में एक प्रसंग कहा जाता है। "एक बार जल्दीबाजी में वे बिना जूता पहने न्यायालय में उपस्थित हो गये थे, तो अंग्रेज कमिश्नर ने पूछा कि पण्डित जी आपके जूते कहाँ है, इस पर उन्होंने मुस्कराते

हुए कहा कि श्रीमान् मैं तो समझता था कि आपको मेरे तर्कों की आवश्यकता है, मुझे नहीं पता था कि आपको मेरे जूते भी चाहिए।''

बाबू परमेश्वरी दयाल और सूरजबली लाल मुख्तार ने कमिश्नरी कचहरी में मुख्तार के रूप में अपनी बड़ी पहचान बनायी। ठाकुर सुखदेव प्रसाद और केशव प्रसाद दीवानी मामलों के बड़े अधिवक्ता थे, और गोरखपुर विश्वविद्यालय के निर्माण कमेटी के सदस्य रहे। सरहरों के प्रतिष्ठित जमीदार परिवार से जुड़े राय राजेश्वरी प्रसाद अधिवक्ता के अतिरिक्त सेन्टर एन्ड्रयूज कॉलेज, गोरखपुर के विधि विभाग के अध्यक्ष तथा विधान परिषद सदस्य रहे तथा गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। विन्देश्वरी नरायन चन्द भी फौजदारी मामलों के बड़े अधिवक्ता हुए और बेहद प्रतिष्ठित कायस्थ परिवार से जुड़े थे। उनका भी गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान था। रायबहादुर अभय नन्दन प्रसाद कमिश्नरी के प्रख्यात अधिवक्ता थे। गोरखपुर में प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का निर्माण उनके द्वारा कराया गया तथा अभयनन्दन कॉलेज उसके परिवार द्वारा संचालित है। वरिष्ठ अधिवक्ता जगदम्बा प्रसाद जी सिविल व फौजदारी मामले में समान योग्यता रखते थे। योगेश्वर प्रसाद उच्च न्यायालय में एडवोकेट जरल रहे और एक मुकदमें में बहस के लिये लाहौर हाईकोर्ट भी गये। गुरु प्रसाद सरकारी एवं उनके पुत्र प्यारे मोहन सरकार से प्रारम्भ सरकार परिवार की परम्परा अगली दो पीढ़ियों तक जारी है। एक शताब्दी से यह परिवार लगातार वकालत पेशे में है।

वर्तमान समय में कुल सात अधिवक्ता आज भी सक्रिय है, जिन्होंने जीवन के 6 दशक से अधिक का समय विधि व्यवसाय एवं समाज को दिया है। कमिश्नरी से राय अन्नपूर्णा प्रसाद, प्रेम नारायण श्रीवास्तव एवं गोलोक नारायण सेवक पाण्डेय जी; दीवानी न्यायालय से श्रीकृष्ण जी श्रीवास्तव एवं केशरीचन्द तथा कलेक्ट्रेट से चन्द्रमौल शाही एवं शंकर प्रसाद गुप्त, जीवन के 60 वर्षों से अधिक का समय व्यतीत कर आज भी सक्रिय हैं।

इस गोरखपुर के विस्तृत इतिहास में एक से एक नगीने अधिवक्ता के रूप में पहचान बनाने में सफल हुए और विभिन्न क्षेत्रों में योगदान देकर इस क्षेत्र का मान बढ़ाया, जिसमें से कुछ उदाहरणों को संकलित करने का प्रयास किया गया है।

मातृशक्ति और लोक परम्पराएं

डॉ. मनोज कुमार गौतम

भारत आदि देश है और आदि काल से ही (सृष्टि की रचना काल से) मातृशक्ति अतुलनीय रही है। सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड की रचना में स्त्री सबसे अद्‌भूत तथा सुन्दर रचना है और यही सृजन का मुख्य स्रोत है। सम्पूर्ण वैदिक काल में स्त्रियों का आदर था। कन्या, स्त्री और माता के रूप में यह प्रतिष्ठित रही है तथा कन्या के रूप में वह लालित-पालित होती थी। उस समय उसको उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। घोषा, लोपामुद्रा, विववारा इत्यादि वैदिक स्त्रियों की गिनती ऋषियों में थी और उन्होनों वैदिक सुक्तों की रचना की थी। स्त्री रूप में वह घर की सम्राज्ञी थी और उसके पास धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार पति के समान ही थे। वैदिक काल की स्त्रियों को पर्दे के भीतर नहीं रखा जाता था और उसको घूमने फिरने की स्वतंत्रता थी। यहाँ तक की कुछ स्त्रियाँ रणकुशल होती थीं और पति के साथ वह युद्ध स्थल में जाती थीं। सभा और समितियों में स्त्रियाँ प्रतिभाग करती थीं, किन्तु ज्वलन्त मुद्‌दों पर वाद विवाद के समय वहाँ उनका जाना अनुचित समझा जाता था।

भारत वर्ष में पारम्परिक और ऐतिहासिक रूप से मातृशक्ति की अवधारणा प्रगाढ़ एवं चिरस्थायी है। यहाँ पर धारती को मातृशक्ति के रूप में पूजा जाता है। पार्वती, महिषासुरमर्दिनी, गौरी, सरस्वती, लक्ष्मी इत्यादि हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठित एवं प्रमुख देवियों में प्रतिपादित हैं। यहाँ तक की प्राकृतिक रूप से जीवन दायिनी गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, सरयू, कृष्णा एवं गोमती इत्यादि नदियों को भी मातृशक्ति के रूप में प्रतिस्थापित किया गया है। भारतीय धर्मशास्त्र में नारी सर्व शक्ति सम्पन्न मानी गयी तथा विद्या, शील, ममता, यश और सम्पत्ति का प्रतीक मानी गयी है। गृह की सम्राज्ञी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया तथा घर के अन्य सदस्यों को उसके शासन में रहने के लिये निर्देशित किया गया।[1] धीरे-धीरे समाज में उसका महत्व इतना बढ़ा कि उसके बिना अकेला पुरुष अपूर्ण और अधूरा माना गया।[2] पुरुष शब्द की निर्मित स्त्री सन्तान और व्यक्ति की समिष्ट मानी गयी है। शास्त्रकारों का कथन है कि केवल पुरुष कोई वस्तु नहीं अर्थात वह अपूर्ण ही रहता है, किन्तु स्त्री, स्नेह तथा सन्तान ये तीनों मिलकर ही पुरुष (पूर्ण) होता है और जो पति है, वही स्त्री है अतएव उस स्त्री से उत्पन्न सन्तान उस स्त्री के पति की होती है।[3] इस प्रकार स्त्री पुरुष की शरीरार्द्ध और अर्धांगिनी मानी गयी तथा श्री और लक्ष्मी के रूप में वह मनुष्य के जीवन को सुख और समृद्धि से दीप्ति और पुंजित करने वाली कही गयी है।[4] उसका आगमन पुरुष के लिए शुभ, सौरभमय और सम्मान जनक था, जिसके सम्पर्क से उसका व्यक्तित्व मुखर हो उठता था। मनुष्य विवाहोपरान्त जब तक भार्या को प्राप्त नहीं कर लेता था, तब तक वह आधा ही कहा जाता था। आधा शरीर सब कुछ नहीं कर पाता था और प्रजोत्पत्ति भी पूरा शरीर होने पर ही हो सकती थी तथा पूरा शरीर अर्थात शरीर की पूर्णता विवाहिता पत्नी से ही सम्भव थी।

मातृशक्ति की प्रस्थापना आधुनिक नहीं है, यह अति प्राचीनतम काल से चली आ रही है, जिसकी पुष्टि पुरातात्विक साक्ष्यों से हो जाती है। मातृशक्ति ने सर्वथा उच्चतम स्थान को प्राप्त किया है। मनु का कथन है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र: देवता:'' और इसी भावना से भारत वर्ष में सभी देवों की शक्तियों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वस्तुत: सभी देवता इन्हीं शक्तियों के बल पर अलौकिक कार्य करने में सक्षम माने गये हैं। शास्त्रों में यहाँ तक कहा गया है कि शक्ति के बिना 'शिव' एक शव मात्र रह जाते हैं। कहने का तात्पर्य है कि मातृशक्ति जगत जननी है और इसकी कृपायों के बिना जगत का कल्याण सम्भव नहीं है।

उप निदेशक, राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर, दूरभाष : 09456275329

शक्ति स्वरूपा मातृशक्ति के स्वतंत्र पूजा की परम्परा समूचे विश्व में आदि काल से प्रस्थापित है। सिन्धु सभ्यता युग में बहुतायत संख्या में प्राप्त मातृ मृण्मूर्तियाँ तत्कालीन समाज में मातृपूजा के व्यापक प्रचलन का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। ब्राम्हण तथा अरण्यक ग्रन्थों में मातृशक्ति को अम्बिका, उमा, दुर्गा, गौरी, काली आदि प्रमुख नामों से जाना जाता है। महाभारत, हरिवंशपुराण तथा मार्कण्डेय पुराण में आदि शक्ति दुर्गा की स्तुतियाँ हैं जिसमें उन्हें जगन्माता तथा जगदम्बा कहा गया है, जो उनके मातृ स्वरूप को उजागर करता है।[5]

पौराणिक ग्रन्थों में मातृका के रूप में सप्त मातृकाओं का उल्लेख प्रमुखता से मिलता है। इन मातृकाओं के उत्पत्ति की एक कथा वाराहपुराण में मिलती है। जिसमें कहा गया है कि एक बार अन्धकासुर के शरीर से निकले रक्त की एक एक बूँद पृथ्वी पर गिरते ही उसी के समान शक्तिशाली अन्धकासुर उत्पन्न हो रहे थे। अन्त में शिव के क्रोध से एक ज्वाला उत्पन्न हुई, जो योगेश्वरी मातृका के नाम से जानी गयी तथा इसी प्रकार अन्य देवों के तेज से उनकी शक्तियाँ उत्पन्न हुई। इन्हीं मातृकाओं ने अन्धकासुर के अंग से निकलती रक्त की बूँदों को पृथ्वी पर गिरने से पहले ही पीना शुरू कर दिया और तब जाकर अन्धकासुर मारा गया। देवों की शक्ति से उत्पन्न मातृकाओं की संख्या सात होने के कारण इन्हें सप्त मातष्टका कहा गया –

वाराही चैव कौमारी चामुण्डा भैरवी तथा ।
माहेन्द्री वैष्णवी चैव ब्रह्माणी सप्तमातरः ।।

ये शक्तियाँ जिन देवों से उत्पन्न हुई वे इस प्रकार हैं– वाराही–वराह विष्णु, कौमारी–कार्तिकेय, चामुण्डा–यम, भैरवी–शिव, माहेन्द्री–इन्द्र, वैष्णवी–विष्णु तथा ब्रह्माणी–ब्रह्मा की शक्तियाँ थीं।[6] गुप्त काल से लेकर मध्यकाल तक सप्तमातृकाओं का महत्व बढ़ता ही गया। मृण्ण् एवं प्रस्तर मूर्तियों में इनका अंकन बहुतायत होने लगा और इस समय तक इन देवियों के साथ ही साथ उनके वाहनों का भी अंकन किया जाने लगा था और उनकी गोद में बालकों का भी अंकन किया जाने लगा था। इन सप्त मातृकाओं को आसनस्थ मुद्रा तथा नृत्य मुद्रा में बहुधा दर्शाया गया है तथा मध्य काल आते आते इन सप्त मातृकाओं को अलग–अलग स्वतंत्र रूप में दिखाया जाने लगा था। विभिन्न शिल्प ग्रन्थों में उनके मूर्ति निर्माण के लिये स्वरूप निर्धारण भी किया गया था, जिसमें विष्णुधर्मोतरपुराण, अपराजितपृच्छा एवं रूपमण्डल विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

प्रमुख मातृशक्ति एवं लोक देवियाँ

ब्रह्मा, विष्णु और महेश भारत में सर्वाधिक पूज्य देवता माने गये हैं। इन्हीं त्रिदेवों के साथ उनकी शक्तियाँ (सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती) भी प्रारम्भ से ही पूजी गयी हैं। विष्णुपुराण में इन त्रिदेवों को ब्रह्म की प्रधान शक्तियाँ बताया गया है– ब्रह्मा विष्णु शिवा ब्रह्मन प्रधाना ब्रहमशक्तयः।[7] इसी आधार पर सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा भी देवी भागवत और दुर्गासप्तशती में एक ही शक्ति मानी गयी हैं, जो देवताओं के तेज से उत्पन्न बारी बारी से दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती बनती हैं –

काल्याश्चैव महालक्ष्मयाः सरस्वत्त्यः क्रमेण च[8] शिव वस्तुतः ब्रह्मा, विष्णु क्रमशः सत्व, रजस और तमस गुणों के प्रतीक देव हैं और इन्हीं गुणों के प्रतीक स्वरूप सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा देवियाँ हैं।

सरस्वती : आदि शक्ति का सत्वप्रधान रूप सरस्वती कहलाता है। सरस्वती विद्या तथा संस्कृति की देवी मानी जाती हैं। उन्हें भारती, वाक्‌देवी, वागेश्वरी, वाणी इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। वे वैष्णव, शैव, शाक्त तथा अन्य सभी सम्प्रदाओं की अराध्य देवी हैं। बौद्ध तथा जैन भी इनकी पूजा अर्चना करतें हैं। बौद्धानुयायी इन्हें मंजुश्री की आत्मा मानते हैं तथा जैन ग्रन्थों में मेधा, बुद्धि या श्रुत देवता के रूप में वर्णित हैं। सरस्वती का सम्बन्ध मुख्यतः ब्रह्मा से जोड़ा जाता है। परन्तु लक्ष्मी का ही सात्विक स्वरूप होने से इन्हें विष्णु की सहचरी के रूप में भी स्वीकार किया गया है। श्रीदेवी और भूदेवी विष्णु की दो पत्नियों को सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में पहचाना जाता है, किन्तु इस देवी की भी स्वतंत्र पूजा होती थी। इसका प्रमाण उसकी स्वतंत्र मूर्तियाँ हैं। ब्रह्मा का महत्व कम हो जाने पर भी सरस्वती की पूजा बराबर की जाती रही है और वह आज भी समाज में प्रचलित है।

लक्ष्मी : लक्ष्मी देवी को प्रारम्भ से ही एक स्वतंत्र और सम्पूज्य देवी के रूप में प्रतिष्ठापित रही है। लक्ष्मी सृजन, सम्पन्नता तथा सौभाग्य की देवी के रूप में जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण तीनों सम्प्रदायों में प्राचीन काल से ही पूजी जाती रही हैं और पद्म तथा गजाभिषेक से समन्वित श्री लक्ष्मी का स्वरूप श्री सुक्त से ही मिलने लगता है। आगे चलकर महाकाव्यों, पुराणों, पालि, प्राकृत तथा संस्कृत साहित्य में लक्ष्मी के विभिन्न नामों एवं स्वरूपों का उल्लेख मिलता है।

1 **कमला या पदमा** – कमल या पद्म के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण इन्हें पदमा या कमला कहा जाता है। श्रीसुक्त में लक्ष्मी के इस स्वरूप का विस्तृत विवरण मिलता है जिसमें पदमा, पदमानना, पदसंभवा, पदमस्था, पदमेष्ठिता, पद्मवास आदि। श्रीसुक्त में ही लक्ष्मी को समस्त प्राणियों की जननी तथा पुत्र–पौत्र, धन–धान्य, सौभाग्य आदि की प्रदाता बताया गया है।

2 **गजलक्ष्मी** – पौराणिक मान्यता के अनुसार देवों और असुरों के द्वारा सागर मन्थन करने से उत्पन्न 14 रत्नों में लक्ष्मी, पद्म और ऐरावत हाथी भी थे। एक साथ सागर के गर्भ से निकलने के कारण ही सम्भवत: पद्म लक्ष्मी का आसन और गज उनके अभिषेक सेवक। गजों के द्वारा लक्ष्मी के अभिषेक वाली मूर्तियाँ बनाने का निर्देश विष्णुधर्मोत्तर पुराण[9], मत्स्यपुराण[10], मानसार[11], समरांगणसूत्र[12], इत्यादि अनेक ग्रन्थों में पाया जाता है।

दुर्गा या महिषमर्दिनी : दुर्गा शाक्त सम्प्रदाय की प्रमुख देवी हैं। इसे आद्याशक्ति के तमोगुण के रूप में पूजा जाता है। वस्तुत: शाक्त सम्प्रदाय की तीनों प्रमुख देवियाँ महालक्ष्मी, महाकाली एवं महासरस्वती दुर्गा के ही रूप हैं। दुर्गा को सभी देवताओं ने अपना–अपना तेज और अपने–अपने आयुध देकर उसे अलौकिक शक्ति प्रदान कर पूजा की और तब जाकर उस देवी ने असुरों का विनाश किया था। महाभारत के विराट तथा भीष्म पर्व में देवी दुर्गा के स्त्रोत मिलते हैं। मार्कण्डेय पुराण में देवी माहात्य के अन्तर्गत दुर्गा और उसकी उपासना पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।[13]

दुर्गा को आदिशक्ति महामाया के रूप में अलौकिक शक्ति सम्पन्न एवं चण्ड–मुण्ड, शुंभ–निशुंभ तथा महिष नामक असुरों का विनाश करके देवताओं की रक्षा करने वाली देवी माना गया है। जब महिषासुर नामक असुर के अत्याचारों से सभी देवता प्रताणित हो रहे थे तब देवताओं की प्रार्थना पर आदि शक्ति ने दुर्गा का उग्र रूप धारण करके महिषासुर का विनाश किया और इसका विनाश करने के कारण ही महिषमर्दिन अथवा महिषासुर मर्दिनी नाम अधिक प्रसिद्ध तथा प्रचलित हो गया। लोक परम्पराओं में आज भी चैत्र एवं शारदीय नवरात्र में देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है जो इस प्रकार हैं–

(i) **शैल पुत्री** – वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतषेखराम्
वषारूढ़ामं शूलधरां शैलपुत्री यषस्विनीम्।।

देवी दुर्गा अपने पहले स्वरूप में शैलपुत्री के नाम से जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालय के यहाँ पुत्री के रूप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम शैलपुत्री पड़ा।

(ii) **ब्रह्मचारिणी** – दधाना करपद्माभ्यामक्षमाला कमण्डलू
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

देवी दुर्गा के नव शक्तियों का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का है। यहाँ ब्रह्म शब्द का अर्थ तपस्या से है। ब्रह्मचारिणी देवी का स्वरूप पूर्ण ज्योर्तिमय एवं अत्यन्त भव्य है।

(iii) **चन्द्रघण्टा** – पिण्डजप्रवरारूढ़ा चण्डकोपास्त्रकैर्युता
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता।।

दुर्गा जी के तीसरी शक्ति का नाम चन्द्रघण्टा है। देवी का यह स्वरूप परम शान्ति दायक और कल्याणकारी है।

(iv) **कूष्माण्डा** – सुरासम्पूर्णकलषं रूधिराप्तलुतमेव च
दधाना हस्तपदमाभ्यं कूष्माण्डा शुभदास्तु मे।।

देवी का चौथा स्वरूप कूषमाण्डा नाम से विख्यात है।

(v) **स्कन्दमाता** – सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यषस्विनी।।

भगवान स्कन्द की माता होने के कारण दुर्गा जी का पाचवाँ स्वरूप स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है।

(vi) **कात्यायनी** – चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना
कात्यायनी शुभं दद्याद्वी दानवघातिनी।।

देवी दुर्गा का छठा स्वरूप कात्यायनी नाम से प्रचलित है। ऋषि कात्यायन के घर पुत्री के रूप में अवतरित हुई, जिसके कारण इन्हें कात्यायनी कहा गया।

(vii) **कालरात्रि** – एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता
लम्बोष्ठि कर्णिकाकर्णि तैलाभ्यक्तषरीरिणी
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्कभूषणा
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयंकरी।।

महिषमर्दिनी का सातवाँ स्वरूप कालारात्रि के नाम से सुविज्ञ है।

(viii) **महागौरी** – श्वेते वृषे समारूढ़ा श्वेताम्बरधरां शुचि:
महागौरी ष्ठुभं दद्यानमहादेवप्रमोददा।।

माँ दुर्गा जी की आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। चूँकि इनका वर्ण गौर है इसलिए इन्हे महागौरी के नाम से जाना जाता है।

(ix) **सिद्धिदात्री** – सिद्धगन्धवर्यक्षद्यैरसुरैरमरैरपि
सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

मातृ दुर्गा की नवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अणिका, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ होती हैं, किन्तु ब्रह्मवैवर्त्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्मखण्ड में इनकी संख्या 18 बतायी गयी है।

लोक देवियाँ – प्राचीन काल से ही भारतीय समाज एवं संस्कृति में लोक देवियों का स्थान बहुत प्रचलित और प्रस्थापित रहा है तथा इनकी श्रृंखला की सूची भी बहुत लम्बी है। जबकि उपर्युक्त विवरण में कुछ प्रमुख मातृशक्तियों का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस प्रस्तुत लेख में कुछ प्रमुख लोक देवियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूँ।

मातृकाओं एवं लोक देवियों की महिमा का वर्णन शास्त्रों के अतिरिक्त लोकश्रुतियों एवं स्थानीय रूप से बहुतायत हुआ है और इसकी मान्यता भी बहुत प्रगाढ़ है। जिसका विवरण हमें सिन्धु सभ्यता से लेकर आजतक लगातार मिलता है और हमारे सामाजिक संस्कृतियों में जीवित हैं। इन लोक देवियों का अस्तित्व विभिन्न कालों में स्वतंत्र रूप से भी देखने को मिलती है, जिसमें कुछ प्रमुख लोकदेवियों का वर्णन करने का प्रयास किया किया है। वसुधारा, एकानंशा, ष्षष्मुखी ष्षष्ठी तथा नदी देवियों में गंगा-यमुना इत्यादि को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

(क) **एकानंशा** – एकानंशा कृष्ण और बलराम की वह बहन थी जिसे कंस ने जब पटका था तब वह छिटककर आकाश में चली गयी थी, जिसका उल्लेख हरिवंशपुराण, विष्णु, अग्नि आदि अनेक पुराणों में मिलता है।[14] विष्णुधर्मोत्तर तथा वृहतसंहिता में भी इस देवी के रूपों का वर्णन है। मथुरा में कुषाण कालीन ऐसी तीन मूर्तियाँ मिली हैं जिनमें कृष्ण और बलराम के बीच देवी का अंकन है और जो आकार में भाईयों से छोटी बनायी गयी हैं।[15] कुषाण कालीन एकानंशा की मूर्ति हरियाणा के गुड़गाँव जिले में संघेल नामक स्थान से मिली है और सम्प्रति चण्डीगढ़ में हरियाणा पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग में संरक्षित है।[16] इस तरह की अनेक मूर्तियाँ देश के अन्य भागों से भी प्राप्त हुई हैं, जो इस परम्परा को प्रासंगिक बनाती हैं।

(ख) **गंगा-यमुना** – गंगा तथा यमुना हमारे देश की प्रमुख तथा पवित्र नदियाँ हैं। पहले वैदिक युग में सिन्धु तथा सरस्वती नदियों की स्तुतियाँ की जाती थीं। कालान्तर में सरस्वती के विलुप्त हो जाने और आर्यावर्त में आर्य संस्कृति के फैल जाने पर गंगा-यमुना और भी महत्वपूर्ण हो गयीं। हमारे यहाँ मन्दिर में प्रवेश करने से पूर्व पवित्र नदियों में स्नान करने की परम्परा थी। किन्तु गुप्त काल से इन नदियों को मन्दिर के प्रवेश द्वार पर ही स्थापित किया जाने लगा, जिससे यह ज्ञात होता है कि स्नान न कर पाने वाले भक्त इनके दर्शन मात्र से पवित्र हो जाता था। आगे चलकर अधिकांशत: प्रमुख मन्दिरों के प्रवेश द्वार पर नदी-देवियों की मूर्तियाँ आवश्यक रूप से स्थापित की जाने लगी थीं। इसके अतिरिक्त अन्य लोक देवियों का उल्लेख अन्य ग्रन्थों एवं साहित्यों में मिलता है जिसका

सूक्ष्म उल्लेख कर रहा हूँ- अदिति, उषा, आभा, अरूंधती, दीपाली, दीप्ति, इन्दु, ज्योत्सना, कुमारी, कुन्ती, लावण्या, रति, रूक्मणि, राधा, सावित्री, सीता, विद्या इत्यादि महत्वपूर्ण लोक देवियों के नामों का उल्लेख किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त भी प्रादेशिक रूप से अनेक मातृशक्तियों का प्रचलन विद्यमान है।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि मातृशक्ति की गरिमा माता के रूप में सर्वमान्य थी और उसका पद पिता और आचार्य से भी ऊँचा समझा जाता था।[17] समाज वहिष्कृता माता भी अपने पुत्र के लिये त्याज्य नहीं हो सकती[18] पतित होने पर पिता परित्याज्य हो सकता है, परन्तु माता कदापि नहीं।[19] कुल मिलाकर माता मातृशक्ति के रूप में सर्वपूजित है जो ब्रह्म सत्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. अथर्ववेद 14-14 ।
2. शतपथ ब्राह्मण 5-2-10, मनु 9-45
   एतानेव पुरुषो मज्जाऽऽत्मांप्रजेति ह,
   विप्राः प्राहुस्तथा चैतद्योभती सा स्मृतांगना।।
3. महाभारत आदिपर्व 74-40, वृहस्पति 25-11 ।
4. वृहस्पति संहिता 74.5, 5, 11, 15-16, मनु स्मृति 9-26 ।
   प्रजानार्थ महाभागाः पूजहागृहदीप्तयः
   स्त्रियः श्रियश्च गेहेषुन विषेषोऽरित कष्चन।।
5. डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय देव मूर्तियाँ, पृ. 64, संस्कृति विभाग, उ.प्र. लखनऊ, 1998।
6. नीलकण्ठ पुरूषोत्तम, जोशी, ब्रह्मैनिकल स्कल्पचर्स इन दी स्टेट म्यूजियम, लखनऊ, भाग-1, पृ. 55-56।
7. विष्णुपुराण, 1-22-58।
8. देवी भागवत पुराण, 10-12-82।
9. आवर्जितघटं कार्यं तत्पृष्ठे कुंजरद्वयम्- वि.ध.पुराण, 3-82-7।
10. करिभ्यां स्नाष्यमानाऽसौ, मत्स्यपुराण, 260-46।
11. द्वारमण्डलमध्यस्थां स्नाप्यमानां गजात्तमैः, समरांगण सूत्रधार, 34-28।
12. पद्मस्था पद्हस्ता च गजोष्क्षिता घटप्लुता, चतुर्वर्गचिन्तामणि, विराट खण्ड, पृ. 76।
13. डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय देव मूर्तियाँ, पृ. 73, संस्कृति विभाग, उ.प्र. लखनऊ, 1998।
14. वही, पृ. 76।
15. नीलकण्ठ पुरूषोत्तम, जोशी, प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, रेखाचित्र, 80-81 ।
16. हाण्डा, देवेन्द्र, संग्रहालय पुरातत्व पत्रिका सं. 29-30, पृ. 41-43।
17. गौतम- 20-51।
18. बौधायन धर्मसूत्र, 2-2-48।
19. वशिष्ठ, 13-47।

पर्यटन की नई तस्वीर के रूप में उभरता गोरखपुर

के. विजयेन्द्र पाण्डियन

प्रसिद्ध तपस्वी संत गुरू मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य महायोगी गोरखनाथ जी के नाम पर गोरखपुर का नाम पड़ा जो राप्ती-रोहिन के संगम पर अवस्थित है। आत्म नियंत्रण के बल पर गोरखनाथ जी हठयोग को विशेष बल देते हुए वर्षनुवर्ष एक ही मुद्रा में धुनी रमाये तपस्या किया करते थे। निर्गुण भक्ति के महत्वपूर्ण सन्त कबीर को इस भूमि पर ही शान्ति प्राप्त हुयी। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन, उर्दू कवि फिराक गोरखपुरी, प्रसिद्व हिन्दी लेखक मुंशी प्रेमचंद आदि प्रतिष्ठित साहित्यकारों को इस भूमि ने जन्म दिया। शहीद बन्धू सिंह, महान देश भक्त पंडित राम प्रसाद बिस्मिल एवं अन्य क्रांतिकारियों की वीरता का गवाह यह भूमि है। गोरखपुर अनेक आध्यात्मिक, पुरातात्विक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहरों को समेटे हुए है जिसमें प्रमुख रूप से श्री गोरखनाथ मन्दिर, विष्णु मन्दिर, गीता प्रेस, गीता वाटिका, इमामबाड़ा, मुंशी प्रेमचंद उद्यान, सूर्यकुंड, झारखंडी मन्दिर आदि प्रसिद्व हैं। यहां की परम्परा एवं संस्कृति का दर्शन यहां के लोगों के रहन-सहन तथा प्रतिदिन की दिनचर्या में किया जा सकता है। यहां लोकगीतों एवं लोक नृत्यों की समृद्ध परम्परा है। गायन एवं वादन में विभिन्न वाद्य यंत्रों के माध्यम से आल्हा, कजरी, करहवा, फाग, इत्यादि की अपनी अलग ही पहचान है।

नाथ सम्प्रदाय कर प्रतिष्ठित श्री गोरक्षपीठ एवं गुरू गोरक्षनाथ की तपोस्थली में बना विशाल एवं भव्य श्री गोरखनाथ मन्दिर आज सम्पूर्ण भारत को आलोकित कर रहा है। यहां मकर संक्रांति के दिन गुरू श्री गोरक्षनाथ जी को खिचड़ी चढ़ाने की परम्परा है और एक महिने का मेला लगता है। देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु यहां खिचड़ी चढ़ाने आते हैं। भारत सरकार के स्वदेश दर्शन योजना के अन्तर्गत गोरखनाथ मन्दिर परिसर में साउंड एंड लाइट शो के माध्यम से नाथ परम्परा के बारे मे जानकारी दिया जाता है।

गोरखपुर का गीताप्रेस सन् 1923 से धर्म और अध्यात्म का प्रकाश फैला रहा है। भारतीय संस्कृति एवं सनातन धर्म से संबंधित धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन एवं प्रसार में सबसे बड़ा नाम गीता प्रेस का है। यह आधुनिक तकनीकी अपना कर आज भी देश एवं विदेश में अपनी अलग पहचान बनाये रखने में सफल है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक पुस्तकें छापने वाले, भारत का सम्भवतः सबसे बड़ा मुनाफा रहित प्रकाशन संस्थान 'गीता प्रेस' निरन्तर बढ़ रहा है।

गोरखपुर में स्थित 1700 एकड़ में फैला रामगढ़ताल केवल शहर के लिए ही जल का एक बड़ा स्त्रोत नहीं बल्कि पर्यटन का एक मुख्य केन्द्र भी है। इसी दृष्टि से सरकार ने इस ऐतिहासिक ताल के आसपास के क्षेत्रों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित कर दिया है। रामगढ़ ताल के चारों तरफ सड़क का निर्माण कराया गया है एवं बच्चों के खेलने के लिए पिकनिक स्पाट, चिड़ियाघर, रामगढ़ ताल पर वाटर स्पोर्ट्स व रंगकर्मियों के लिए राष्ट्रीय स्तर की बहुआयामी प्रेक्षागृह का निर्माण, तारामंडल क्षेत्र में स्थित मुक्ताकाशी प्रेक्षागृह का जीर्णोद्धार शासन द्वारा कराया गया है। सरकार की यह मंशा है कि वाटर स्पोर्ट्स के सहारे यहां मनोरंजन के साथ-साथ युवाओं को प्रशिक्षण मिले, जिससे युवाओं को रोजगार के मौके भी उपलब्ध हो सकें।

बुद्धिस्ट सेंटर के केन्द्र बिन्दु गोरखपुर में इस वर्ष 11 जनवरी से 13 जनवरी, 2020 तक गोरखपुर महोत्सव को आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव में शिल्प मेला का भी आयोजन किया जा रहा है जिसमें यहां की लोक कलाओं के साथ विधाओं के महान कलाकार प्रतिभाग

जिलाधिकारी, गोरखपुर

करेंगें जिससे पर्यटक तो आकर्षित एवं लाभान्वित होंगे साथ ही हस्तशिल्पियों, उत्पादकों, व्यवसाइयों, क्रेता-विक्रेता एवं निर्यातकों के बीच आपसी सम्पर्क एवं सौहार्द का अवसर प्रदान होगा। महोत्सव के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूली बच्चों द्वारा गायन वादन एवं नृत्य कर कार्यक्रम किया जायेगा। प्रदेश सरकार के सहयोग से महोत्सव के दौरान विभिन्न विभागों की प्रर्दशनी का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव का भव्य आयोजन पर्यटन विभाग, जिला प्रशासन, संस्कृति विभाग, स्थानीय उद्यमी एवं बैंकर्स के संयुक्त सहयोग से किया जा रहा है।

गोरखपुर पर्यटन क्षेत्र के पर्यटन विकास हेतु प्रदेश सरकार सदैव प्रयत्नशील है। इसके अन्तर्गत विभिन्न पर्यटन स्थलों जैसे इमामबाड़ा, सेंट एण्ड्रयूज चर्च, गीता वाटिका, कबीर मठ, गुरूद्वारा, सिटी एंट्रेस गेट, साइनेज, पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार के स्वदेश योजना के अन्तर्गत गोरखनाथ मन्दिर परिसर में साउन्ड एंड लाइट शो, चौरी चौरा स्थित ऐतिहासिक शहीद स्मारक का पर्यटन विकास सहित वाटर स्पोर्ट्स के अन्तर्गत रामगढ़ ताल में वाटर स्पोर्ट्स काम्पलेक्स आदि के पर्यटन विकास पर विस्तृत रूप में कार्य कराया जा रहा है। यह सब योजनायें निश्चित तौर पर पर्यटकों को लुभाने का कार्य करेगी एवं राजस्व को बढ़ावा भी मिलेगा।

विरासत संरक्षण को समर्पित संस्था ''भारतीय सांस्कृतिक निधी'' (इनटैक)

ई. महावीर प्रसाद कन्दोई*, डॉ. मुमताज खान**, अचिन्त्य लाहिड़ी***

सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि विरासत क्या है, इसको सबसे सीधी भाषा में यह कह सकते हैं कि हमको कुछ अपने पूर्वजों से मिला जिसका रख-रखाव हम कर अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंप देते हैं और जो किसी देश की चिरकालिक तथा महत्वपूर्ण मानी गई परम्परायें, विशेषाएं, संस्कृति, आदि हो उसी को विरासत कहते हैं।

सामान्यतया विरासतों का वर्गीकरण हम निम्नानुसार कर सकते हैं -

1. **शिल्प विरासत :** ऐतिहासिक भवन, पुराने किले, धार्मिक स्थल एवं मानव निर्मित गुफाएं आदि इस श्रेणी में आते हैं।
2. **प्राकृतिक विरात :** पर्वत, प्राकृतिक गुफाऐं, जंगली वन क्षेत्र, जल स्रोत, दुलर्भ पशु-पक्षी एवं विलुप्त प्रायः जड़ी-बूटियाँ।
3. **वस्तु एवं समुदाय विरासत :** शिल्पकारों द्वारा परम्परागत कप से बनाई वस्तुऐं, क्षेत्र विशेष का खान-पान, पहनावा, चित्रकला आदि।
4. **अर्मूत सांस्कृतिक विरासत :** धार्मिक अनुष्ठानों पर कहे जाने वाली लोक कथायें, नृत्य, स्वंगायन-वादन, जन्म-मृत्यु एवं अन्य मांगलिक अवसरों के रीति-रिवाजों, लोकगीत एवं मुहावरे।

सामान्यतः हर देश में पुरा-सामग्री एवं स्थलों के चिन्हीकरण एवं संरक्षण हेतु पुरातत्व विभाग होते हैं, परन्तु ट्यूनीशिया में 'इन्टरनेशनल काउंसिल ऑफ मोनूमेन्ट एण्ड साइटो' द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में 18 अप्रैल 1982 को उन साक्ष्यों को जिनका की संरक्षण उस देश के पुरातत्व विभाग द्वारा नहीं किया जाता पर जागरूकता पैदा करने हेतु 'विश्व विरासत दिवस' मनाने का प्रस्ताव दिया गया, जिसको कि नवम्बर 1983 में यूनेस्को सम्मेलन के 22वें सत्र में 18 अप्रैल को 'विश्व विरासत दिवस' के उक्त प्रस्ताव को अनुमोदन किया गया। इस तरह संरक्षित स्थलों पर जागरूकता के लिए सांस्कृतिक-ऐतिहासिक और प्राकृतिक विरासतों की विविधता की रक्षा के लिए ''विश्व विरासत दिवस'' मनाने की शुरुआत हुई।

इसी क्रम में भारत में कुछ विरासत प्रेमियों, विशेषज्ञों ने औद्योगिक घरानों की मदद से ''भारतीय सांस्कृतिक निधि'' (इण्डियन नेशनल ट्रस्ट ऑफ आर्ट एवं कल्चरल हैरिटेज) इनटैक की स्थापना सन् 1984 में की। इसका उद्देश्य यूनेस्को द्वारा उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में भारत में विरासतों/धरोहरों के प्रति जागरूकता तथा उनका संरक्षण करना था। कालान्तर में संस्था ने प्रगति करते हुए विरासत संरक्षण के क्षेत्र में सलाहकार का दर्जा मिल गया। अपने कुशल विशेषज्ञों की टीम से यह संस्था इस समय विरासत संरक्षण के क्षेत्र में विश्व की सबसे अग्रणी संस्था है जिसके पूरे देश में 190 अध्याय हैं तथा संस्था ने देश-विदेश में विरासत के महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित किये हैं। वर्तमान में संस्था के निर्देशन में कम्बोडिया में अंगकोर वाट मन्दिर का संरक्षण कार्य किया जा रहा है तथा अभी-अभी नेपाल की 11 प्राचीन विरासतों के संरक्षण का समझौता इनटैक तथा नेपाल सरकार के बीच में हुआ है।

इनटैक का गोरखपुर अध्याय

सन् 2014 में शहर की एक अमूल्य विरासत ''बसंत-सराय'' को ढहाने से रोकने का आदेश पारित

*संयोजक, **सह-संयोजक, ***सह-सयोजक, इनटैक गोरखपुर अध्याय

कराने के साथ गोरखपुर में इनटैक के क्रियाकलाप शुरू हुए जिसकी परिणति दिसम्बर, 2014 में इनटैक गोरखपुर अध्याय के गठन से हुई। वर्तमान संयोजक जो उस समय गोरखपुर में इनटैक के एकमात्र सदस्य थे, तथा बसंत सराय का मुद्दा उठाने वाले गोरखपुर शहर के प्रसिद्ध समाजसेवी स्वर्गीय श्री पी.के. लाहिड़ी गोरखपुर अध्याय के संस्थापक थे।

अपने पाँच साल के कार्यकाल में इस अध्याय ने गोरखपुर में इनटैक की निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार विरासतों का चिन्हीकरण प्रारम्भ किया है।

अध्याय अपने गठन के उपरान्त लगातार विरासत जागरूकता अभियान चला रहा है। अध्याय ने इस क्षेत्र विशेष की विरासतों के बारे में संरक्षण हेतु सहयोग के रूप में बसंत सराय, स्थली कबीर निर्वाण स्थली, मगहर की सुरंग, रामामऊ ठाकुर द्वारे की दुर्लभ पेन्टिंग, दाउजी मन्दिर की प्राचीन पेन्टिंग का संरक्षण प्रस्ताव सर्वसम्बन्धित अधिकारियों को निःशुल्क बनाकर दिया है जिस पर कार्यवाही प्रगति में है।

कुशीनगर जनपद में ग्राम छाऊ के प्राप्त हर्षकालीन चार मूर्तियों, तत्पश्चात् उसी गाँव में प्राप्त भगवान सूर्य की उत्तर भारत की सबसे बड़ी प्रतिमा का संरक्षण निःशुल्क किया है।

उल्लेखनीय है कि शासन के निर्देशानुसार सन् 1857 या उससे पूर्व के विरासत स्थलों की सूची मांगे जाने के क्रम में क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी को लगभग 150 स्थलों की सूची गोरखपुर अध्याय द्वारा उपलब्ध करवाई गई है।

इसके अतिरिक्त अध्याय द्वारा प्राकृतिक विरासतों के संरक्षण के क्षेत्र में मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय तथा राजकीय उद्यान में एक-एक विरासत वाटिका बनाई गई है जिसमें इस क्षेत्र के विलुप्त प्रायः पौधों का रोपण किया गया है। गोरखपुर पुलिस परिक्षेत्र के विभिन्न थानों के मालखानों में रखी गई मूर्तियों को संग्रहालय में रखने हेतु शासनादेशों को निर्गत करने का प्रस्ताव मण्डलायुक्त के माध्यम से शासन को प्रेषित किया गया है।

भगवान बुद्ध, महावीर, महायोगी गोरखनाथ तथा कबीर की कार्यस्थली का यह क्षेत्र प्राचीन संस्कृति का पोषक रहा है तथा इस क्षेत्र में अनगिनत विरासतें/धरोहरों यत्र-तत्र बिखरी हुई एवं उपेक्षित हैं। अध्याय अपने 28 आजीवन सदस्यों के साथ उनके सूचीकरण, जागरूकता तथा संरक्षण हेतु सतत् कार्यशील है, जिससे इस क्षेत्र की विरासतें संरक्षित हो सकें तथा इस क्षेत्र में विरासत पर्यटन का विकास हो सके।

रोटरी इण्टरनेशनल बृहद सामाजिक संरोकारों से जुड़ी एक वैश्विक संस्था

रो. अनूप अग्रवाल*, रो. ई. महावीर प्रसाद कन्दोई*

रोटरी इण्टरनेशनल संस्था की शुरुआत 23 फरवरी 1905 में अमेरिका में पॉल हैरिस नामक व्यक्ति ने अपने चार मित्रों के साथ मिलकर की। ये चार व्यक्ति आपस में मिलने (फैलोशिप) हेतु बारी-बारी से एक दूसरे के घर पर मिलते थे, अत: रोटेशन से मिलने के कारण इस संस्था का नाम रोटरी क्लब पड़ा तथा पहला क्लब का नाम रोटरी क्लब ऑफ शिकागो इलिनयास रक्खा गया।

धीरे-धीरे इस संस्था ने पूरे विश्व में अपना विस्तार कर लिया तथा वर्तमान में 200 से ज्यादा देशों में 36,082 रोटरी क्लब हैं, जो कि रोटरी इंटरनेशनल से सम्बद्ध हैं। इस वर्ष भारत में रोटरी संस्थान के प्रारम्भ के 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। रोटरी क्लब कलकत्ता की स्थापना सन् 1920 में हुई थी।

गोरखपुर शहर में रोटरी क्लब की स्थापना सन् 1946 में हुई थी तथा यह क्लब भी हिन्दुस्तान के पुराने क्लबों में है जो जल्दी ही अपनी प्लैटनिम जुबली वर्ष मनाने जा रहा है।

रोटरी संस्था के उद्देश्य :

1. सेवा के लिए एक सुअवसर की तरह परिचय को विकसित करना।
2. व्यापार और व्यवसाय में उच्च नैतिक मानदण्ड, सभी उपयोगी व्यवसायों की उपादेयता को मान्यता प्रदान करना तथा रोटरी के प्रत्येक सदस्य के व्यवसाय को समाज सेवा के सुअवयर के रूप में प्रतिष्ठित करना।
3. प्रत्येक रोटेरियन के व्यक्तिगत, व्यापारिक और सामाजिक जीवन के सेवा के मानक का अनुपयोग।
4. व्यापारियों और व्यवसायियों के सम्मिलित सेवादर्शी एवं विश्वमैत्री द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव, सहयोग एवं शान्ति को बढ़ावा देना।

रोटरी फाउण्डेशन की स्थापना :

रोटरी फाउण्डेशन ने वर्ष 1917 में सेवा कार्यों हेतु धनराशि एकत्र करने तथा उसका समुचित उपयोग करने हेतु रोटरी फाउण्डेशन नामक एक न्यास का गठन किया जिसमें दान-दाताओं से धनराशि ग्रहण की जाती है। इस न्यास में प्राप्त सम्पूर्ण धनराशि का उपयोग सेवा कार्यों में किया जाता है तथा विभिन्न श्रेणी के दान-दाताओं को उनके द्वारा दी गई धनराशि के उपयुक्त सम्मान दिया जाता है।

रोटरी फाउण्डेशन द्वारा अपने द्वारा सम्पादित करने हेतु निम्न क्षेत्रों का चयन किया।

1. विश्व शांति को बढ़ावा देना।
2. बीमारियों के विरुद्ध संघर्ष।
3. साफ पानी, सेनिटेशन तथा स्वच्छता की सुविधा उपलब्ध कराना।
4. माताओं और शिशुओं को बचाना।
5. शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग।
6. स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना।

फाउण्डेशन द्वारा पूरे विश्व में किये उपरोक्त कार्यों की संख्या अनगिनत है परन्तु जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य रोटरी द्वारा किया गया संकल्प विश्व को पोलियो उन्मुक्त कराना था।

*भूतपूर्व मण्डलाध्यक्ष, रोटरी मण्डल 3120; **भूतपूर्व सचिव (वर्ष 16-17, 18-19), रोटरी क्लब, गोरखपुर

रोटरी फाउण्डेशन द्वारा वर्ष 1997 में फिलिपींस में 50 लाख बच्चों के टीकाकरण से शुरू किये गये अभियान को विश्व व्यापी स्वरूप दिया गया। इस पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम हेतु रोटरी फाउण्डेशन ने अब तक 5 बिलियन डालर की धनराशि खर्च की है जिसमें लगभग 60 प्रतिशत धनराशि (अनुमानतः 21 हजार करोड़ रूपये) भारत में खर्च किये गये हैं। भारत में पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा कर भारत को पोलियो मुक्त कर दिया गया है। सन् 2011 के बाद भारत में पोलियो का कोई मामला प्रकाश में नहीं आया है तथा सन् 2013 में भारत को पोलियो मुक्त देश घोषित कर दिया गया है।

अब दुनिया के मात्र तीन देश अफगानिस्तान, पाकिस्तान और ईरान पोलियो मुक्त होने से बचे हैं जिनमें प्रयास जारी है। उल्लेखनीय है कि रोटरी एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसके 150 से ज्यादा कार्यकाताओं को पोलियो उन्मूलन में अपनी जान गवानी पड़ी है।

रोटरी फाउण्डेशन द्वारा विश्व में पोलियो उन्मूलन के पश्चात् शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र पर ध्यान दिया गया है। भारत में रोटरी फाउण्डेशन द्वारा रोटरी साक्षरता मिशन में कार्य किया जा रहा है जिसमें स्कूलों विशेष कर सरकारी बेसिक स्कूलों का सुदृढ़ीकरण, वृद्धों हेतु साक्षरता, अध्यापिकाओं को प्रशिक्षण, स्मार्ट क्लास आदि शामिल हैं।

भारत के रोटरी फाउण्डेशन द्वारा सन् 2025 तक भारत को पूर्ण साक्षर बनाने का लक्ष्य तय किया गया है। उल्लेखनीय है कि सन् 2021-2022 के रोटरी इण्टरनेशनल के अध्यक्ष भारत के रोटेरियन शेखर मेहता हैं, जोकि वर्तमान में रोटरी फाउण्डेशन के साक्षरता कार्यक्रमों से सम्बद्ध हैं तथा सन् 2025 तक भारत को पूर्ण साक्षर बनाने हेतु कटिबद्ध हैं।

भारत में रोटरी फाउण्डेशन द्वारा स्वयं की धनराशि तथा औद्योगिक घरानों से नियमित सामाजिक दायित्व की धनराशि प्राप्त कर देश में रोटरी द्वारा चिन्हित क्षेत्रों में अपने क्लबों के माध्यम से सेवा कार्य किये जा रहे हैं।

रोटरी क्लब गोरखपुर की स्वर्णिम यात्रा -

गोरखपुर में रोटरी क्लब की स्थापना सन् 1946 में हुई थी तथा यह भारत तथा उत्तर प्रदेश के सबसे पुराने क्लबों में से एक है। वर्तमान में इस क्लब के सबसे पुराने सदस्य पीडीजी रो. प्रेम नारायण श्रीवास्तव जी हैं जिनकी सदस्यता 60 साल से भी ज्यादा पुरानी है।

इस क्लब ने, जो कि प्लेटिनम जुबली मनाने की ओर अग्रसर है, ने इस अवधि में अन्य सामाजिक सेवाओं के अतिरिक्त रोटरी संगठन के वृहद पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम का सफल संचालन किया। सन् 2013 में पोलियो उन्मूलन के पश्चात् क्लब ने शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र में अपने सेवा कार्यों को शुरू किया है।

वर्ष 18-19 में क्लब द्वारा 10 राजकीय प्राइमरी तथा अपर प्राइमरी स्कूलों का उच्चीकरण करने की ''हैप्पी स्कूल योजना'' के अन्तर्गत इन स्कूलों का डेस्क-बेंच, अनवरत पानी की सुविधा, साफ पानी हेतु आर.ओ., शौचालय, पंखे तथा स्मार्ट क्लास की सुविधा प्रदान की जिसके लिए रोटरी फाउण्डेशन से धनराशि प्राप्त हुई थी।

इस क्रम में रोटरी फाउण्डेशन द्वारा प्राप्त होने वाली धनराशि से इस वर्ष 21 स्कूलों के उच्चीकरण जथा एक धर्मार्थ चिकित्सालय को उच्च गुणवत्ता के परीक्षण उपकरण देना प्रस्तावित है।

रोटरी इण्टरनेशनल के हर सदस्य के अन्दर समाज सेवा हेतु संवेदना है और यही संवेदना इस संगठन को समाज सेवा के वृहद वैश्विक सरोकारों हेतु कार्य करने की प्रेरणा देती है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर

डॉ. संजीव मिश्रा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्था, गोरखपुर की आधार शिला, गुरु गोरखनाथ की पावन धरती पर 22 जुलाई 2016 को मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी द्वारा रखी गयी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर की स्थापना स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत की गई है, जिसका उद्देश्य देश में गुणवत्तापूर्ण तृतीयक स्वास्थ्य सेवाओं में क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करना और स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है।

ये संस्थान नई दिल्ली में मूल अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की तर्ज पर संसद के एक अधिनियम द्वारा स्थापित किए जा रहे हैं जिनका उद्देश्य अपनी सभी शाखाओं और संबंधित क्षेत्रों में स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा प्रदान करना है, साथ ही नर्सिंग और पैरामेडिकल प्रशिक्षण भी प्रदान करना है। एक जगह पर स्वास्थ्य देखभाल से सम्बन्धित सभी शाखाओं में कर्मियों के प्रशिक्षण के लिए उच्चतम क्रम की शैक्षिक सुविधाएं प्रदान करना संस्थान के प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है।

यह संस्थान एक स्वायत संगठन के रूप में 100 एकड़ की परिधि में स्थापित किया गया है। भारत सरकार और परिवार स्वास्थ्य कल्याण मंत्रालय के बहुमुल्य योगदान के फलस्वरूप कार्यदायी संस्था हाइट्स द्वारा इस के सृजन का कार्य कराया जा रहा है। हाइट्स कार्यदायी संस्था द्वारा लार्सन एण्ड टूब्रो कन्सट्रक्शन कम्पनी से समन्वय बनाते हुए एम्स संस्था के निर्माण में तीव्र गति से प्रगति सुनिश्चित करायी जा रही है। हाइट्स द्वारा बुनियादी सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिए संस्थान का मास्टर प्लान तैयार किया गया है जिसके अन्तर्गत 720 शयन के हास्पिटल का प्रावधान किया गया है। वर्तमान में कार्य प्रगति पर है तथा यह प्रयास किया जा रहा है कि वर्तमान वर्ष के दौरान मरीजों के बेहतर चिकित्सीय सुविधाओं को उपलब्ध कराने के सन्दर्भ में 300 शयन की पहली इकाई जुलाई 2020 से तथा सम्पूर्ण 720 शयन का अस्पताल वर्ष के अंत तक शुरू होना सम्भव हो सके। बीमारियों के रोकथाम हेतु अनुसंधान को सुदृढ़ करने का प्रयास किया जा रहा है तथा पूर्वांचल, बिहार और अन्य सीमावर्ती इलाकों के मरीजों को बेहतर चिकित्सा की पूर्ति सुनिश्चित करायी जा रही है। मास्टर प्लान के अन्तर्गत आयुष ब्लाक पूर्ण करने की दशा में भवन का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा अभी एक्सरे तथा अल्ट्रासाउण्ड की मशीन भी वहां कार्यरत हैं। चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में संस्थान द्वारा मेडिकल कालेज और नर्सिंग कालेज का कार्य प्राथमिकता के आधार पर कराया जा रहा है जिसके अन्तर्गत मेडिकल कॉलेज का भवन लगभग पूर्ण होने की स्थिति में है तथा नर्सिंग कॉलेज जल्द ही पूर्ण कर चिकित्सीय शिक्षा को प्रभावी रूप से सुदृढ़ बनाया जाएगा। वर्तमान में एम्स संस्थान में एम.बी.बी. एस. प्रथम सत्र 2019 की शुरुआत 2 सितम्बर 2019 को 50 छात्रों के नामाकंन के साथ हो गई है। छात्रों का मेडिकल कॉलेज में अध्ययन कार्य सुचारू रूप से उन्नत वातावरण में सुनिश्चित किया जा रहा है। इसके साथ ही छात्र और छात्राओं को रहने के लिए अलग-अलग हास्टल का निर्माण कराया जा रहा है। वर्तमान में 50 छात्र-छात्राएँ संस्थान में निर्मित महिला हास्टल में अलग-अलग तल पर वास करते हैं।

परास्नातक छात्र-छात्राओं के चिकित्सा शिक्षा को मुहैया कराने हेतु उनके लिए कॉलेज और हॉस्टल का निर्माण कार्य भी तीव्र गति से कराया जा रहा है।

निदेशक, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, गोरखपुर

केन्द्र सरकार द्वारा 2015 में 6 एम्स की आधारशिला रखी गयी थी जिसमें गोरखपुर एम्स संस्थान दिन प्रतिदिन चिकित्सा शिक्षा क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हो रहा है। वर्तमान में 24 फरवरी, 2019 को माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा ओ.पी.डी. सेवाओं की शुरुआत कर जनमानस को बेहतर चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने का कार्य शुरू किया गया है। प्रारम्भ में ये सुविधा आयुष ब्लाक में प्रारम्भ की गई थी जो कि अपने नियमित ओ.पी.डी. ब्लाक में स्थानान्तरित कर दी गई तथा सुचारु रूप से संचालित कर दी गयी है।

एम्स संस्थान द्वारा 11 विभागों जैसे- मेडिसिन, दंतचिकित्सा, मनोरोग, नेत्ररोग, रेडियोलोजी, हड्डी रोग, नाक-कान-गला रोग, स्त्री रोग, मेडिकल सर्जरी विभाग क्रियाशील कर जनमानस को किफायती दर में उत्तम चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। संस्थान में 29 चिकित्सक तैनात हैं जो चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्तम अनुभव प्राप्त किये हैं। एनाटोमी (शरीर क्रिया विज्ञानं), भौतिक क्रिया विज्ञानं का तथा रसायन क्रिया विज्ञानं का अध्ययन सुचारू रूप से संचालित है तथा प्रयोगशालाओं की स्थापना प्रथम वर्ष अध्यापन की आवश्यकता के अनुसार पूर्ण रूप से स्थापित है। शरीर क्रिया विज्ञान में अध्ययन के लिए दो मानव शव भी आ चुके हैं जिसमें छात्र/छात्राएँ मानव शव पर परीक्षण कर शरीर विज्ञान सम्बन्धित प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

संस्थान द्वारा ग्रामीण समुदाय के बेहतर स्वास्थ्य और चिकित्सा उपलब्ध करने हेतु सार्थक पहल किया गया है जिसमें सामुदायिक चिकित्सा एवं परिवार चिकित्सा की स्थापना प्रमुख है। विभाग द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि ग्रामीण पृष्ठभूमि में आमजन मानस के बीच कुशल चिकित्सा पहुँचाकर ग्रामीणों में फैली बीमारियों का पता लगाते हैं तथा अनुसंधान के द्वारा उनके कारणों को स्पष्ट करते हैं जिससे की नींव स्तर से बीमारियों के समूल को नष्ट किया जा सके। विभाग ग्रामीण स्तर पर एक सेंटर की स्थापना भी करता है जिसमे गांव के मरीजों को प्राथमिक रूप से चिकित्सा उपलब्ध कराई जाती है।

संस्थान निकट भविष्य में स्वास्थ्य सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए सुपरस्पेशलिटी ब्लॉक की स्थापना की योजना भी बनाई जा रही है जिससे असाध्य बीमारियों का इलाज संभव हो सके जिसके अंतर्गत हृदय रोग, चिकित्सीय व्यवस्था से आमजन मानस को भारी मात्रा में लाभ प्राप्त हो रहा है। परिणाम के तौर पर आम जनमानस को एम्स के प्रति विश्वास इस प्रकार प्राप्त कर चुके हैं कि मात्र 8 माह की ओ.पी.डी. शुरुआत से ही लगभग 7 लाख लोगों द्वारा एम्स में पंजीकरण कराया जा चुका है। उत्तर प्रदेश के साथ ही साथ सीमावर्ती राज्यों के मरीजों द्वारा भी चिकित्सीय सुविधाओं को प्राप्त किया जा रहा है।

संस्थान का उद्देश्य है कि स्नातक और स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा में मानकों के अनुरूप किया जाये ताकि राष्ट्र स्तर पर चिकित्सा शिक्षा के उच्च मानक प्रदर्शित किया जा सकें। स्वास्थ्य गतिविधि की सभी महत्वपूर्ण शाखाओं में अनुसंधान और शैक्षिक सुविधाओं के साथ उच्चतम स्तर पर चिकित्सा शिक्षा में आत्मनिर्भरता पायी जा सके।

संस्थान द्वारा एम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष के सभी छात्रों को बेहतर चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने हेतु तत्पर है जिसके अंतर्गत प्रथम वर्ष रुधिर रोग, कैंसर, न्यूरो, किडनी रोग, अन्य गंभीर बीमारियों के चिकित्सा तथा अनुसंधान की पूर्ति हेतु उत्तर प्रदेश सरकार से भूमि उपलब्ध करने का अनुरोध किया गया है।

गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर 2020

अधयक्ष **श्री जयन्त नार्लिकर,** मण्डलायुक्त, गोरखपुर मण्डल

उपाधयक्ष **श्री के. विजयेन्द्र पाण्डियन,** जिलाधिकारी, गोरखपुर

सचिव **श्री रविन्द्र कुमार,** क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर

कार्यकारी समितियाँ

1. शिल्प प्रदर्शनी एवं सरस मेला समिति	1. मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर।
	2. संयुक्त निदेशक उद्योग, गोरखपुर।
	3. उपनिदेशक हैण्डलूम, गोरखपुर।
	4. क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर **(सदस्य सचिव)**
2. कृषि प्रदर्शनी समिति	1. संयुक्त निदेशक, कृषि, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
	2. उपनिदेशक, उद्यान, गोरखपुर।
	3. उपनिदेशक, कृषि, गोरखपुर।
	4. सहायक निबन्धक, सहकारिता, गोरखपुर।
3. विज्ञान प्रदर्शनी समिति	1. उपनिदेशक, अर्थ एवं संख्या, गोरखपुर **(सदस्य सचिव)**
	2. क्षेत्रीय वैज्ञानिक, जवाहर लाल नेहरू, तारामण्डल, गोरखपुर।
	3. श्री अमित शंकर, एम.एम.एम.यू.टी., गोरखपुर।
4. पुस्तक मेला समिति	1. अपर आयुक्त (प्रशासन), गोरखपुर **(सदस्य सचिव)**
	2. सहायक ज़िक्षा निदेशक, बेसिक, गोरखपुर।
5. स्वामी विवेकानन्द, गुरू गोरक्ष नाथ जी एवं महात्मा गांधी जी की प्रदर्शनी समिति	1. संयुक्त विकास आयुक्त, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर।
	2. सहायक सूचना निदेशक, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
	3. सम्भागीय परिवहन अधिकारी, गोरखपुर।
	4. उप निदेशक, बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर।
6. व्यापार मेला + आटोज्ञो समिति	1. अपर आयुक्त, वाणिज्य कर, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
	2. सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्र.) गोरखपुर।
	3. श्री संजय कुमार शर्मा, निजी सचिव, आयुक्त, गोरखपुर मण्डल।

7. फूड जोन समिति	1. संयुक्त आयुक्त खाद्य एवं रसद, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 2. जिला पूर्ति अधिकारी, गोरखपुर। 3. जिला अभिहित अधिकारी, गोरखपुर।
8. बाल फिल्म महोत्सव समिति	1. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा नामित पुलिस अधीक्षक स्तर का अधिकारी 2. अपर जिलाधिकारी नगर, गोरखपुर। 3. सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) गोरखपुर 4. जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 5. उपायुक्त, मनोरंजन, गोरखपुर।
9. गेम जोन समिति	1. उपाध्यक्ष, गोरखपुर विकास प्राधिकरण, गोरखपुर। 2. नगर मजिस्ट्रेट, गोरखपुर। 3. उपनिदेशक, पंचायत, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
10. क्रीड़ा समिति	1. अपर आयुक्त (प्रशासन), गोरखपुर मण्डल। 2. क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 3. पुलिस अधीक्षक, यातायात, गोरखपुर। 4. जिला विद्यालय निरीक्षक, गोरखपुर।
11. शूटिंग कम्पटीशन समिति	1. मुख्य कार्यपालक अधिकारी, गीडा, गोरखपुर। 2. नगर मजिस्ट्रेट/सचिव, राईफल क्लब, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 3. क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी, गोरखपुर।
12. फल-फूल एवं सब्जी प्रर्दशनी समिति	1. उपनिदेशक, उद्यान, गोरखपुर मण्डल। **(सदस्य सचिव)** 2. जिला उद्यान अधिकारी, गोरखपुर।
13. मंथन सम्मेलन व नाट्य मंचन (युवा दिवस के अवसर पर)	1. कुल सचिव, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। 2. उपजिलाधिकारी, सदर, गोरखपुर। 3. डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 4. प्रो. अजय शुक्ला, अंग्रेजी विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
14. सांस्कृतिक कार्यक्रम/उद्‌घाटन/स्वागत/समापन समिति	1. मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर। 2. अपर जिलाधिकारी (वि/रा) गोरखपुर। 3. उपजिलाधिकारी, सदर, गोरखपुर। 4. क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर/सचिव, गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 5. संयुक्त शिक्षा निदेशक, गोरखपुर मण्डल, 6. प्रभारी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र गोरखपुर। 7. प्रो. उषा सिंह, संगीत एवं ललित कला विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

15. टैलेन्ट हन्ट

1. सचिव, जीडीए, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
2. उपजिलाधिकारी, सहजनवां, गोरखपुर।
3. जनपद गोरखपुर के विभिन्न विद्या के वरिष्ठ कलाकार।

16. महिलाओं हेतु आयोजित होने वाले समस्त कार्यक्रमों हेतु (महिला समिति)

1. उपजिलाधिकारी, सहजनवां, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
2. जिला सूचना विज्ञान अधिकारी, गोरखपुर।
3. प्रो. उषा सिंह, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
4. प्रो. नन्दिता सिंह, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
5. प्रो. विनीता पाठक, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
6. प्रो. दिव्या रानी सिंह, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

17. स्मारिका समिति

1. मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर।
2. उपजिलाधिकारी सदर, गोरखपुर।
3. प्रो. राजवंत राव, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
4. डॉ. प्रदीप राव, प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
5. प्रो. अजय शुक्ला, अंग्रेजी विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।
6. सहायक निदेशक, सूचना/जिला सूचना अधिकारी, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
7. उप निदेशक, बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर।
8. अधयक्ष की अनुमति से अन्य सदस्य।

18. कलाकारों एवं गणमान्य व्यक्तियों के परिवहन, अवस्थान (होटल आदि) एवं अन्य व्यवस्थाओं हेतु समिति

1. अपर जिलाधिकारी (वि./रा.), गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
2. नगर मजिस्ट्रेट, गोरखपुर।
3. जिला पूर्ति अधिकारी, गोरखपुर।
4. जिला खाद्य सुरक्षा अधिकारी, गोरखपुर।
5. सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) गोरखपुर।
6. क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर/ सचिव, गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर।

19. आमंत्रण समिति

1. मुख्य विकास अधिकारी, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
2. नगर मजिस्ट्रेट, गोरखपुर।
3. क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर/सचिव, गोरखपुर महोत्सव समिति, गोरखपुर।
4. श्री संजय कुमार शर्मा, निजी सचिव, आयुक्त, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर।
5. सहायक सूचना निदेशक, गोरखपुर।

20. मुख्य अतिथि एवं कलाकारों हेतु ग्रीन रूम की व्यवस्था समिति

1. मुख्य कार्यपालक अधिकारी, गीडा, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
2. उपजिलाधिकारी, सदर गोरखपुर।
3. अपर जिलाधिकारी (नगर), गोरखपुर।
4. उप जिला मजिस्ट्रेट, सहजनवॉं, गोरखपुर।

21. मुद्रण/प्रचार-प्रसार/ सूचना समिति	1. अपर आयुक्त (न्यायिक), प्रथम, गोरखपुर। 2. नगर आयुक्त, नगर निगम, गोरखपुर। 3. सहायक सूचना निदेशक, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 4. निदेशक, आकाशवाणी, गोरखपुर। 5. निदेशक, दूरदर्शन, गोरखपुर। 6. श्री संजय कुमार शर्मा, निजी सचिव, आयुक्त, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर।
22. स्वच्छता समिति	1. नगर आयुक्त, नगर निगम, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 2. उप निदेशक, पंचायत, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर। 3. जिला पंचायत राज अधिकारी, गोरखपुर। 4. अपर मुख्य अधिकारी, जिला पंचायत, गोरखपुर।
23. सुरक्षा व्यवस्था समिति	1. वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, गोरखपुर। 2. नगर आयुक्त, नगर निगम, गोरखपुर। 3. अपर जिलाधिकारी, नगर, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)**
24. संसाधन समिति	1. जिलाधिकारी, गोरखपुर। 2. मुख्य कार्यपालक अधिकारी, गीडा, गोरखपुर। 3. उपाध्यक्ष, गोरखपुर विकास प्राधिकरण, गोरखपुर। 4. अपर जिलाधिकारी (वित्त/राजस्व), गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 5. अपर आयुक्त, व्यापार कर, गोरखपुर। 6. संयुक्त निदेशक, उद्योग, गोरखपुर। 7. अग्रणी बैंक प्रबन्धक, गोरखपुर। 8. मुख्य कोषाधिकारी, गोरखपुर। 9. उपायुक्त आबकारी, गोरखपुर। 10. क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी, गोरखपुर।
25 ई-टेण्डर एवं टेन्ट व्यवस्था समिति	1. अपर निदेशक, पेंशन एवं कोषागार, गोरखपुर मण्डल, गोरखपुर। 2. महाप्रबन्धक, राजकीय निर्माण निगम, गोरखपुर। **(सदस्य सचिव)** 3. परियोजना प्रबन्धक, राजकीय निर्माण निगम-1, गोरखपुर। 4. अधीक्षण अभियन्ता, लोक निर्माण विभाग, गोरखपुर। 5. श्री शशांक चौधरी, आर्किटेक्ट, गोरखपुर।
26 स्कूलों के आयोजित होने वाले कार्यक्रम सम्बन्धी समिति	1. संयुक्त शिक्षा निदेशक, गोरखपुर मण्डल। **(सदस्य सचिव)** 2. जिला विद्यालय निरीक्षक, गोरखपुर। 3. सहयोगी विद्यालय के प्रधानाचार्य कार्यक्रमवार।
27. विद्युत व्यवस्था/सुरक्षा समिति	1. मुख्य अभियन्ता, विद्युत वितरण, गोरखपुर। 2. मुख्य अभियन्ता, नगर निगम, गोरखपुर। 3. उपनिदेशक/सहायक निदेशक, विद्युत सुरक्षा, गोरखपुर। 4. अवर अभियन्ता, विद्युत, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

न्यूनतम रहा अपराध

अपराध नियंत्रण और विधि व्यवस्था बनाए रखने में उत्तर प्रदेश पुलिस के कार्य प्रदर्शन को सदैव ही सराहा गया है तथा इस बल को 13 नवम्बर 1952 को तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा "**कलर्स**" प्राप्त करने का गौरवपूर्ण सौभाग्य हासिल है।

जनपद गोरखपुर महानगर उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वांचल क्षेत्र में स्थित है। यह जनपद नेपाल राष्ट्र एवं बिहार प्रान्त के निकटस्थ होने के कारण सुरक्षा के दृष्टि से अति संवेदनशील है। जनपद के पूर्वी सीमा पर जनपद कुशीनगर एवं देवरिया, पश्चिमी सीमा पर जनपद संतकबीरनगर, उत्तरी सीमा पर जनपद महराजगंज एवं दक्षिणी सीमा पर जनपद मऊ एवं आजमगढ़ स्थित है। जनपद गोरखपुर में 07 तहसील एवं 29 थाने स्थित हैं, जिसमें 01 महिला थाना सम्मिलित है। जनपद के 29 थानों को 08 सर्किल में विभक्त किया गया है, जिसमें नगर क्षेत्र में 03 पुलिस सर्किल एवं ग्रामीण क्षेत्र में 05 पुलिस सर्किल सम्मिलित हैं। गोरखपुर पुलिस बल ने पूरे वर्ष लगातार परिश्रम करते हुए साम्प्रदायिक और सामाजिक सौहार्द और विधि व्यवस्था बनाये रखा एवं अपराध पर कठोर कार्यवाही करते हुए अपराधियों के हौसलों को पस्त किया है, जिससे जनपदीय पुलिस को जनमानस का स्नेह, सहयोग और सराहना निरंतर मिलती रही।

जनपद में अपराध नियंत्रण एवं शान्ति व कानून व्यवस्था बनाये रखने हेतु आवश्यकतानुसार आवश्यक कदम उठाये जा रहे है, जो निम्नवत है :-

डायल 112 :-

डायल 112 पर पीड़ित द्वारा दी गयी सूचना पर न्यूनतम समय में पीआरवी वाहन घटनास्थल पर पहुंचकर पुलिस सहायता मुहैया कराती है। पीड़ित की समस्या के समाधान होने तक पुलिस कार्यवाही की लगातार समीक्षा होती है। इसके अन्तर्गत जनपद में जी.पी.एस. युक्त पीआरवी चार पहिया वाहन 49 व पीआरवी दो पहिया वाहन 32 सक्रिय है तथा पूरे प्रदेश में हमें टाप 20 में होने का गर्व भी हासिल है। **दिनांक 01.01.2019 से 31.12.2019 तक पीआरवी को कुल 1,19,655 इवेन्ट्स** की सूचना प्राप्त हुई, जिस पर पीआरवी द्वारा सभी इवेन्ट्स को अटेन्ड करते हुए समुचित निस्तारण किया गया है।

PRV

जनपद में अवैध मादक पदार्थों के निष्कर्षण/बिक्री पर पूर्णतय: रोक लगाने हेतु **आपरेशन गरल**, लूट, वाहन चोरी आदि अपराधों पर अंकुश लगाने हेतु "**एक्सरसाइज चक्रवात** एवं नकबजनी आदि अपराधों पर अंकुश लगाने हेतु **रात्रि प्रहरी** अभियान निरंतर चलाया जा रहा है।

इसी प्रकार वाहन चोरों, नकबजनी/चोरी के अपराधियों एवं लूटेरों के सत्यापन व रिकार्ड रखने हेतु AVTAR (Anti Vehicle Theft and Recovery), Anti BAT (Anti Burgelry and Theft), I-CARD (Information Centre for Anti Robbery and Dacoity) Cells का जनपद स्तर पर गठन किया गया है, जिनके द्वारा क्रमश: वाहन चोरों, नकबजनी/चोरी के अपराधियों एवं लूटेरों का सत्यापन कर उनके रिकार्ड को अध्यावधि

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, गोरखपुर।

इन अभियानों व प्रयासों से विगत वर्ष की तुलना में इस वर्ष अपराधों में गुणात्मक कमी देखी जा रही है। उक्त प्रयासों से इस वर्ष अपराध विगत 20 वर्षों की तुलना में न्यूनतम स्तर पर रहा।

लूट, वाहन चोरी व नकबजनी के अपराधों का 03 वर्षीय
तुलनात्मक आकड़ा जनपद गोरखपुर।

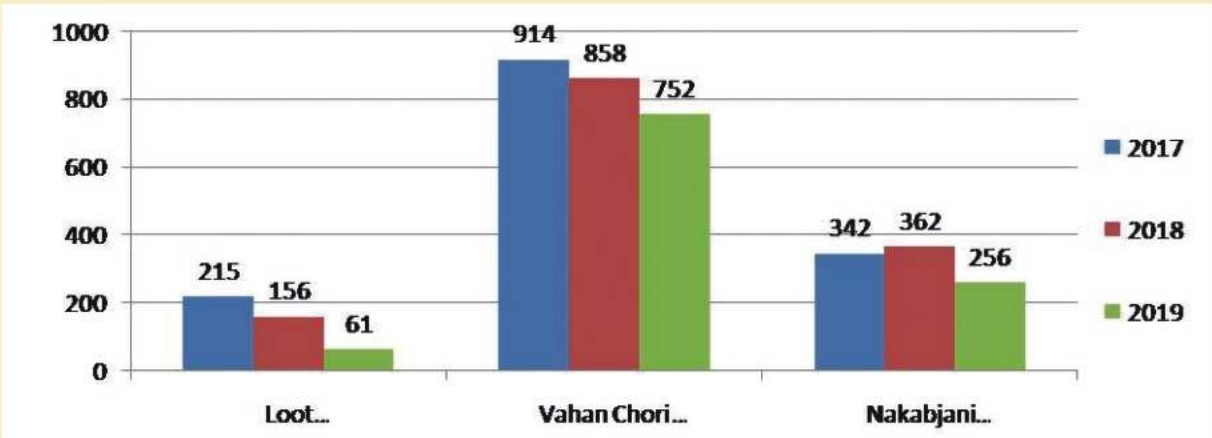

महिला हेल्पलाइन 181 :

किसी महिला के पीड़ित होने, चिकित्सकीय/कानूनी सहायता की आवश्यकता होने पर महिला हेल्पलाइन 181 पर सूचना प्राप्त होते ही प्रदेश स्तर पर क्रियान्वित केन्द्रीय कॉल सेन्टर द्वारा तत्परता से आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान की जाती है। इस टोल फ्री नं. पर महिला किसी भी प्रकार की सरकारी योजनाओं की भी जानकारी ले सकती है। यह टोल फ्री नं. 24 घण्टे क्रियाशील रहता है।

वूमेन पावर लाइन 1090 :

महिला उत्पीड़न की घटनाओं को सख्ती से रोकने के निमित्त वूमेन पावर लाइन 1090 की स्थापना हुई है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में वूमेन पावर लाइन ने अपनी एक अलग पहचान बनायी है, इसके अन्तर्गत **''वूमेन सिक्योरिटी ऐप 1090''** सेवा भी प्रारम्भ की गयी है, जिसके अत्यन्त सकारात्मक परिणाम सामने आए है और इस सेवा से महिलाओं व लड़कियों में सुरक्षा की भावना बलवती हुयी है।

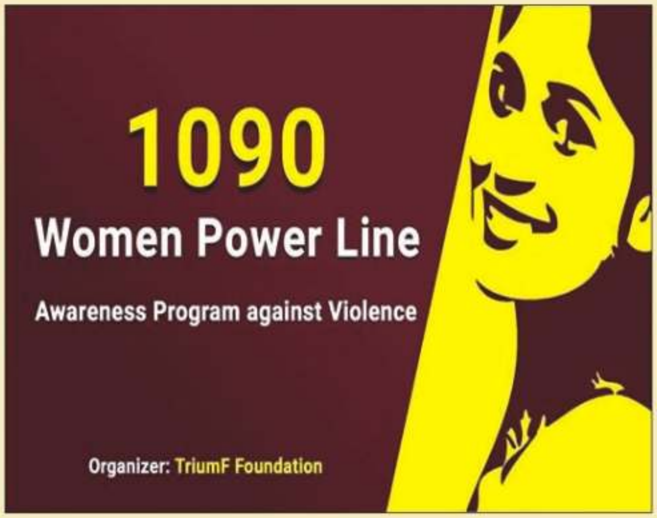

वूमेन पावर लाइन में पीड़ित महिला या उसके रिश्तेदार अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। शिकायत करने वाली महिला की पहचान पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है। पीड़िता को किसी भी दशा में पुलिस थाने या किसी आफिस में नहीं बुलाया जाता है। हेल्प लाइन में हर हाल में महिला पुलिस अधिकारी ही पीड़िता की शिकायत दर्ज करती है। महिला पुलिस कर्मी अपने वरिष्ठ पुरुष पुलिस कर्मी को पीड़िता की केवल उतनी ही जानकारी या सुविधा उपलब्ध कराती है, जो विवेचना में सहायक हो।

महिला सम्बन्धी अपराधों का दो वर्षीय तुलनात्मक आँकड़ा

जनपद गोरखपुर।

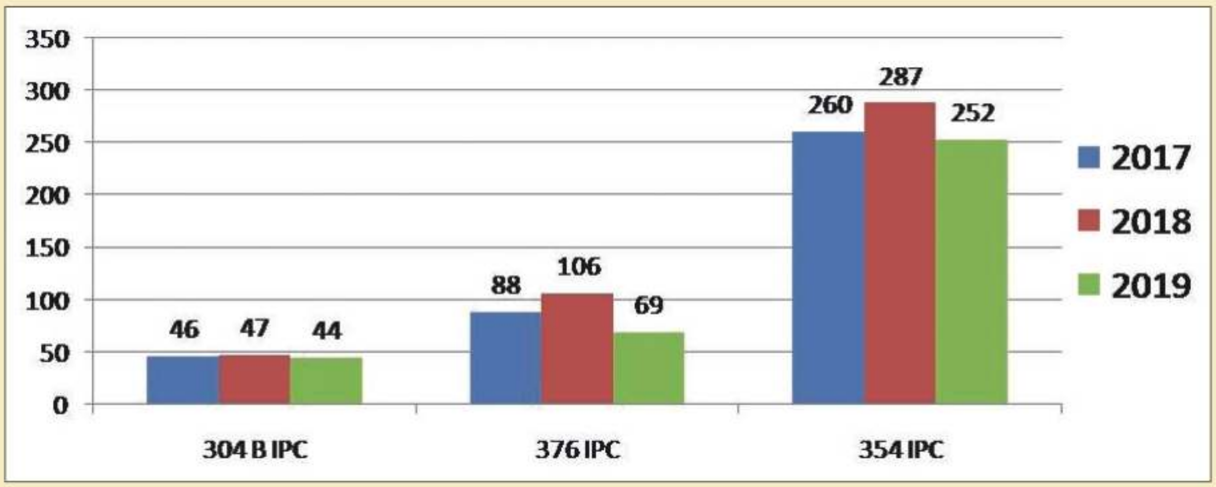

एण्टी रोमियों स्क्वाड :-

जनपद में महिलाओं/बालिकाओं के साथ होने वाली छेड़खनी एवं शोहदों द्वारा परेशान किये जाने आदि की घटनाओं पर पूर्णतय: अंकश लगाने हेतु जनपद के **प्रत्येक थानों पर एण्टी रोमियों स्क्वाड का गठन किया गया है**, इनका कार्य मुख्य रूप से अपने थानाक्षेत्र में भ्रमणशील रहकर व स्कूल/कालेजों में जाकर बालिकाओं से सम्पर्क कर व्हाइट कार्ड के माध्यम से उनके बताये अनुसार ब्लैक स्पॉट व शोहदों को चिन्हित किया जाता है तथा उनको रेड कार्ड जारी कर उनके माता-पिता के साथ प्रत्येक सप्ताह काउंसलिंग की जाती है। फिर भी शोहदों में सुधार न होने पर उनके विरूद्ध अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही अमल में लायी जाती है। जनपद में **अब तक 11,312 व्हाइट कार्ड महिलाओं/बालिकाओं में वितरित कर 109 ब्लैक स्पॉट चिन्हित किये गये एवं 119 लोगों को रोड कार्ड जारी किये गये।**

महिलाओं व बालिकाओं की सुरक्षा को और सुदृढ़ करने के उद्देश्य से जनपद के विद्यालयों में बच्चों को सुरक्षा सम्बन्धी जागरूकता प्रदान करने हेतु अभियान **CAVACH: Community Action to End Violence Against Children** व पुलिस की पाठशाला अभियान चलाया गया। इस अभियान के अन्तर्गत जनपद के **434** विद्यालय में जाकर **1,04,019** छात्रओं को सुरक्षा सम्बन्धी जागरूकता प्रदान की गयी।

1098 चाईल्ड हेल्पलाइन

किसी बच्चे के साथ किसी प्रकार शोषण या फिर अत्याचार होने पर चाइल्ड हेल्प लाइन नम्बर 1098 पर सूचना मिलते ही चाइल्ड लाइन की टीम बच्चे की मदद करती है। किसी बच्चे के अकेला होने, बीमार होने, चिकित्सीय अभाव से पीड़ित होने, परिवार से बिछड़ा होने एवं बच्चे के स्कूल या घर पर शोषण होने आदि पर चाइल्ड लाइन टीम द्वारा उसके सहयोग की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती है।

यातायात व्यवस्था :

आम जन के आबाधित आवागमन के लिये महानगर के प्रत्येक चौराहों, तिराहों पर यातायात पुलिस की ड्यूटी लगाकर यातायात व्यवस्था सुचारू रखी जाती है। यातायात की सुगमता हेतु दिन में बड़े वाहनों को शहर में प्रवेश नहीं दिया जाता है। यातायात प्रबन्धान के लिये सभी आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं।

समस्त गोरखपुर वासियों से पुलिस की अपील :

- अपने घर तथा दूकान के बाहर सड़क पर सीसीटीवी कैमरे लगाए।
- यातायात नियमों का पालन करें तथा हेलमेट/सीटबेल्ट का प्रयोग करें।
- अपने वाहन पर काली फिल्म न लगाएं तथा आगे व पीछे नम्बर प्लेट मानकों के अनुरूप लगाएं।
- पुलिस की नाइट पीकेट तथा बैरियरों पर की जा रही चेकिंग में सहयोग करें।
- किसी भी आपराधिक तत्व की सूचना पुलिस को दें।
- महिला सम्बन्धी अपराध में पुलिस को त्वरित सूचना दें।
- किसी भी अफवाह पर कानून अपने हाथ न लें, अफवाह फैलाने वालों की सूचना तत्काल पुलिस को दें।
- किसी भी लावारिस सामान को स्वयं न छूएं। इसकी सूचना पुलिस को दें।

शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान, गोरखपुर

एन.के. जानू

भारत वर्ष में प्राचीन काल से ही अहिंसा एवं शान्ति की संस्कृति रही है। आदिकाल से भारतीय संस्कृति में वन्य जीवों के प्रति स्नेह व आदर रहा है। चिड़ियाघरों की स्थापना का उद्देश्य उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में वन्य जीवों को व्यापक रूप से अत्याधिक सुविधा में सम्मान दिये जाने का है। वर्तमान में भारत वर्ष में लगभग 300 से अधिक चिड़ियाघर स्थापित है, जबकि उ.प्र. में मात्र दो चिड़ियाघर क्रमशः लखनऊ एवं कानपुर शहर में, एक लायन सफारी पार्क इटावा शहर में तथा 9 डियर पार्क/मिनी जू अन्य शहरों में स्थापित है। जनपद गोरखपुर पूर्वी उ.प्र. का एक बड़ा शहर है। यहां चिड़ियाघर के स्थापित होने से उत्तर प्रदेश के पूर्वान्चल व बिहार के समीवर्ती लोगों का वन्य जीवों के बारे में जानने तथा उनको समीप से देखकर उनके बारे में अध्ययन करने में सुविधा होगी। साथ ही एक पर्यटक स्थल के रूप में इस क्षेत्र का विकास होगा एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी गोरखपुर की पहचान बनेगी।

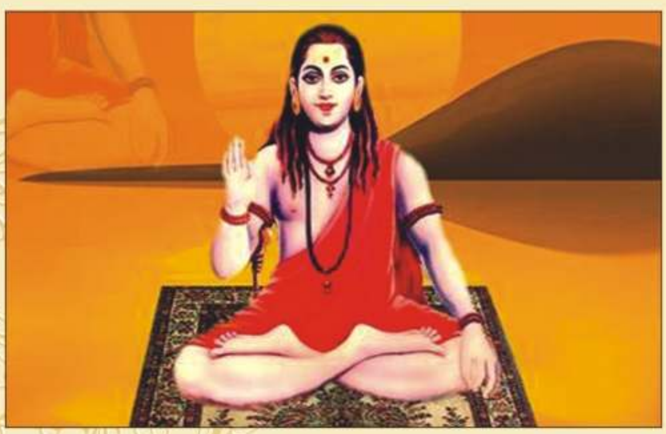

गोरखपुर पूर्वान्चल का एक महत्वपूर्ण स्थल है। यह शहर महायोगी गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज की तपो भूमि रही है, जिसके नाम पर इस क्षेत्र को पूर्व में गोरक्षपुर के नाम से जाना जाता था, जो वर्तमान में गोरखपुर के नाम से प्रख्यात है।

जनपद गोरखपुर में प्राणि उद्यान के स्थापित हो जाने के उपरान्त गोरखपुर को देश के पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट दर्जा प्राप्त हो जायेगा, जिससे गोरखपुर पर्यटन का एक बहुआयामी केन्द्र बन जायेगा तथा पारिस्थितिकीय संतुलन के साथ-साथ वन्य जीवों के महत्व एवं संरक्षण में भी आम लोगों की जागरूकता बढ़ेगी। पर्यटकों का आवागमन बढ़ने से क्षेत्र में रोजगार के नये साधान भी सृजित होंगे।

गोरखपुर की महत्ता को दृष्टिगत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा गोरखपुर के विकास हेतु अथक प्रयास करते हुए अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाएं चलायी गयीं, जिनमें से एक शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान की स्थापना भी है, जो सुरम्य रामगढ़ताल के सन्निकट गोरखपुर-देवरिया बाईपास रोड पर गोरखपुर रेलवे/बस स्टेशन से लगभग 08 किमी. तथा हवाई अड्डे से लगभग 11 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह प्राणि उद्यान पूर्वान्चल का पहला एवं उत्तर प्रदेश का तीसरा प्राणि उद्यान होगा, जो अत्यन्त प्राकृतिक एवं मनोरम स्थल पर स्थापित किया जा रहा है। इसके एक तरफ ऐतिहासिक रामगढ़ताल स्थित है तथा ऐतिहासिक एवं प्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर की दूरी भी चिड़ियाघर से मात्र 10 कि.मी. की है। गोरखपुर शहर राप्ती एवं रोहिन नदियों

मुख्य वन संरक्षक/निदेशक, शहीद अशफाक उल्ला खां, प्राणि उद्यान, गोरखपुर

से घिरा हुआ है तथा महात्मा गौतम बुद्ध की जन्म स्थली कपिलवस्तु तथा परिनिर्वाण स्थली कुशीनगर भी इस शहर से निकट ही है। प्राणि उद्यान के सन्निकट सर्किट हाउस, बौद्ध संग्रहालय, नक्षत्रशाला, नौका विहार एवं निर्माणाधीन वॉटर स्पोर्ट्स कॉम्प्लैक्स इत्यादि के होने से पर्यटन के दृष्टिकोण से यह एक रमणीय स्थल के रूप में विकसित होगा।

इस प्राणि उद्यान की स्थापना का उद्देश्य वन्य जीवों का व्यापक रूप से संरक्षण एवं संवर्द्धन किया जाना तथा पर्यटकों को पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने हेतु प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्व से अवगत कराना है। गोरखपुर प्राणि उद्यान की स्थापना वर्ष 2008-2009 में प्रस्तावित की गई थी। वर्ष 2017-18 से परियोजना की महत्ता को दृष्टिगत पर्याप्त मात्रा में धनराशि की उपलब्धता के फलस्वरूप निर्माण कार्य को द्रुत गति प्रदान की गई। कुल 121.342 एकड़ (49.10 हे.) क्षेत्र में स्थापित हो रहे इस प्राणि उद्यान में लगभग 34.00 एकड़ (28%) क्षेत्र वेटलैण्ड एवं 30.00 एकड़ (25%) क्षेत्र वुडलैण्ड अर्थात् घने जंगल के रूप में पूर्व से ही विकसित है।

प्राणि उद्यान में वेटलैण्ड क्षेत्र एवं वुडलैण्ड क्षेत्र के अद्भुतसंयोजन से गोरखपुर प्राणि उद्यान एक विश्वस्तरीय प्राणि उद्यान के रूप में उद्भूत होगा। उक्त वेटलैण्ड क्षेत्र में प्रवासी पक्षियों के आने तथा वुडलैण्ड क्षेत्र से प्रचुर मात्रा में उत्सर्जित हो रहे आक्सीजन से पर्यटकों को स्वस्थ वातावरण के साथ मनोहारी दृश्य का आनन्द भी प्राप्त हो सकेगा। पर्यटकों को पक्षियों के मध्य विचरण हेतु पक्षी अवलोकन मार्ग (नेचर ट्रेल) का निर्माण भी कराया जा रहा है, जिससे पर्यटक अपने आप को पक्षियों के मध्य रहकर उनके बारे में ज्ञानार्जन कर सकेंगे तथा उनके क्रियाकलापों का लुत्फ उठा सकेंगे।

उक्त के साथ लगभग 20 एकड़ (16.5%) अतिरिक्त क्षेत्र में वृक्षारोपण किया जाना प्रस्तावित है, अर्थात प्राणि उद्यान के क्षेत्र का लगभग 46.5% क्षेत्र वृक्षों से आच्छादित होगा। प्राणि उद्यान को ग्रीन बेल्ट/फारेस्ट लाइक एरिया के रूप में विकसित होने से नगरवासियों/पर्यटकों के लिए प्राणि उद्यान का सम्पूर्ण क्षेत्र बतौर कार्बन सिंक व ग्रीन लंग्स के रूप में कार्य करेगा।

प्राणि उद्यान की स्थापना से रोजगार का सृजन तो होगा ही तथा साथ ही साथ प्राणि उद्यान में आने वाले आगन्तुकों को वन्य प्राणियों के महत्व व उनके संरक्षण से शिक्षित करने के लिए यथोचित कार्यक्रम भी आयोजित किये जायेंगे। विज्ञापनों, पोस्टर, ब्रोशर, हैण्डबिल आदि द्वारा वन्य जीव संरक्षण सम्बन्धी संदेशों का वृहद प्रचार प्रसार, गोष्ठियां, विचार-विमर्श, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं भी

आयोजित की जायेंगी, जो प्राणि उद्यान में आने वाले शोधार्थियों/छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। उक्त के साथ नेचरशॉप स्थापित कर वन्य जीव जागरूकता सम्बन्धित वेब साइट तैयार किया जायेगा एवं आधुनिक दृश्य-श्रव्य माध्यम तथा इण्टरनेट आदि संसाधनों का प्रयोग भी किया जायेगा।

वन्य प्राणियों के संरक्षण, संरक्षित वन्य प्राणियों के प्रजनन/वंशवृद्धि हेतु अत्याधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों एवं संसाधनों का प्रयोग कर लुप्तप्राय प्रजाति के वन्य जीवों के संग्रहण और प्रजनन कार्य को प्राथमिकता प्रदान करते हुए उनके अन्य प्रजाति के वन्य प्राणियों के संख्या को संग्रहण योजना के माध्यम से इस प्रकार नियंत्रित किया जायेगा कि प्रत्येक वन्य प्राणि, प्राणि उद्यान के निहितार्थ उद्देश्यों को पूर्ण करे। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्राणि उद्यान प्रबन्धन द्वारा प्रत्येक प्रजाति की विस्तृत प्रबन्ध योजना भी तैयार की जा रही है।

प्राणि उद्यान में निर्मित किये जाने वाले विभिन्न भवनों/संरचनाओं को आकर्षक एवं भव्य स्वरूप प्रदान करने के लिए उनमें स्टोन क्लैडिंग, स्टोन जाली, सैंड स्टोन टाइल्स आदि का प्रयोग किया जाना। साइनेज भवन में कांस्य धातु की बुद्ध प्रतिमा, प्राणि उद्यान में सैंड स्टोन व फाइबर निर्मित विभिन्न वन्य जीवों की आकृतियां भी लगायी जा रही हैं।

प्राणि उद्यान में कुल 33 बाड़ों के एनिमल हाउस को भूकम्परोधी बनाया जा रहा है। बाड़ों में सम्वर्द्धन (इनरीचमेन्ट) कार्य से ''इमरसन इफेक्ट'' उत्पन्न कर वन्य प्राणियों को प्राकृतिकवास उपलब्ध कराया जाएगा तथा वन्य प्राणियों एवं पर्यटकों की प्रभावी सुरक्षा के लिए प्राणि उद्यान क्षेत्र में उच्च श्रेणी के क्लोज सर्किट कैमरे भी लगाये जायेंगे। प्राणि उद्यान के सीवेज वाटर व एनिमल हाउस की अपशिष्टियों के शोधन हेतु प्राणि उद्यान के सन्निकट स्थित जल निगम के एस.टी.पी. संयंत्र का प्रयोग किया जाएगा तथा वन्य जीवों के स्वास्थ्य, वैज्ञानिक विधि से रख-रखाव, उनके स्वभाव के अध्ययन और अनुसंधान हेतु अत्याधुनिक पशुचिकित्सालय का निर्माण भी किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त मृत वन्य प्राणियों व पशुचिकित्सालय की अपशिष्टियों के निस्तारण हेतु इन्सीनेरेटर को भी स्थापित किया जा रहा है।

बाघ का बाड़ा

वाक-इन-एवियरी

गोरखपुर प्राणि उद्यान में 58 से ज्यादे प्रजाति के 387 वन्य प्राणियों के रखे जाने की व्यवस्था की जा रही है, जिनमें बब्बर शेर, बाघ, तेन्दुआ, गैंडा, जेब्रा, दरियाई घोड़ा, 02 प्रजाति के भालू, 03 प्रजाति के बन्दर, 06 प्रजातियों के हिरण, लकड़बग्घा, भेड़िया, एक्वेरियम, तितली पार्क, घड़ियाल, मगरमच्छ सहित विभिन्न प्रजाति के सरिसृप एवं पक्षी आदि मुख्य आकर्षण के केन्द्र होंगे। इसी क्रम में शक्करबाग जू, जूनागढ़ से 07 (2:5) बब्बर शेरों को गोरखपुर प्राणि उद्यान में स्थानान्तरण के पूर्व इटावा सफारी

पार्क, इटावा में ट्रांजिट के तौर पर रखे जाने हेतु दिनांक 25.09.2019 को सकुशल इटावा सफारी पार्क लाया गया। उक्त 07 (2:5) बब्बर शेरों में से 03 (1:2) बब्बर शेरों को गोरखपुर प्राणि उद्यान में निर्माण उपरान्त स्थानान्तरित किया जायेगा। इसके साथ ही साथ प्राणि उद्यान के लिए 02 गैंडा (1:1) उपलब्ध कराये जाने हेतु मा. मुख्यमंत्री जी, उ.प्र. सरकार के अनुरोध पर मा. मुख्यमंत्री जी, असम सरकार द्वारा उपरोक्त गैंडों को उपलब्ध कराने हेतु सैद्धान्तिक सहमति भी दी जा चुकी है।

प्राणि उद्यान में वन्य प्राणियों के कुल 06 क्वैरेन्टाइन सेन्टर, 04 रेस्क्यू सेन्टर, 01 अत्याधुनिक वेट हास्पिटल, 01 पोस्टमार्टम हाउस, 01 किचन व फीड स्टोर तथा इन्सीनेरेटर का निर्माण भी कराया जा रहा है। चूंकि गोरखपुर प्राणि उद्यान पूर्वांचल का एकमात्र प्राणि उद्यान है, ऐसे में यहां रेस्क्यू सेन्टर इत्यादि के बनने से भविष्य में पूर्वान्चल व इसके समीपवर्ती बिहार राज्य एवं नेपाल के जंगलों से आबादी क्षेत्र में भटके वन्य प्राणियों को रेस्क्यू कर उनके तत्काल उपचार इत्यादि की व्यवस्था हो सकेगी।

इसके साथ ही साथ प्राणि उद्यान में जन सुविधाओं यथा इन्टरप्रेटेशन सेन्टर, 4डी थियेटर, मुक्ताकाशी मंच (ओपेन एयर थिएटर), ए.टी.एम. बूथ, क्लॉक रूम, सोवेनियर शाप्स, 01 कैफेटेरिया, 01 कीआस्क, 07 गजीबो, 05 रेस्टिंग शेड, 300 बेन्चेज, 02 ट्वाय ट्रेन, 02 ट्रायलेट ब्लाक, दिव्यांग हेतु व्हील चेयर, शिशुओं हेतु प्रैम, गोल्फ कार्ट इत्यादि की भी व्यवस्था की जा रही है।

कछुए का बाड़ा

हिरण का बाड़ा

शहीद अशफाक उल्ला खां प्राणि उद्यान निर्माण कार्य के अपने अन्तिम चरण में है। शीघ्र ही इसका निर्माण पूर्ण कर इसे जनोपयोगी बनाया जायेगा।

तस्वीरों में बोलता गोरखपुर

संदीप कुमार श्रीवास्तव

एक तस्वीर हजारों शब्दों के बराबर होता है। हर तस्वीर आकर्षित करती है। आज तेजी से बदलता शहर गोरखपुर प्रगति के पथ पर नयी गाथा लिखने को तैयार है। आज दृश्य कला की अन्य विधाओं, माध्यमों के साथ छायांकन कला भी अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रही है। जीवन की विविधता ऐतिहासिक, स्थापत्य की प्रचुरता, विविध रंगो की छटाओं से ओत प्रोत निसर्ग, रीति-रिवाज, संस्कृति, धूप छाव को संजोए रखने मे तस्वीरें अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गया है। कैमरे की नजर और तस्वीरों के माध्यम से शहर गोरखपुर को निहारना अद्धभूत है। तस्वीर स्वयं संवाद करने के लिए खिचता और सिचता है। जो भाव शब्द प्रकट नहीं कर पाते वहाँ तस्वीर स्वयं खूद ब खुद आपसे संवाद करते है। तस्वीरों में बोलता गोरखपुर की प्रस्तुति का साक्षात्कार करके यात्री व दर्शक कोमलता से सुखद यात्रा का अनुभव कर आहलादित होंगे हैं।

पूर्वांचल की सांस्कृतिक, धर्म, आस्था, शिक्षा, पर्यटन एवं राजनीतिक धुरी के केन्द्र बिन्दु गोरखपुर में आस्था की गुंज और अध्यात्म की शान्ति भी है। पूर्वांचल में गोरखपुर का इतिहास गौरवशाली है। गोरखपुर अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, एवु पुरातात्विक दर्शन स्थलों की विविधता को समेटे हुए है। जहाँ नाथ सम्प्रदाय के विशाल आंगन में तपस्या में लीन शिव अवतार गुरू गोरक्षनाथ का भव्य गोरखनाथ मन्दिर दर्शनीय है। जिसकी अखण्ड धुनी एवं लौ युगों युगों से प्रज्जवलित है। साथ ही तथागत भगवान बुद्ध की महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर, संतकबीर दास के जीवन दर्शन सिद्धान्तों को पार लगाता निर्मल मगहर है। यहीं क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल की शहादत स्थली गोरखपुर की जेल एवं घंटाघर साक्षी है। स्वतंत्रता की दिशा बदलने वाले चौरीचौरा काण्ड का पुलिस स्टेशन एवं शहादत स्तम्भ इतिहास से जुड़ने का अवसर देता है। साहित्यक छांव में मुंशी प्रेमचन्द, फिराक गोरखपुर, हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाई जी) की साहित्यक सेवाओं की कर्मभूमि गोरखपुर रहा है। ऐतिहासक दृष्टिकोण से बंसतपुर सराय, रीढ़साहब का धर्मशाला, विष्णु मन्दिर के ब्लैक स्टोन में स्थापित विष्णु प्रतिमा, जगरनाथपुर के शीशमहल में भगवान जगन्नाथ की छवि मनुहारी है। इमामबाड़ा, गीताप्रेस, गीता वाटिका, जैन मन्दिर, मान सरोवर, गुरूद्वारा, प्राचीन सेन्ट जॉन चर्च, ईदगाह, नगर निगम, सुरजकुण्ड, राजकीय बौद्ध संग्राहलय, रेल म्यूजियत, पूर्वांचल संग्रहालय, रामगढ़ताल गोरखपुर के प्रमुख पर्यटन के रूप में सैलानियों को अपनी ओर आकृषित करते हैं। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों के विषय में संक्षिप्त जानकारी पर्यटन की दिशा में एक संकेतक प्रस्तुति है।

सम्प्रति-शोधार्थी, स्वतंत्र चित्रकार एवं छायाकार

गोरखनाथ मन्दिर :- गोरखपुर नगर के उत्तरी भाग में रेलवे स्टेशन से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक महायोगी गुरू गोरक्षनाथ की साधना स्थली गोरखनाथ मन्दिर स्थित है। मान्यता एवं वास्तु संरचना की दृष्टि से गोरखनाथ मन्दिर उत्तर भारत का उत्कृष्ट मन्दिर है, मकर संक्रान्ती पर देश के कोने कोने से लाखों श्रद्धालू खिचड़ी चढ़ाने आते हैं। गोरखनाथ मन्दिर के प्रांगढ़ में शिव अवतार योगी गुरू गोरक्षनाथ की श्वेत संगमरमर की दिव्य मूर्ति ध्यान मुद्रा में प्रतिष्ठित है। परिक्रमा भाग में भगवान शिव की भव्य मांगलिक मूर्ति, विघ्न विनाशक गणेश, मन्दिर की पश्चिमी कोने में काली माता, उत्तरी दिशा में काल भैरव, और उत्तर की ओर पार्श्व में शीतला माता का मन्दिर है। पास ही भैरव, शिव मन्दिर, राधा कृष्णा, हट्ठी माई मन्दिर, संतोषी माता मन्दिर, राम दरबार, नवग्रह देवता, शनि देवता, भगवान विष्णु मन्दिर, अखण्ड धुना, विशाल हनुमान मन्दिर एवं भीम सरोवर के पास में चीर निद्रा में लेटे विशालकाय महाबली भीम, योगीराज ब्रह्मनाथ, गम्भीरनाथ, महंत दिग्विजयनाथ और महंत अवैधनाथ की समाधि स्थली है। मन्दिर की परिक्रमा के साथ साथ आस्था के जयघोष में रोम रोम रोमांचित हो उठता है।

गोरखनाथ मन्दिर का विहंगम दृष्य शिव अवतार गुरू गोरक्षनाथ की भव्य प्रतिमा

लाइट एण्ड शो पर नाथ महिमा का दर्शन :- पर्यटन की संभावनाओं को देखते हुए उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग और उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सत प्रयासों से मन्दिर प्रांगढ़ के भीम सरोवर में लेजर रंग बिरंगे लाइट एवं शो कार्यक्रम का विधिवत् शुभारम्भ नव वर्ष का शुभ संकेत है। जहाँ 33 फिट के विशाल वाटर

स्क्रीन पर नाथ पंथ की महिमा का दर्शन महाभारत धारावाहिक के हरीश भिमानी की आवाज में रोमांचित करता है।

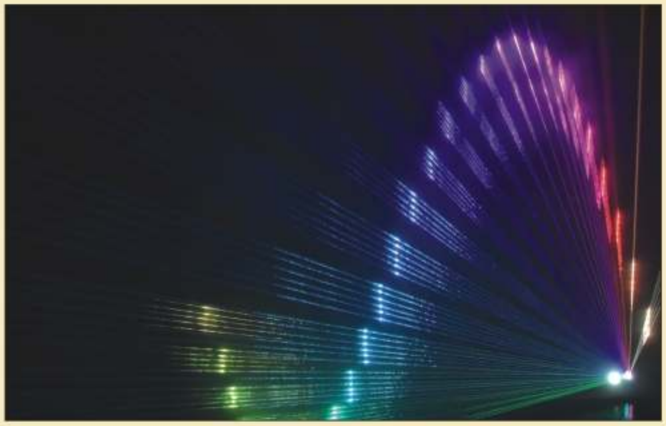

इमामबाड़ा :- शहर के मध्य में प्राचीन मुगल शैली की स्थापत्य वास्तु कला का उत्कृष्ट दर्शनीय स्थल है। इमामबाड़े के अन्दर एक मस्जिद एवं एक ईदगाह है जहां आसफुद्दौला द्वारा भेंट किये गये सोने एवं चाँदी की तीन ताजिये रखे हुए हैं। ईद एवं मोहर्रम के समय मेले का आयोजन एवं ताजियों का दर्शन दर्शनीय होता है। गोरखपुर की जमीं पर कौमी एकता एवं आपसी सौहार्द का प्रतीक इमामबाड़ा है। इमामबाड़े के अन्दर सूफी संत रौशन अली शाह की धुनी आज भी प्रज्जवलित है।

प्रसिद्ध इमामबाड़ा

सोने-चाँदी का आकर्षित ताजिया

गीताप्रेस :- यह स्थल गोरखपुर नगर के शेषपुर मुहल्ले में स्थित है। भारतीय संस्कृति व सनातन धर्म से सम्बन्धित धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशन व प्रसार में विश्व में गीता प्रेस का मूल योगदान है। उपनिषद, श्रीमद्भागवत गीता, बाल्मिकी रामायण, महाभारत, समस्त तुल्सी साहित्य एवं बहुमूल्य बहुभाषी आशा में मुद्रित पुस्तकों का विशाल संग्रह यहाँ है। अब तक 68 करोड़ 28 लाख से अधिक पुस्तकें गीताप्रेस के मुद्रालय से विभिन्न संस्करणों में प्रकाशित हो चुके हैं। गीताप्रेस के लगभग 1927 वर्तमान प्रकाशनों में 877 प्रकाशन संस्कृत एवं हिन्दी के हैं। शेष प्रकाशन मुख्यतया गुजराती, मराठी, तेलुगु, बंगला, ओड़िआ, तमिल, कन्नड़, अंग्रेजी आदि भारतीय भाषाओं में है। श्री रामचरितमानस आदि का प्रकाशन नेपाली भाषाओं में भी है। गीताप्रेस द्वारा तीन मासिक पत्र 'कल्याण' तथा युग - कल्याण हिन्दी में एवं kalyana- kalpataru अंग्रेजी में प्रकाशित किये जाते है। कल्याण की वर्तमान समय में लगभग 2,00,000 प्रतिया छपती हैं।

गीताप्रेस लीला चित्र मन्दिर :- गीताप्रेस के प्रांगढ़ में स्थित लीलाचित्र मन्दिर अध्यात्मिक चित्रों की विशाल चित्रवली श्रृंखला है। यहाँ भगवान श्रीराम और भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं के रमणीय 684 चित्रों के अतिरिक्त कलाकार श्री वी.के. मित्रा, भगवानदास, जगरनाथ, घासीराम, देवलालीकर, बृजेन्द्र मधुबन एवं चित्रकार पी. राव जैसे प्रतिभावान चित्रकारों द्वारा बनाये गये अनेक हस्तनिर्मित चित्रों का संग्रह है। चित्र मन्दिर की दिवार पर संगमरमर के पत्थरों पर सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत गीता एंव संत भक्तों के सात सौ से अधिक दोहे और वाणियाँ खुदी हुई हैं। भगवान श्री राम एवं श्री कृष्ण के जीवन दर्शन की अद्भुत चित्रों की चित्रावली दर्शकों के अवलोकनार्थ है। कुछ चित्रों में शुद्ध सोने और चाँदी के रंगों का प्रयोग आकर्षक है।

विष्णु मन्दिर

चर्तुभुजी श्री विष्णु की ब्लैक स्टोन में निर्मित प्रतिमा

विष्णु मन्दिर :- असुरन चौराहे के पास स्थित विष्णु मन्दिर में स्थापित चर्तुभुजी श्री विष्णु की ब्लैक स्टोन में निर्मित गुप्तकालीन प्रतिमा श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। इतिहास दस्तावेजों के अनुसार सन् 1914 ई. में मन्दिर के भगनावेशों एवं पास के पोखरे से श्री विष्णु की आदमकद विशाल प्रतिमा प्राप्त हुई थी जिसे मन्दिर प्रांगढ़ में स्थापित किया गया है। मन्दिर परिसर का वास्तु शैली पर यूरोपियन शिल्प की छाप दृष्टिगत होती है।

गीता वाटिका :- गीता वाटिका साहित्यिक सेवा के मर्मज्ञ श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार (भाईजी) के अथक प्रयासों से श्री कृष्ण-राधा को समर्पित एक विशाल अध्यात्मिक केन्द्र है। जहाँ परिसर में राधाष्टमी का त्योहार निरन्तर सर्कीतन, श्रीकृष्ण लीला एवं निरन्तर श्री पाठ का आयोजन होता रहता है। मुख्य मन्दिर के प्रांगढ़ में श्री कृष्ण-राधा की विशाल मनुहारी प्रतिमा के साथ श्री राम सीता, भगवान श्री शंकर-पार्वती, माता दुर्गा, लक्ष्मी, हनुमान एवं अन्य देवी देवताओं की प्रतिमाएं स्थापित हैं। परिसर में ही सुप्रसिद्ध पत्रिका कल्याण के प्रथम सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी की समाधि स्थल, केंसर अस्पताल एवं राधा-कृष्ण साधना केन्द्र सैलानियों की आस्था से जुड़ा हुआ है।

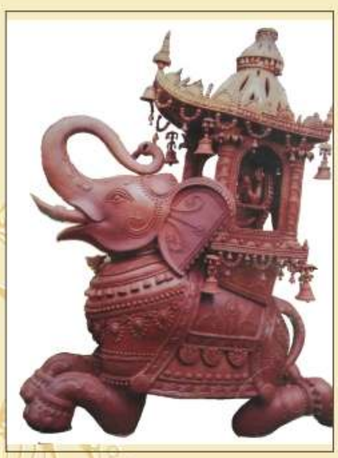

विश्व प्रसिद्ध टेराकोटा

टेराकोटा को नई पहचान देता औरंगाबाद :- गोरखपुर के औरंगाबाद गाँव की माटी से बने मूर्ति शिल्प की विश्व बाजार में भारी मांग है। पीढ़ियों की परम्परा से माटी में सने हाथों से बने अद्‌भुत कलाकृतियाँ अप्रतीम हैं। मूर्तियों में हाथी घोड़े के अलावा ढोलक शहनाई बजाते श्री गणेश के अलावा लगभग 500 से भी ज्यादा मिट्टी की

कलाकृतियाँ को बाजार में उतारा गया है। औरंगाबाद के गाँव में दर्जनों हस्तशिल्पी कलाकार राष्ट्रपति पुरस्कार, एवं राज्य पुरस्कारों से सम्मानित हैं। यहाँ भी पर्यटन की दृष्टि से देश विदेशी यात्री आकर यहाँ की कला को कैमरे में कैद करते दिखते हैं।

बसंतपुर सराय :- शहर की सबसे पुरानी ऐतिहासिक धरोहर बंसतपुर सराय का निर्माण 1610 में जमींनदार बसंत सिंह ने बनवाया था। मुगल सम्राज्य ने औरंगजेब के पुत्र मुअज्जम ने इसे किले में शरण ली थी जिसके बाद 1801 ई. में बसंतपुर सराय पर अंग्रेजों का अधिपत्य रहा। इतिहासकारों के अनुसार राप्ती नदी सराय के पास से बहती थी जलमार्ग से आने पर व्यापारी यहीं रूकते थे। वर्तमान समय में इन्टेक के प्रयासों से दिल्ली हाट की तर्ज पर यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय बाजार स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। इसी समय में बेतियाहाता में बना रीढ़ साहब का धर्मशाला बसंतपुर सराय के सापेक्ष है। इमारत की रूप रेखा देखने पर दोनों सराय एक ही समय में निर्मित प्रतीत होते हैं।

राजकीय बौद्ध संग्रहालय :- संग्रहालय कला एवं संस्कृति के संरक्षण व धरोहरों का ध्वजवाहक होता है। राजकीय बौद्ध संग्रहालय 1986-87 में उ.प्र. शासन के संस्कृति विभाग द्वारा स्थापित हुई। संग्रहालय में भारतीय इतिहास कला संस्कृति एवं पुरात्तव की जानकारी जनमानस को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से निरन्तर शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। संग्रहालय में जैनविथिका, बौद्ध विथिका, प्रस्तर मूर्तियां, सिक्के, पाण्डुलीपियाँ, लघु चित्र, थंका चित्र एवं आभूषण आदि कलाकृतियाँ संग्रहित हैं। प्रस्तर मूर्तियों में अष्टभुजी नृत्य मुद्रा में गणेश, विष्णु, पुषाणकालीन कुबेर, गुप्तकालीन बुद्ध, शैव, वैष्णों धर्म से सम्बन्धित धातु काष्ठ, हाथी दांत एवं शीशे से बनी कलाकृतियां पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। कला एवं धरोहरों के प्रेमी वर्ष भर लगातार संग्रहालय में भ्रमण करके अपने ज्ञान की वृद्धि करते हैं।

रामगढ़ताल :- कुछ वर्ष पूर्व सुनसान सा दिखने वाला रामगढ़ताल, नौका बिहार और उसके आस-पास के क्षेत्र उ.प्र. सरकार एवं पर्यटन विभाग की ओर से किये जा रहे सौंदर्यीकरण से गुलजार हो गया है। यहाँ मार्निंग वाकर्स के ठाहकों व योग के साथ बतकही के बीच सांझ ढ़लते ढ़लते पूरा परिक्षेत्र लाइट से जगमगा उठता है। पिकनिक स्पाट या यूं कहले कि मैरीन ड्राइव में तब्दील हो चुके इस प्राकृतिक झील में जहां प्रवासीय पक्षियों का बसेरा है वही पर्यटक एवं आस पास के लोगों की चहल पहल से रोजगार एवं पर्यटन को एक नई उम्मीद दिखी है। रामगढ़ताल में लाइट एण्ड शो पर नाथ महिमा एवं गोरखपुर का दर्शन लेजर रंग बिरंगे लाइट एवं शो कार्यक्रम नियमित दर्शक देख रहे है ं। रामगढ़ताल के दक्षिणी पूर्वी छोर पर बनाये जा रहे प्राणी एवं जन्तु उद्यान एवं आडोटोरियम र्निमित हो रहा हैं। पर्यटन की दृष्टि से विनोद वन, बुढ़िया माई मन्दिर, तरकुलहा देवी मन्दिर, गोलघर काली मन्दिर, हनुमान मन्दिर, मुंजेश्वर नाथ मन्दिर, कालीबाड़ी मन्दिर, विन्ध्यवासनी पार्क, इन्दिरा बाल बिहार, मुंशी प्रेमचन्द्र पार्क, अम्बेडकर पार्क, वाटर स्पोर्ट, लालडिग्गी पार्क आदि गोरखपुर पर्यटन क्षेत्र की दृष्टि से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। गोरखपुर शहर को राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर विमान सेवा से जोड़ने के उद्देश्य से गुरू गोरक्षनाथ हवाई अड्डा टर्मिनल को भी विस्तारित किया गया है। गोरखपुर पर्यटन क्षेत्र के विकास हेतु प्रदेश सरकार निरन्तर प्रयत्नशील है। पूर्वांचल का क्षेत्र विकास के विभिन्न क्षेत्रों में भावी संभावनाओं को समेटे हए है।

रामगढ़ताल में लाइट एण्ड शो

तिरंगे के रोशनी मे जगमगाता शहर

अस्तांचल सूर्य का मनोहारी दृष्य

सुरजकुण्ड धाम पर दीपोत्सव का विहंगम दृष्य

होली उत्सव पर आयोजित शोभा यात्रा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

सहारा स्टेट के प्रागंढ में भारत माता मंदिर

भगवान पार्श्वनाथ की ब्लैक स्टोन एवं स्वर्ण प्रतिमा जैन मंदिर आर्यनगर

ईदगाह मस्जिद

विन्ध्यवासिनी पार्क

क्राइस्ट चर्च सीविल लाइन

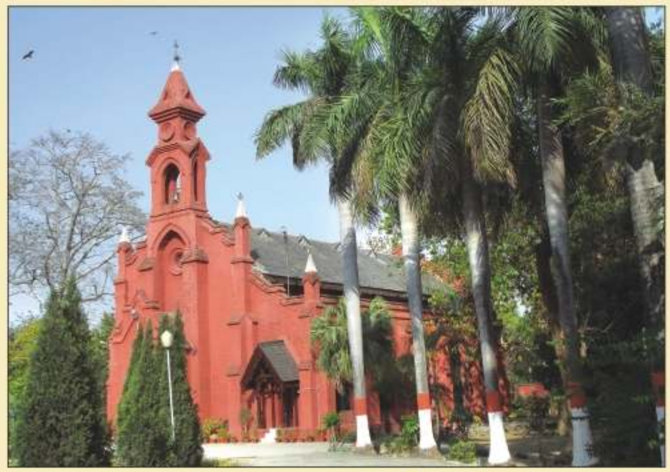

सेन्टएण्डयूज चर्च कौवाबाग

एशिया का सबसे लंबे प्लेटफार्म
गोरखपुर रेलवे स्टेशन का विहंगम दृष्य

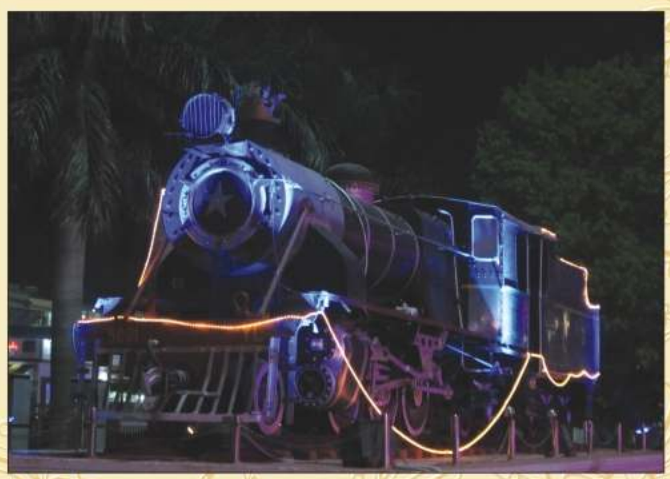

नैरोगेज ट्रेन

ऐतिहासिक नगर निगम भवन

मुक्तेश्वरनाथ मंदिर

नक्कोशाह बाबा की मजार

कबीरदास का मठ एंव मजार मगहर

नौका विहार रामगढ़ताल व्यू प्वाइंट

रामगढ़ताल स्थित रंगीन फैब्वारे

सर्किट हाउस

चौरीचौरा कांड शहीद स्मारक पुलिस लाईन चौरीचौरा

चौरीचौरा शहीद स्मारक

रेलवे स्टेशन महाराणा प्रताप चौराहा

डोहरिया कला शहीद स्मारक सहजनवा

शहीद बन्धू सिंह स्मारक तरकुलहा देवी मंदिर प्रांगढ

नक्षत्रशाला तारामण्डल

नेहरू पार्क विश्मिल स्मारक लालडिग्गी

गोरखपुर महोत्सव का प्रतीक चिह्न

- रविन्द्र कुमार*

अर्धवृत्ताकार इस लोगों में दो वृत्त है। बाहरी वृत्त, जो कि उगते सूर्य के रंग का है, के शीर्ष के मध्य में शिवावतारी महायोगी गुरु गोरखनाथ का अंकन है, जो गोरखपुर निवासियों की आस्था के महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ ने योग एवं अपने सहज जीवन दर्शन के उपदेश से पूरे देश को प्रभावित किया। महायोगी गुरु गोरखनाथ के एक पार्श्व में महाकरूणा, महाप्रज्ञा एवं प्राणिमात्र के प्रति मैत्री का संदेश देने वाले भगवान बुद्ध का अंकन है। गोरखपुर परिक्षेत्र भगवान बुद्ध के जन्म, चारिका एवं उपदेश का केन्द्र रहा है। उनके उपदेश भारत की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुये अनेक देशों में स्वीकृत हुये। दूसरे पार्श्व में अंधविश्वास एवं कुरीतियों के विरूद्ध प्रभावी आवाज उठाने वाले मस्ती और फक्कड़ाना स्वभाव वाले संतकबीर का अंकन है। इसके अतिरिक्त पूरे बाहरी वृत्त में यहाँ के जीवन को उल्लसित एवं उत्साहयुक्त बनाने वाले तत्वों का प्रतीकात्मक अंकन है, जिसमें स्थानीय वाद्ययन्त्रों से युक्त गवैयों का, यहाँ के तालों–नदियों में मस्तीपूर्वक नाव चलाने तथा मछली पकड़ने वालों एवं खिलाड़ियों का प्रतीकात्मक अंकन हुआ है। शान्ति के प्रतीक श्वेत रंग के भीतरी वृत्त में इस परिक्षेत्र के जन–जीवन को प्रभावित करने वाले धार्मिक स्थलों, महत्वपूर्ण संस्थाओं के वास्तु प्रतीकों का अंकन हुआ है। वृत्त के उपरी मध्य में आकाश की ओर उठते तीन शिखरों से युक्त श्री गोरखनाथ मंदिर का अंकन है। मान्यता एवं वास्तु संरचना की दृष्टि से यह उत्तर–भारत का उत्कृष्ट मंदिर है। यह मंदिर यहाँ के लोगों की आस्था का केन्द्र है। मकरसंक्रान्ति का पर्व यहाँ का महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन यहाँ पर देश के कोने–कोने से आकर लाखों श्रद्धालु खिचड़ी चढ़ाते हैं और मन्नत मानते हैं। गोरखनाथ मंदिर के बाँये पार्श्व में 1885 ई. में स्थापित रेलवे स्टेशन का वास्तु है, रेल के कारण ही यहाँ बंगाली, सिन्धी एवं पंजाबी समाजों का आगमन सम्भव हुआ। रेल यहाँ का महत्वपूर्ण संचार माध्यम है, जिसने व्यापार एवं पर्यटन को बढ़ावा दिया।

मंदिर वास्तु के दाहिनी ओर इस परिक्षेत्र के बौद्ध वास्तु का अंकन है। रेलवे वास्तु के ठीक नीचे की ओर इमामबाड़ा है इसका निर्माण अवध के नबाब आसफुद्दौला द्वारा करवाया गया था। इसका निर्माण मुगल शैली स्थापत्य के आधार पर किया गया था। इसके निर्माण में मेहराबों एवं शहतीरों का प्रयोग हुआ है। इमामबाड़े के अन्दर एक मस्जिद एवं एक ईदगाह है। इमामबाड़े के अन्दर आसफुद्दौला द्वारा प्रदान किया गया सोने व चाँदी के तीन ताजिये रखे हुये हैं। इमामबाड़ा एवं यहाँ रखा ताजिया यहाँ के मुस्लिम समाज की श्रद्धा का केन्द्र है।

इमामबाड़े के ठीक बगल में गोरखपुर की श्रीवृद्धि करने वाली संस्था गीताप्रेस का अंकन है। इस संस्था की स्थापना श्री जयदयाल गोयन्दका जी ने किया था। सस्ते दामों पर धार्मिक एवं नैतिक साहित्य का प्रकाशन, प्रसार तथा प्रचार करना इस संस्था का प्रमुख उद्देश्य है। इस संस्था के यश का आधार यहाँ से प्रकाशित होने वाली दो पत्रिकायें कल्याण (हिन्दी में) एवं कल्याण कल्पतरू (अंग्रेजी में) हैं।

गीताप्रेस के ऊपर दाहिनी ओर गोरखपुर के जीवन की धड़कन एवं स्वस्थ पर्यावरण का आधार रामगढ़ ताल का अंकन है। छठी शताब्दी ईस्वी पूर्व में यहाँ कोलिय गणराज्य था। इसके नाम के साथ लगे 'गढ़' शब्द से भी संकेत मिलता है कि यहाँ कभी किला रहा होगा। आज रामगढ़ ताल महत्वाकांक्षी योजनाओं के द्वारा पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो रहा है।

रेलवे वास्तु के ऊपर बशारतपुर के चर्च का अंकन हुआ है। जनश्रुति के अनुसार इस चर्च का निर्माण 1829 ई. में हुआ था। 1857 ई. के विद्रोह में नष्ट हो गये इस चर्च का पुनर्निर्माण सन् 1859 इस्वी में हुआ। यह चर्च सेंट जॉन्स गोथिक चर्च बशारतपुर के नाम से जाना जाता है। क्रिशमस डे, इस्टर, गुड फ्राइडे, के दिन चर्च में विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन होता है।

'गोरखपुर महोत्सव' लेख के साथ ही अर्धवृत्त समाप्त होता है। इसके नीचे कलात्मक पट्टिका पर गोरखपुर महोत्सव के ध्येय वाक्य 'आ रोह तमसो ज्योतिः' लिखा हुआ है। यह ध्येय वाक्य अथर्ववेद (8.1.8) से लिया गया है। इसमें अज्ञान के अन्धकार से निकलकर ज्ञान के आलोक की ओर बढ़ने का आह्वान किया गया है। इस मंत्र के ऋषि ब्रह्मा हैं, देवता आय एवं छन्द विराट पथ्यावृहती है। इस पूरे सूक्त में मृत्यु से जीवन की ओर, अतीत से निकलकर भविष्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ने का आह्वान किया गया है। मेरी कामना है कि गोरखपुर के जनमानस में उल्लासपूर्ण जीवन का रंग भरे तथा प्रकाश एवं ज्ञान का उजाला फैले। गोरखपुर समग्र विकास के रास्ते पर अग्रसर हो।

*क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी / सचिव, महोत्सव समिति, गोरखपुर

गोरखनाथ
मंदिर
गोरखपुर

गीताप्रेस
गोरखपुर

चर्च
गोरखपुर

since 1940

७९ सालों के विश्वास का प्रतीक ईमानदारी से नैतिकता की बुनियाद पर आपकी अविरत सेवा मे शामिल है।

AISSHPRA GEMS AND JEWELS | Paalm Paradise Remarkable Residences | सुमंगल बनारस लहंगा साड़ी सूट | AISSHPRA RESORTS SOLUTIONS PVT. LTD.

हरी प्रसाद गोपी कृष्ण सराफ प्रा. लि.

गोपी गली, हिंदी बाजार | 18 पार्क रोड, ऐश्प्रा क्रासिंग, गोरखपुर

ऐश्प्रा लाईफ स्पेसेस (ALS): बलदेव प्लाजा, गोलघर, गोरखपुर

सुमंगल बनारस: 2nd फ्लोर, ऐश्प्रा बिल्डिंग, पार्क रोड, गोरखपुर

ऐश्प्रा रिसॉर्टस: टूरिस्ट हॉउस, गोरखपुर

गोरखपुर | देवरिया | पडरौना | बस्ती | लखनऊ | बलिया | आजमगढ़

Toll Free: 18001201299 | www.aisshpra.com Follow us on: @AisshpraJewels

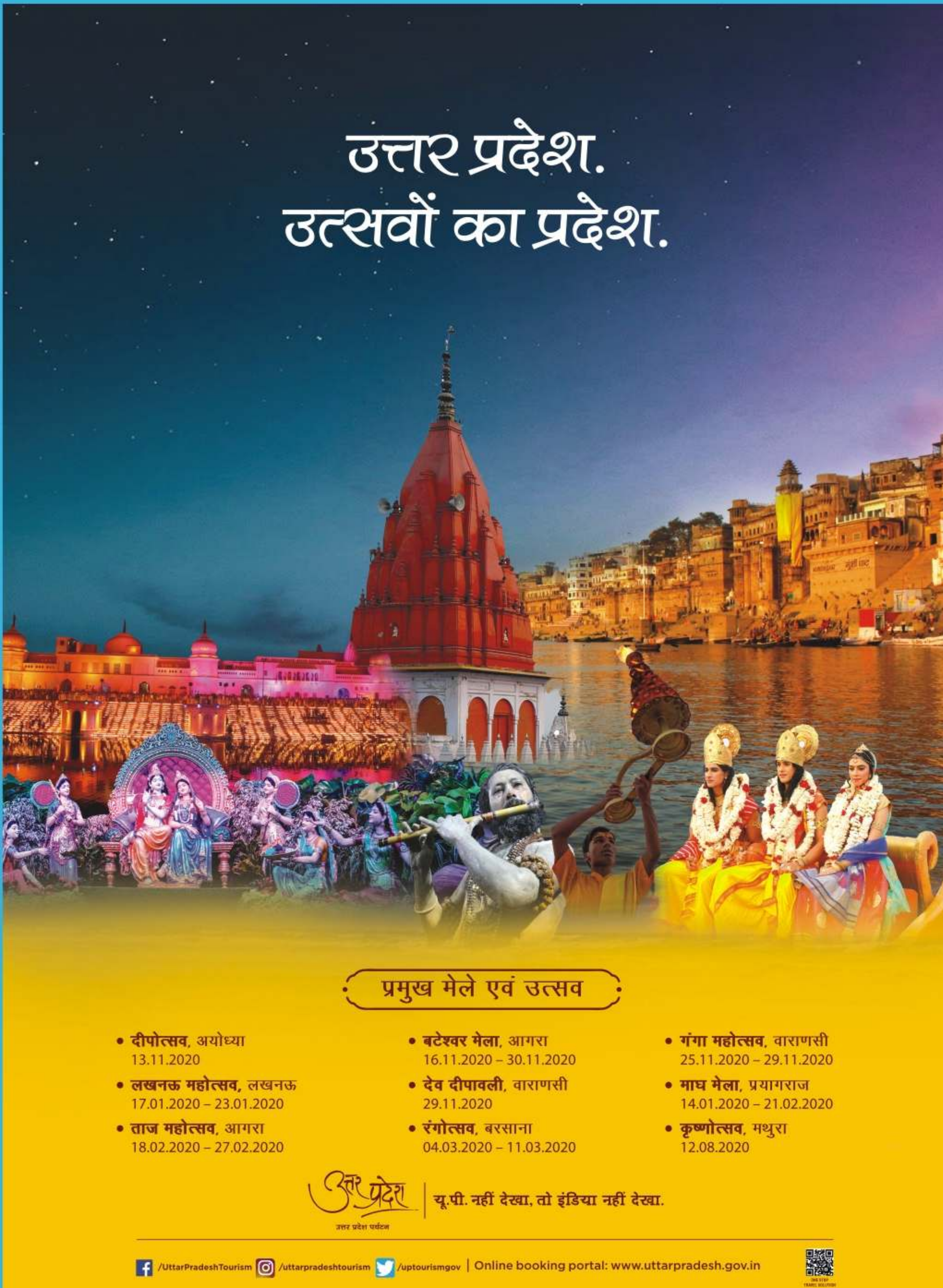
उत्तर प्रदेश.
उत्सवों का प्रदेश.
प्रमुख मेले एवं उत्सव
• दीपोत्सव, अयोध्या 13.11.2020
• लखनऊ महोत्सव, लखनऊ 17.01.2020 – 23.01.2020
• ताज महोत्सव, आगरा 18.02.2020 – 27.02.2020
• बटेश्वर मेला, आगरा 16.11.2020 – 30.11.2020
• देव दीपावली, वाराणसी 29.11.2020
• रंगोत्सव, बरसाना 04.03.2020 – 11.03.2020
• गंगा महोत्सव, वाराणसी 25.11.2020 – 29.11.2020
• माघ मेला, प्रयागराज 14.01.2020 – 21.02.2020
• कृष्णोत्सव, मथुरा 12.08.2020
उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश पर्यटन
यू.पी. नहीं देखा, तो इंडिया नहीं देखा.
/UttarPradeshTourism /uttarpradeshtourism /uptourismgov | Online booking portal: www.uttarpradesh.gov.in

शहीद स्मारक
चौरी चौरा
गोरखपुर

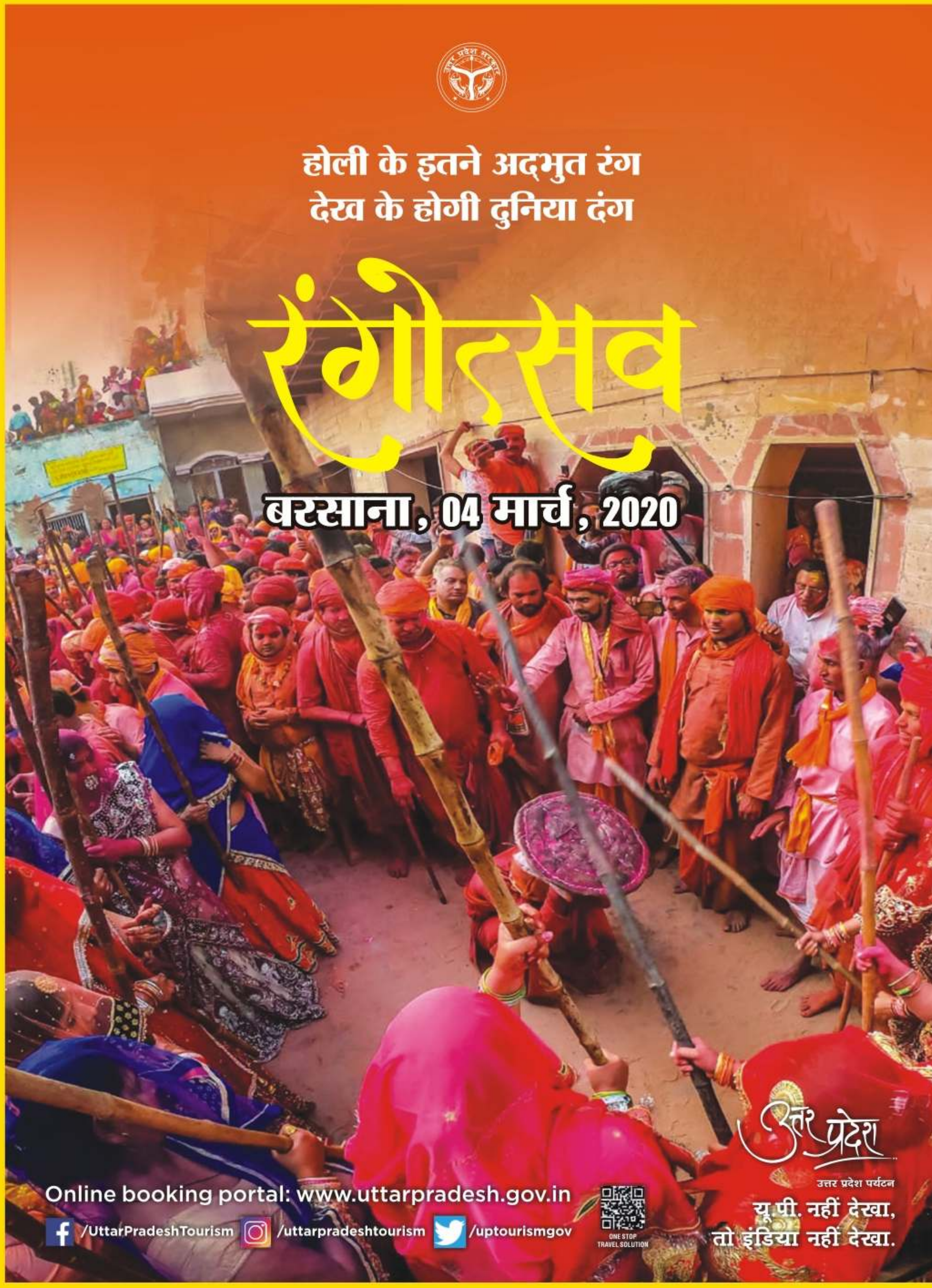
होली के इतने अद्भुत रंग
देख के होगी दुनिया दंग
रंगोत्सव
बरसाना, 04 मार्च, 2020
उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश पर्यटन
यू.पी. नहीं देखा,
तो इंडिया नहीं देखा.
Online booking portal: www.uttarpradesh.gov.in
/UttarPradeshTourism
/uttarpradeshtourism
/uptourismgov
ONE STOP TRAVEL SOLUTION

दीनदयाल उपाध्याय
D.D.U. GORAKHPUR UNIVERSITY
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
दीनदयाल उपाध्याय
गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

एलआईसी की
शीघ्र भुगतान पॉलिसी
हम आपके दावे का भुगतान
देय तिथि पर करने हेतु प्रतिबद्ध हैं
नववर्ष 2020 आपको मंगलमय हो
अपने सभी पॉलिसी भुगतानों को तुरन्त निपटाने में हमारा सहयोग करें।
किसी भी एल.आई.सी. शाखा में अपना बैंक खाता विवरण, एन.ई.एफ.टी. मैनडेट फार्म में भरकर निरस्त किए गये चेक के साथ जमा करें।
एनईएफटी मैनडेट फॉर्म सभी एलआईसी कार्यालयों में उपलब्ध है अथवा एलआईसी वेबसाइट www.licindia.in से "Download Forms" लिंक से डाउनलोड किया जा सकता है।
कॉल सेंटर सेवा (022) 6827 6827
एलआईसी मोबाइल एप "MyLIC" डाउनलोड करें
या विज़िट करें www.licindia.in हमें फॉलो करें LIC India Forever
ई–सेवाओं के लिए www.licindia.in पर एलआईसी के कस्टमर पोर्टल में पंजीकरण करें।
डिजिटल इंडिया पहल का हिस्सा बनिए।
LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA
LIC/AR/19-20/16/HIN
IRDAI Regn No.: 512
हर पल आपके साथ

नक्षत्रशाला
गोरखपुर

A Fertiliser Company with a new Vision of Growth, Efficiency and Building National Self Sufficiency
हिंदुस्तान उर्वरक एवं रसायन लिमिटेड
(एनटीपीसी,कोल इंडिया, इंडियन ऑयल, एफ सी आई लिमिटेड एवं एच एफ सी लिमिटेड का संयुक्त उद्यम)
Hindustan Urvarak & Rasayan Limited
(A Joint Venture of NTPC, CIL, IOCL,FCIL & HFCL)
प्रशासनिक भवन, एच. यू. आर. यल. कैंपस, फ़र्टिलाइज़र,गोरखपुर-273007 उ.प्र.
Admin.Buldg ,HURL Campus,Fertilizer,Gorakhpur-273007 U.P. 0551-2261177

With Best Compliments

ANKUR UDYOG LIMITED

Steel • Textile • Power

TEXTILE DIVISION

Nakaha No.2, Near FCI Factory
Gorakhpur (U.P.)
Email - ankur1in@gmail.com

STEEL DIVISION

AL-2, Sector 23, GIDA Ind. Area
Sahjanwa, Gorakhpur (U.P)
Email - ankurtmt@gmail.com

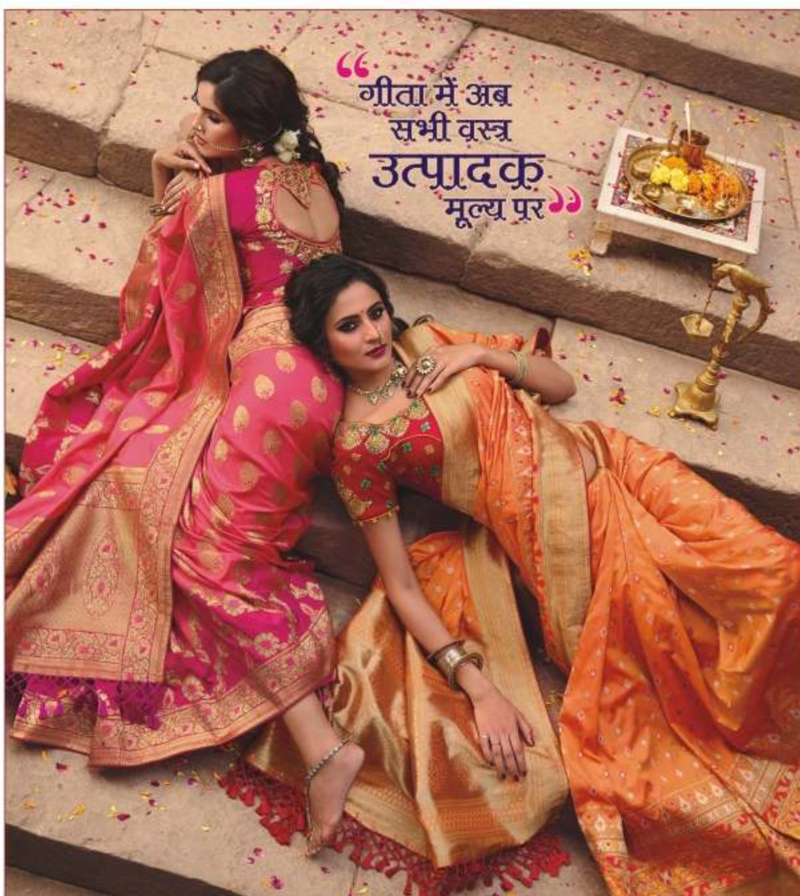

पूर्वांचल का सुप्रसिद्ध एवं विश्वसनीय प्रतिष्ठान

GEETA™

WHOLESALE MART

गोरखपुर

	जेमिनी पैराडाइज़, मेडिकल कालेज रोड	
	पादरी बाज़ार	
	निकट माया टॉकीज़, गीता प्रेस	
	भोपा बाज़ार चौराहा, चौरी चौरा	

साड़ी । सूट । लहंगा । सूटिंग । शर्टिंग । बेडशीट

(प्रवेश केवल मेम्बरशिप कार्ड द्वारा)

ఆంధ్రాబ్యాంక్
आन्ध्रा बैंक
Andhra Bank
Where India Banks
प्रधानमंत्री mudra योजना
₹10 लाख तक का लोन, बिना ज़मानत | आकर्षक ब्याज दर
ज़रूरत जैसा लोन,
उम्मीदों जैसी तरक्की.
अपने व्यवसाय
को दें
ऊंची उड़ान
आन्ध्रा बैंक
प्रस्तुत करता है
एबी अभिवृद्धि
विक्रेताओं तथा सूक्ष्म एवं लघु उद्यमियों
हेतु आसान ऋण
₹ 6 करोड़ तक
"मुद्रा लोन ने दी गति, मेरी हुई प्रगति:"

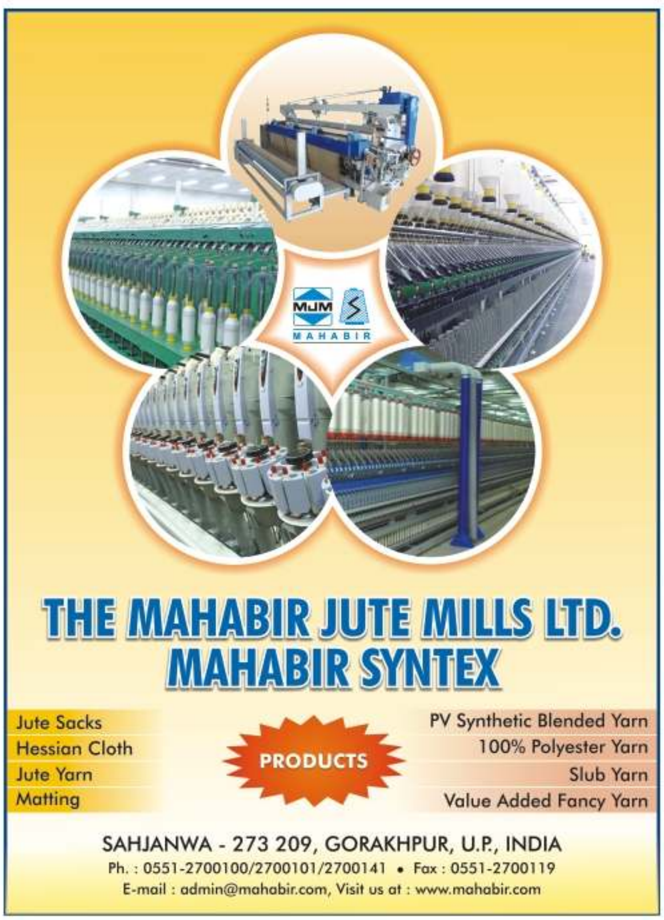

MJM
MAHABIR
THE MAHABIR JUTE MILLS LTD.
MAHABIR SYNTEX
PRODUCTS
Jute Sacks
Hessian Cloth
Jute Yarn
Matting
PV Synthetic Blended Yarn
100% Polyester Yarn
Slub Yarn
Value Added Fancy Yarn
SAHJANWA - 273 209, GORAKHPUR, U.P., INDIA
Ph. : 0551-2700100/2700101/2700141 • Fax : 0551-2700119
E-mail : admin@mahabir.com, Visit us at : www.mahabir.com

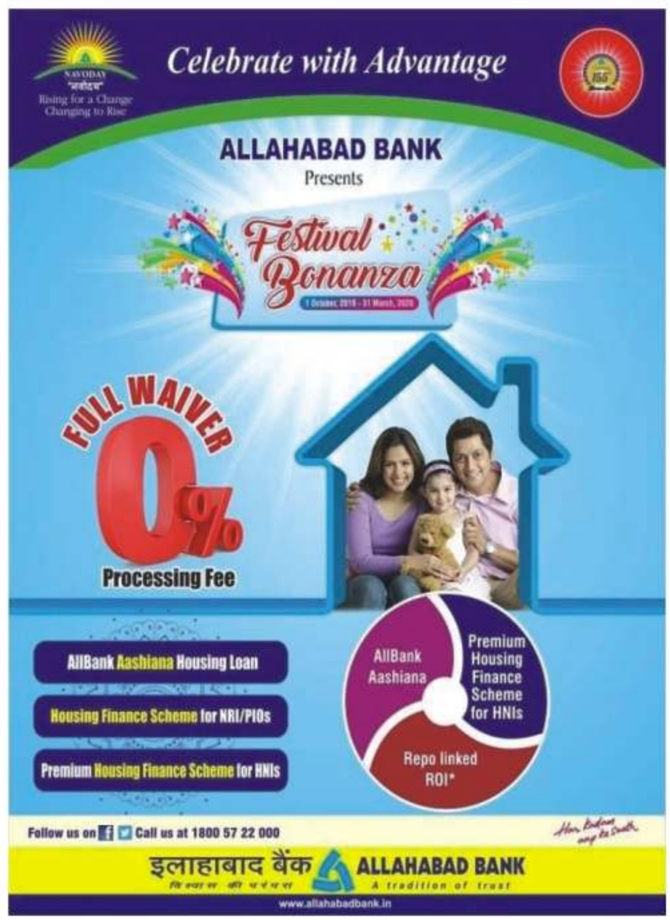

Celebrate with Advantage
ALLAHABAD BANK
Presents
Festival Bonanza
FULL WAIVER
0%
Processing Fee
AllBank Aashiana Housing Loan
Housing Finance Scheme for NRI/PIOs
Premium Housing Finance Scheme for HNIs
AllBank Aashiana
Premium Housing Finance Scheme for HNIs
Repo linked ROI*
Follow us on Call us at 1800 57 22 000
इलाहाबाद बैंक ALLAHABAD BANK
A tradition of trust
www.allahabadbank.in

कैशलेस से भुगतान बना आसान
केवल डिजिटल !
डिजिटल भारत का डिजिटल बैंक
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
अच्छे लोग, अच्छा बैंक
Union Bank of India
Good people to bank with
www.unionbankofindia.co.in

G. D. GOENKA PUBLIC SCHOOL
Under the aegies of G. D. Goenka Group, New Delhi
A Senior Secondary, co-educational, residential cum day school affiliated to CBSE New Delhi. | Aff. No. 2132228
GORAKHPUR
Admission Open for session 2019-20
Nursery to Class 9th & 11th (Science, Commerce & Humanities)
Safe and secure hostel for boys & girls
Highlights
• Superbly appointed air conditioned campus with beautiful green landscape
• CBSE curriculum : designed and executed under the aegis of G. D. Goenka Group, New Delhi
• Fully air conditioned buses with GPS.
• Idealistic Academic environment with a Teacher-Student ratio of 1:20
• Well equipped and state of the art studios for music/art/dance/aerobics/audio-visual
• Well equipped library
• Smart Boards in all classrooms.
• State-of-the-art Labs with latest technology
• All outdoor and indoor sports facility with trained coaches
• Semi Olympic size swimming pool
• 24 hr. electricity • Adequate safety and security
100% Result in CBSE Board Exam 2018 with ALL FIRST DIVISION
The G. D. Goenka Public School provides a curriculum and amenities adapted to the needs and aspirations of each student.
Ramnagar Karjaha (near- Forest Club), Deoria Road, Gorakhpur, U.P. - 273202
Contact Numbers: +91- 7617007921, 7617007922, 7617007923, 7617007924
mail: gdgoenka.gorakhpur@gmail.com | web: www.gdgoenkagkp.com
Follow us on : /gdgoenkagkp

TG Thakur Prasad Gopal Das
Jewellers...
SUNDAY OPEN
QR Scan for
Ground Floor Baldev Plaza, Golghar, Gorakhpur (U.P.)
0551-2338908, 225499 9415280371 9839847602
Email: tpgd2012@gmail.com

BUDDHA INSTITUTE OF TECHNOLOGY (BIT)
(Approved by AICTE & Affiliated to AKTU, Lucknow)
GORAKHPUR
website : www.bit.ac.in
UPTU Code No. 525
M.TECH.
EC 18
CS 18
B.TECH.
ME 120
EC 120
CIVIL 120
CS 60
IT 60
DIPLOMA
ME 60
CIVIL 60
BIT students achieved 1st & 2nd prize in All India Model Competition 2018 at IIT BHU, IIT Kanpur, IIT Roorkee & Gold Medal at AKTU, Lucknow
Name of Event | Event Venue | Position Held
State Level Techfest 2018 | AKTU LUCKNOW | Ist Prize Gold Medal
Technex 2018 | IIT-BHU Varanasi | Best Campus Ambassador Award
Technex 2018 | IIT-BHU Varanasi | IInd Prize at All India Level
Tech Kriti 2018 Technovation | IIT-Kanpur | IInd Prize at All India Level
Cognizance 2018 In Dreaming Discoveries | IIT-Roorkee | IInd Prize at All India Level
Best Teacher
Best Lab.
Best Education
Best Placement
Mob. : 9839621881, 9554559900, 9554322226

ITM

Excellence in Education Since 2001

B.TECH. • ME • CE • CSE • ECE • IT
Approved by AICTE; Affiliated to AKTU, Lucknow
AKTU Code 120

B.PHARM.
Approved by PCI; Affiliated to AKTU, Lucknow
AKTU Code 120

D.PHARM.
Approved by PCI; Affiliated to BTE, Lucknow
BTE Code 4889 & 4106

MBA
Approved by AICTE; Affiliated to AKTU, Lucknow
AKTU Code 120

BBA BCA
Affiliated to DDU Gorakhpur University
DDU Code 836

POLYTECHNIC
• Civil • Mechanical (Auto.) • Electrical • Mechanical (Prod.)
Affiliated to Board of Technical Education Uttar Pradesh, Lucknow
BTE Code 4802

AL-1, SECTOR-7, GIDA, GORAKHPUR-273 209 (U.P.)

7607777652, 7607777654, 7607777655

www.itmgkp.edu.in E-mail: director.itm@gmail.com

pnb

Dream **Big** to achieve **Big**

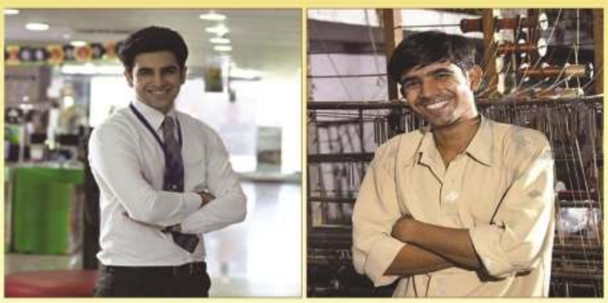

Micro, Small & Medium
ENTREPRENEURS

pnb MSME

MUDRA LOANS
STANDUP INDIA
TReDS (Receivable Financing for MSMEs)
PNB's MSME LOAN SCHEMES

For Banking Service & Products, Call : **1800 180 2222, 1800 103 2222** (Toll Free) or dial **0120-2490000** (Tolled)
SMS **PNB PROD** to **5607040** pnbindia www.pnbindia.in
Online portals: **psbloansin59mintues.com**, PNB Micro loan portal (available at www.pnbindia.in)

पंजाब नैशनल बैंक punjab national bank

केनरा बैंक भारत सरकार का उपक्रम Canara Bank A Government of India Undertaking

शाखा– महू

वित्तीय साक्षरता शिविर

नाबार्ड प्रबंधित वित्तीय समावेशन निधि के अन्तर्गत समर्थित
दिनांक 26/02/2016 समय 10.00 बजे
स्थान– अम्बिका शीत गृह, गवली पलासिया, महू
॥ चलें संग, बढ़ें संग ॥

आपकी आवश्यकताये एवं हमारे उत्पाद

- किसान क्रेडिट कार्ड– फसल उत्पादन एवं अन्य सम्बद्ध गतिविधियो हेतु।
- केनरा किसान ओवर ड्राफ्ट (के.ओ.डी)– एक वर्ष के के सी सी लिमिट परिचालन के बाद पाये रु एक लाख प्रति एकड की अतिरिक्त लिमिट।
- केनरा आल पर्पस टर्म लोन– सभी सावधि ऋण आवश्यकताओं हेतु एक ही लोन (पाइप लाईन, भूमि सुधार, पशुपालन आदि)।
- पशुपालन एवं फार्म मशिनरी लोन–डेयरी एवम फार्म मशिनरी लोन - पुर्न भुगतान अवधि 3- 5 साल।
- किसानो हेतु हाउसिंग लोन– पात्रता– 5 एकड से अधिक कृषि भूमी।

  विशेषताए– 10 लाख तक के लोन के लिये ITR आवश्यक नही, तहसीलदार का आय प्रमाण पत्र स्वीकार्य, आसान तीमाही /छ: माही किश्तों मे पुनर्भुगतान
- केनरा धन वर्ष आवर्ती जमा योजना–आवर्ती जमा मे पाये सावधि जमा का ब्याजए 72 महीनो मे बने लखपति मात्र रू 1100 माह की दर पर।
- हमारे पास स्वास्थ्य एवं जीवन बीमा भी उपलब्ध है

  मात्र 3.5 रु प्रति दिन के प्रीमियम पर पायें 50000 का स्वास्थ्य बीमा, भर्ती होने पर कैश लेस उपचार

सम्पर्क करें - केनरा बैंक– शाखा महू नियर ड्रिमलैण्ड– 07324-277050

आसान स्वर्ण ऋण के साथ
सोने एवं इससे बने आभूषणों
के बदले
नगदी प्राप्त करें....

1% एक्सप्रेस गोल्ड लोन
प्रतिमाह से भी कम ब्याज दर पर उपलब्ध

मुख्य विशेषताएं

- सरल और त्वरित प्रक्रिया
- सभी कार्यदिवसों में बैंकिंग अवधि के दौरान तत्काल ऋण।
- स्वर्ण-आभूषणों एवं गहनों की प्रतिभूति की एवज में रु. 10 लाख तक का अधिकतम ऋण।
- अधिकतम चुकौती अवधि 12 महीने।

Turn your GOLD into CASH with easy
Bank of Baroda Express Gold Loan

टोल फ्री नं. पर कॉल करें | 1800 22 33 44 | 1800 102 44 55
सुबह 6-रात 10 बजे
सेवा चैट - 24X7
www.bankofbaroda.co.in
हमें यहां फॉलो करें

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda
भारत का अंतर्राष्ट्रीय बैंक

विश्व प्रसिद्ध
टेराकोटा
गोरखपुर

गोरखपुर महोत्सव

11-13 जनवरी, 2020

थीम- आ रोह तमसो ज्योतिः

थीम सांग

शम्भू के भष्मांग
की अँगड़ाईयों में,
हर कड़ों में रम रहे हैं नाथ योगी
आदि गोरख की धरा पर प्राण धुनि में,
रम रहे हैं, बस रहे हैं नाथ योगी।
योग के अस्तित्व में है सांस अर्पित,
मौंन तांडव,
आदि गुरुकुल का ये उत्सव
गोरखपुर का है महोत्सव,
रम रहे हैं नाथ योगी।

बुद्ध का निर्वाण स्थल,
राप्ती रोहिणी बहती कलकल,
ज्ञानमय गीता प्रकाशन
संत कबिरा का निद्रांगन।

बंधु सिंह की क्रांति शास्वत
कर रहा इतिहास समरथ,
इस धरा की शान विस्मिल,
देश पर बलिदान विस्मिल।

विश्वविद्यालय के शिल्पी दिग्विजय के,
ज्ञान का आलोक जग में है शुभाषित,
लोक का कल्याण गीता वाटिका है,
कर गए हनुमान जी पोद्दार विकसित।
शून्य से है शिखर तक का गुरु अवेद्य का ये उद्भव।
आदि गुरुकुल का है उत्सव
गोरखपुर का है महोत्सव,
रम रहे हैं नाथ योगी।

सृजन मय साहित्य दामन
प्रेम चन्द का नीड़ यौवन
शायरी की अमिट शाख
गुले नग्मा का फिराक।

कला संस्कृति का समागम
शिखर पर अनहद का वादन,
नमन इस पावन भुवन को
आदि गोरखनाथ गुरुजन।

गीतकार - विमल बावरा
स्वर - प्रणव सिंह व विमल बावरा

torrent
GAS

अब गोरखपुर में खुशियों की लहर,
PNG-CNG का लाभ घर घर

PNG है भविष्य का ईंधन

- 24 x 7 आपूर्ति
- सुविधाजनक
- सुरक्षित
- किफ़ायती

CNG से ज्यादा का फायदा

- बेहतर माइलेज
- कम रखरखाव
- दोहरे ईंधन का लाभ
- 40% तक की बचत

टोरेन्ट गेस
प्रशांत टावर, महेवा, ट्रान्सपोर्ट नगर, गोरखपुर - 273 016 | फोनः +91 70960 00922
टोल फ्रीः **1800-123-567890**

श्री गोरक्षपीठ, गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर

जिनकी भक्ति में भी योग है,
ऐसी साधना स्थली गोरखपुर
को नहीं देखा तो क्या देखा?

उत्तर प्रदेश | **यू.पी. नहीं देखा, तो इंडिया नहीं देखा.**

उत्तर प्रदेश पर्यटन

पॉलिथीन बैग एवं एकल उपयोग प्लास्टिक का प्रयोग निषेध करें।

www.uptourism.gov.in | Online booking portal: www.uttarpradesh.gov.in| Helpline number: 18601801364